श्रीमद् राजचंद्र प्रणीत मोक्षमाळा

अंतर्गत,

सिंधु निदुग्प बालबोध शिक्षापाठ

"जेणे आत्माने जाण्यो तेणे सर्व जाण्यु"

निर्ग्रंथ प्रवचन

(मणका बीजो)

प्रकटकर्त्ता,

श्री राजनगर सुबोधक पुस्तकालय

शा आत्माराम माणेकलालना ची भाई बालाभाईना स्मरणार्थे

संवत १९८८

पांचमी आवृत्ति

श्री फोनीक्स प्रीन्टींग प्रेसमां,
शाह मोहनलाल चीमनलाले छाप्युं
अमदावाद

अनुक्रम मणिका

अनुक्रम मणिका

शिक्षण पद्धति अने मुखमुद्रा



आ एक स्याद्वादतत्त्वावबोधवृक्षनुं बीज छे. आ ग्रंथ तत्त्व पामवानी जिज्ञासा उत्पन्न करी शके एवुं एमां कंई अंशे पण दैवत रह्युं छे ए समभावथी कहुं छुं. पाठक अने वांचकवर्गने मुख्य भलामण ए छे के शिक्षापाठ पाठे करवा करतां जेम बने तेम मनन करवा. तेनां तात्पर्यो अनुभववा. जेमनी समजणमां न आवता होय तेमणे ज्ञाता शिक्षक के मुनिओथी समजवा, अने ए जोगवाई न होय तो पांच सात वखत ते पाठो वांची जवा. एक पाठ वांची गया पछी अर्धघडी ते पर विचार करी अंतःकरणने पूछवुं के शुं तात्पर्य मळ्युं? ते तात्पर्यमांथी हेय, ज्ञेय अने उपादेय शुं छे? एम करवाथी आखो ग्रंथ समजी शकाशे, हृदय कोमळ थशे, विचारशक्ति खीलशे अने जैनतत्त्वपर रूडी श्रद्धा थशे. आ ग्रंथ कंई पठन करवारूप नथी, पण मनन करवारूप छे. अर्थरूप केळवणी एमां योजी छे. ते योजना 'बालावबोध' रूप छे. 'विवेचन' अने 'प्रज्ञावबोध' भाग भिन्न छे. आ एमांनो एक ककडो छे, छतां सामान्य तत्त्वरूप छे. स्वभावे सरळ जेने मात्र ज्ञान छे अने नवतत्त्व तेमज सामान्य प्रकरण ग्रंथो जे समजी शके छे तेओने आ ग्रंथ विशेष बोधदायक थशे. आटलुं तो अवश्य भलामण छे के, नाना बाळकोने आ शिक्षापाठोनुं तात्पर्य समजणरूपे सविधि आपवुं. ज्ञानशाळाओना विद्यार्थीओने शिक्षापाठ मुखपाठे करावीने वारंवार समजाववा. जे जे ग्रंथोनी ए माटे सहाय लेवी घटे ते लेवी. एक बेवार पुस्तक पूर्ण शीखी रह्या पछी अवळेथी चलाववुं. आ पुस्तक भणी हुं धारुं छुं के, सुज्ञ वर्ग कटाक्ष दृष्टिथी नहीं जोशे, बहु ऊंडा उतरतां आ 'मोक्षमाळा' मोक्षनां कारणरूप थई पडशे. मध्यस्थताथी एमां तत्त्वज्ञान अने शील बोधवानो उद्देश छे. आ पुस्तक प्रसिद्ध करवानो मुख्य हेतु उछरता बालयुवानो अविवेकी विद्या पामी आत्मसिद्धिथी भ्रष्ट थाय छे ते भ्रष्टता अटकाववानो पण छे—

श्रीमान् राजचंद्र

बालावबोध मोक्षमाळा, प्रथममाळा

अनुक्रम मणिका

ॐ सत्

श्री सद्गुरुभक्ति रहस्य

दोहरा.

हे प्रभु! हे प्रभु! शुं कहुं, दीनानाथ दयाळ;
हुं तो दोष अनंतनुं, भाजन छुं करुणाळ. १
शुद्ध भाव मुजमां नथी, नथी सर्व तुज रूप,
नथी लघुता के दीनता, शुं कहुं परम स्वरूप? २
नथी आज्ञा गुरुदेवनी, अचळ करी उरमांहि;
आपतणो विश्वास दृढः, ने परमादर नांहि. ३
जोग नथी सत्संगनो, नथी सत् सेवा जोग;
केवळ अर्पणता नथी, नथी आश्रय अनुयोग. ४
'हुं पामर शुं करी शकुं?' एवो नथी विवेक;
चरण शरण धीरज नथी, मरण सुधीनी छेक. ५
अचिंत्य तुज महात्मनो, नथी प्रफुल्लित भाव,
अंश न एके स्नेहनो, न मळे परम प्रभाव. ६
अचळ रूप आसक्ति नहि, नहि विरहनो ताप;
कथा अलभ तुज प्रेमनी, नहि तेनो परिताप. ७
भक्तिमार्ग प्रवेश नहि, नहि भजन दृढ भान,
समज नहि निजधर्मनी, नहि शुभदेशे स्थान. ८
काळ दोष कळिथी थयो, नहि मर्यादा धर्म,
तोये नहि व्याकुळता! जुओ प्रभु मुज कर्म. ९
सेवाने प्रतिकूळ जे, ते बंधन नथी त्याग;
देहेंद्रिय माने नहि, करे बाह्य पर राग. १०

तुज वियोग स्फुरतो नथी, वचन नयन यम नांहि,
नहि उदासीन अभक्तथी, तेम गृहादिक मांहि ११

अहंभावथी रहित नहि, स्वधर्म संचय नांहि,
नथी निवृत्ति निर्मळपणे, अन्य धर्मनी कांइ १२

एम अनंत प्रकारथी, साधन रहित हुंय;
नहीं एक सद्गुण पण, मुख बतावुं शुंय? १३

केवळ करुणा-मूर्ति छो, दीनबंधु दीननाथ,
पापी परम अनाथ छउं, ग्रहो प्रभुजी हाथ १४

अनंत काळथी आथड्यो, विना भान भगवान,
सेव्या नहि गुरुसंतने, मूक्युं नहि अभिमान १५

संत चरण आश्रय विना, साधन कर्यां अनेक,
पार न तेथी पामियो, ऊग्यो न अंश विवेक १६

सहु साधन बंधन थया, रह्यो न कोइ उपाय,
सत् साधन समज्यो नहि, त्यां बंधन शुं जाय १७

प्रभु, प्रभु लय लागी नहि, पड्यो न सद्गुरु पाय,
दीठा नहि निज दोष तो, तरिये कोण उपाय? १८

अधमाधम अधिको पतित, सकळ जगतमां हुंय;
ए निश्चय आव्या विना, साधन करशे शुंय? १९

पडी पडी तुज पदपंकजे, फरी फरी मागुं एज,
सद्गुरु संत, स्वरूप तुज, ए दृढता करि देज २०

भाद्रवा सुद ८–१९४७

तुज वियोग स्फुरतो नथी, वचन नयन यम नांहि,
नहि उदासीन अभक्तथी तेम गृहादिक मांहि ११
अहंभावथी रहित नहि, स्वधर्म संचय नांहि,
नथी निवृत्ति निर्मळपणे, अन्य धर्मनी कांइ १२
एम अनंत प्रकारथी साधन रहित हुंय,
नहीं एक सद्गुण पण, मुख बतावुं शुंय? १३
केवळ करुणा-मूर्त्ति छो, दीनबंधु दीननाथ,
पापी परम अनाथ छउं, ग्रहो प्रभुजी हाथ १४
अनंत काळथी आथड्यो, विना भान भगवान,
सेव्या नहि गुरुसंतने, मूक्युं नहि अभिमान १५
संत चरण आश्रय विना, साधन कर्यां अनेक,
पार न तेथी पामियो, ऊग्यो न अंश विवेक १६
सहु साधन बंधन थयां, रह्यो न कोइ उपाय,
सत् साधन समज्यो नहि, त्यां बंधन शु जाय १७
प्रभु, प्रभु लय लागी नहि, पड्यो न सद्गुरु पाय;
दीठा नहि निज दोष तो, तरिये कोण उपाय? १८
अधमाधम अधिको पतित, सकळ जगतमां हुय,
ए निश्चय आव्या विना, साधन करशे शुंय? १९
पडी पडी तुज पदपंकजे, फरी फरी मागुं एज,
सद्गुरु संत, स्वरूप तुज, ए दृढता करि देज २०

भादरवा सुद ८–१९४७



श्रीमद् राजचंद्र वर्ष १६ सं वि सं १९४०.

जन्म ववाणीआ　　　　　देहविलय राजकोट

वि स १९२४ कार्तिक पूर्णिमा, रवि　　वि स १९५७ चैत्र वद पंचमी, मंगल

ी वर्क्स અમદાવાદ

મોક્ષમાળા અમે સોળ વરસ અને પાંચ માસની ઉમ્મરે
શ દિવસમા રચી હતી ૬૭ મા પાઠ ઉપર શાહી ઢોળાઈ
ના તે પાઠ ફરી લખવો પડ્યો હતો, અને તે ઠેકાણે 'બહુ
ણ્ય ... પુંજથી' નુ અમૂલ્ય તાત્ત્વિક વિચારનુ કાવ્ય
... ુ

જૈન માર્ગને યથાર્થ સમજાવવા તેમા પ્રયાસ કર્યો છે
નોક્ત માર્ગથી કંઈપણ ન્યૂનાધિક તેમા કહ્યુ નથી વીતરાગ
ર્ગ પર આબાલવૃદ્ધની રુચી થાય, તેનુ સ્વરૂપ સમજાય,
ન બીજ હૃદયમા રોપાય તેવા હેતુએ બાળાવબોધરૂપ યોજના
ના કરી છે તે શૈલી તથા તે બોધને અનુસરવા પણ એ નમુનો
આપેલ છે આનો પ્રજ્ઞાવબોધ ભાગ ભિન્ન છે તે કોઈ કરશે

મોક્ષમાળાના પાઠ અમે માપિ માપીને લખ્યા છે ફરી
આવૃત્તિ અંગે સુખ ઉપજે તેમ પ્રવર્ત્તો કેટલાક વાક્ય (અંડર
લાઈન) નીચે લીટી દોરી છે, તેમ કરવા જરૂર નથી શ્રોતા–
વાચકને બનતા સુધી આપણા અભિપ્રાયે ન દોરવા લક્ષ રાખવુ
શ્રોતા–વાચકમા પોતાની મેળે અભિપ્રાય ઉગવા દેવો સારાસાર
તોલ કરવાનુ વાચનાર–શ્રોતાના પોતાના પર છોડી દેવુ
આપણે તેમને દોરી તેમને પોતાને ઉગી શકે એવા અભિપ્રાયને
થંભી ન દેવો

શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર



श्रीमद् राजचद्र. वर्प १६ मु वि स १९४०

जन्म ववाणीआ — देहविलय राजकोट

वि स १९२४ कार्तिक पूर्णिमा रवि — वि स १९५७ चैत्र वद पचमी, मगल



श्रीमद् राजचंद्र प्रणीत

मोक्षमाळा.

पुस्तक बीजु

शिक्षापाठ १ वांचनारने भलामण

वांचनार! आ पुस्तक आजे तमारा हस्तकमळमां आवे छे तेने लक्षपूर्वक वांचजो, तेमां कहेला विषयोने विवेकथी विचारजो, अने परमार्थने हृदयमां धारण करजो. एम करशो तो तमे नीति, विवेक, ध्यान, ज्ञान, सद्गुण अने आत्मशांति पामी शकशो.

तमे जाणता हशो के, केटलाक अज्ञान मनुष्यो नहीं वांचवायोग्य पुस्तको वांचीने अमूल्य वखत वृथा खोइ दे छे; जेथी तेओ अवळे रस्ते चढी जाय छे, आ लोकमां अपकीर्ति पामे छे, अने परलोकमां नीच गतिए जाय छे.

भाषाज्ञानना पुस्तकोनी पेठे आ पुस्तक पठन करवानु नथी, पण मनन करवानु छे तेथी आ भव अने परभव बन्नेमां तमारु हित थशे भगवानना कहेला वचनोनो एमां उपदेश कर्यो छे

तमे आ पुस्तकनो विनय अने विवेकथी उपयोग करजो विनय अने विवेक ए धर्मना मूळ हेतुओ छे

तमने बीजी एक आ पण भलामण छे के, जेओने वांचता आवडतु न होय, अने तेओनी इच्छा होय तो आ पुस्तक अनुक्रमे तेमने वांची संभळाववु

तमने आ पुस्तकमांथी जे कंई न समजाय ते सुविचक्षण पुरुष पासेथी समजी लेवु योग्य छे

तमारा आत्मानु आथी हित थाय, तमने ज्ञान, शांति अने आनंद मळे, तमे परोपकारी, दयाळु, क्षमावान, विवेकी अने बुद्धिशाळी थाओ, एवी शुभ याचना अर्हत् भगवान पासे करी आ पाठ पूर्ण करु छु

शिक्षापाठ २ सर्वमान्य धर्म

चोपाई

धर्मतत्त्व जो पूछ्यु मने,
तो संभळावु स्नेहे तने,
जे सिद्धांत सकळनो सार,
सर्व मान्य सहुने हितकार १

भाख्यु भाषणमा भगवान,
धर्म न बीजो दया समान,

अभयदान साथे संतोष,
द्यो प्राणीने, दळवा दोष. २

सत्य, शील ने सघळां दान,
दया होइने रह्यां प्रमाण;
दया नहीं तो ए नहीं एक,
विना सूर्य किरण नहीं देख ३

पुष्पपांखडी ज्यां दूभाय,
जिनवरनी त्यां नहीं आज्ञाय,
सर्व जीवनुं ईच्छो सुख,
महावीरनी शिक्षा मुख्य ४

सर्व दर्शने ए उपदेश,
ए एकांते—नहीं विशेष;
सर्व प्रकारे जिननो बोध,
दया दया निर्मळ अविरोध! ५

ए भवतारक सुंदर राह,
धरिये तरिये करी उत्साह,
धर्म सकळनुं ए शुभ मूळ,
ए वण धर्म सदा प्रतिकूळ ६

तत्त्वरूपथी ए ओळखे,
ते जन पहोंचे शाश्वत सुखे;
शांतिनाथ भगवान प्रसिद्ध,
राजचंद्र करुणाए सिद्ध ७

———

शिक्षापाठ ३ कर्मना चमत्कार

हुं तमने केटलीक सामान्य विचित्रताओ कही जउं छउं, ए उपर विचार करशो. तो तमने परभवनी श्रद्धा दृढ थशे

एक जीव सुंदर पलंगे पुष्पशय्यामां शयन करे छे एकने फाटेली गोदडी पण मळती नथी एक भात भातनां भोजनोथी तृप्त रहे छे, एकने काळी जारना पण सांसा पडे छे एक अगणित लक्ष्मीनो उपभोग ले छे, एक फूटी बदाम माटे थईने घेर घेर भटके छे एक मधुरां वचनोथी मनुष्यनां मन हरे छे, एक अवाचक जेवो थईने रहे छे एक सुंदर वस्त्रालंकारथी विभूषित थई फरे छे, एकने खरा शियाळामां फाटेलुं कपडुं पण ओढवाने मळतुं नथी एक रोगी छे, एक प्रबळ छे एक बुद्धिशाळी छे एक जडभरत छे एक मनोहर नयनवाळो छे, एक अंध छे एक लूलो, के पांगळो छे, एकना पग ने हाथ रमणीय छे एक कीर्तिमान छे, एक अपयश भोगवे छे एक लाखो अनुचरो पर हुकम चलावे छे, अने एक तेटलाना ज टुंबा सहन करे छे एकने जोईने आनंद उपजे छे, एकने जोतां वमन थाय छे एक संपूर्ण इंद्रियोवाळो छे, अने एक अपूर्ण इंद्रियोवाळो छे एकने दीन दुनियानुं लेशभान नथी, ने एकना दुःखनो किनारो पण नथी

एक गर्भाधानमां आवतां ज मरण पामे छे एक जन्म्यो के तरत मरण पामे छे एक मुएलो अवतरे छे, अने एक सो वर्षनो वृद्ध थईने मरे छे

कोईना मुख, भाषा अने स्थिति सरखां नथी मूर्ख राज्यगादी पर खमा खमाथी वधावाय छे, अने समर्थ विद्वानो धक्का खाय छे!

आम आखा जगतनी विचित्रता भिन्न भिन्न प्रकारे तमे जुओ छो, ए उपरथी तमने कंइ विचार आवे छे? मे कह्यु छे ते उपरथी तमने विचार आवतो होय तो कहो के, ते शा वडे थाय छे?

पोताना बांधेला शुभाशुभ कर्मवडे, कर्मवडे आखो संसार भमवो पडे छे परभव नहीं माननार पोते ए विचारो शा वडे करे छे ते उपर यथार्थ विचार करे, तो ते पण आ सिद्धांत मान्य राखे

शिक्षापाठ ४ मानवदेह

आगळ कह्यु छे ते प्रमाणे विद्वानो मानवदेहने बीजा सघळा देह करता उत्तम कहे छे उत्तम केहेवाना केटलाक कारणो अत्रे कहीशु

आ संसार बहु दु:खथी भरेलो छे एमाथी ज्ञानीओ तरीने पार पामवा प्रयोजन करे छे मोक्षने साधी तेओ अनंत सुखमा विराजमान थाय छे ए मोक्ष बीजा कोइ देहथी मळतो नथी देव, तिर्यंच के नरक ए एके गतिथी मोक्ष नथी; मात्र मानवदेहथी मोक्ष छे

त्यारे तमे कहेशो के, सघळा मानवियोनो मोक्ष केम थतो नथी? तेनो उत्तर. जेओ मानवपणु समजे छे, तेओ संसारशोकने तरी जाय छे जेनामा विवेकबुद्धि उदय पामी होय, अने ते वडे सत्यासत्यनो निर्णय समजी, परम तत्त्वज्ञान तथा उत्तम चारित्ररूप सद्धर्मनु सेवन करी जेओ अनुपम मोक्षने पामे छे, तेना देहधारीपणाने विद्वानो मानवपणु कहे छे मनुष्यना शरीरना देखाव उपरथी विद्वानो तेने मनुष्य कहेता नथी, परंतु तेना विवेकने लइने कहे छे बे हाथ, बे पग, बे आंख, बे कान, एक मुख, बे होठ अने एक नाक ए जेने होय तेने मनुष्य कहेवो एम आपणे समजवु नहीं जो एम समजीए

तो पछी वानराने पण मनुष्य गणवो जोइए एणे पण ए प्रमाणे सम्प्राप्त कर्युं छे विशेषमां एक पुछडुं पण छे, त्यारे शुं एने महा मनुष्य कहेवो? ना, नहीं मानवपणुं समजे तेज मानव कहेवाय

ज्ञानीओ कहे छे के, ए भव बहु दुर्लभ छे, अति पुण्यना प्रभावथी ए देह सापडे छे, माटे एथी उतावळे आत्मसार्थक करी लेवुं अयमनकुमार, गजसुकुमार जेवा नाना बाळको पण मानवपणाने समजवाथी मोक्षने पाम्या मनुष्यमां जे शक्ति वधारे छे, ते शक्तिवडे करीने मदोन्मत्त हाथी जेवा प्राणीने पण वश करी ले छे, ए शक्तिवडे जो तेओ पोताना मनरूपी हाथीने वश करी ले, तो केटलुं कल्याण थाय!

कोइ पण अन्य देहमां पूर्ण सदविवेकनो उदय थतो नथी, अने मोक्षना राजमार्गमां प्रवेश थइ शकतो नथी एथी आपणने मळेलो आ बहु दुर्लभ मानवदेह सफळ करी लेवो ए अवश्यनुं छे केटलाक मूर्खो दुराचारमां, अज्ञानमां, विषयमां, अने अनेक प्रकारना मदमां आवो मानवदेह वृथा गुमावे छे अमूल्य कौस्तुभ हारी बेसे छे आ नामना मानव गणाय, बाकी तो वानररूप ज छे

मोतनी पळ, निश्चय, आपणे जाणी शकता नथी, माटे जेम बने तेम धर्ममां त्वराथी सावधान थवुं

शिक्षापाठ ५ अनाथी मुनि भाग १

अनेक प्रकारनी रिद्धिवाळो मगधदेशनो श्रेणिक नामे राजा अश्वक्रीडाने माटे मंडिकुक्ष नामना वनमां नीकळी पडयो वननी विचित्रता मनोहारिणी हती नाना प्रकारना वृक्षो त्यां आवी रह्या

हता, नाना प्रकारनी कोमळ वेलीओ घटाटोप थइ रही हती, नाना प्रकारना पखीओ आनदथी तेनु सेवन करता हता, नाना प्रकारना पक्षियोना मधुरा गायन त्या समळाता हता, नाना प्रकारना फलथी ते वन उजाट रह्यु हतु; नाना प्रकारना जळना झरण त्या वहेता हता टुकामा ए वन नदनवन जेवु लागतु हतु ते वनमा एक झाड तळे महा समाधिवत पण सुकुमार अने मुखोचित मुनिने ते श्रेणिके बेठेलो दीठो एनु रूप जोइने ते राजा अत्यत आनद पाम्यो उपमारहित रूपथी विस्मित थइने मनमा तेनी प्रशसा करवा लाग्यो आ मुनिनो केवो अद्भुत वर्ण छे! एनु केवु मनोहर रूप छे! एनी केवी अद्भुत सौम्यता छे! आ केवी विस्मयकारक क्षमानो धरनार छे! आना अगथी वैराग्यनो केवो उत्तम प्रकाश छे! आनी केवी निर्लोभता जणाय छे! आ सयति केवु निर्भय नम्रपणु धरावे छे! ए भोगथी केवो विरक्त छे! एम चिंतवतो चिंतवतो, मुदित थतो थतो, स्तुति करतो करतो, धीमेथी चालतो चालतो, प्रदक्षिणा दइ ते मुनिने वदन करी अति समीप नही, तेम अति दूर नही, एम ते श्रेणिक बेठो पछी बे हाथनी अजलि करीने विनयथी तेणे ते मुनिने पूछ्यु, "हे आर्य! तमे प्रशसा करवा योग्य एवा तरुण छो! भोगविल्लासने माटे तमारु वय अनुकूळ छे; ससारमा नाना प्रकारना सुख रह्या छे ऋतु ऋतुना कामभोग, जळ सबधीना विलास, तेमज मनोहारिणी स्त्रीओना मुखवचननु मधुरु श्रवण छता ए सघळानो त्याग करीने मुनित्वमा तमे महा उद्यम करो छो एनु शु कारण? ते मने अनुग्रहथी कहो" राजाना आवा वचन साभळीने मुनिए कह्यु "हे राजा! हु अनाथ हतो मने अपूर्व वस्तुनो प्राप्त करावनार, तथा योग क्षेमनो करनार, मारापर अनुकपा आणनार, करुणाथी करीने परम सुखनो देनार एवो मारो कोइ मित्र थयो नही. ए कारण मारा अनाथीपणानु हतु"

शिक्षापाठ ६ अनाथी मुनि भाग २

श्रेणिक मुनिनां आपणथी स्मित हसीने बोल्यो "तमारे महा ऋद्धिवंतने नाथ केम न होय? जो कोइ नाथ नथी तो हुं थउं छउं. हे भयत्राण! तमे भोग भोगवो. हे संयति! मित्र, ज्ञातिए करीने दुर्लभ एवो आ तमारो मनुष्यभव सुलभ करो." अनाथीए कह्युं "अरे श्रेणिक राजा! पण तुं पोते अनाथ छो तो मारो नाथ शुं थइश? निर्धन ते धनाढ्य क्यांथी बनावे? अबुध ते बुद्धिदान क्यांथी आपे? अज्ञ ते विद्वत्ता क्यांथी दे? वंध्या ते संतान क्यांथी आपे? ज्यारे तुं पोते अनाथ छे, त्यारे मारो नाथ क्यांथी थइश?" मुनिनां वचनथी राजा अति आकुळ अने अति विस्मित थयो. कोइ काळे जे वचननुं श्रवण थयुं नथी ते वचननुं यतिमुखथी श्रवण थयुं एथी ते शंकित थयो, अने बोल्यो "हुं अनेक प्रकारना अश्वनो भोगी छउं, अनेक प्रकारना मदोन्मत्त हाथीओनो धणी छउं, अनेक प्रकारनी सैन्या मने आधीन छे; नगर, ग्राम, अंतःपुर अने चतुष्पादनी मारे कंइ न्यूनता नथी, मनुष्य संबंधी सघळा प्रकारना भोग हुं पाम्यो छउं, अनुचरो मारी आज्ञाने रूडी रीते आराधे छे, एम राजाने छाजती सर्व प्रकारनी संपत्ति मारे घेर छे, अनेक मनवांछित वस्तुओ मारी समीपे रहे छे. आवो हुं महान् छतां अनाथ केम होउं? रखे हे भगवन्! तमे मृषा बोलता हो." मुनिए कह्युं "राजा! मारुं कहेलुं तुं न्यायपूर्वक समज्यो नथी. हवे हुं जेम अनाथ थयो, अने जेम में संसार त्याग्यो तेम तने कहुं छउं, ते एकाग्र अने सावधान चित्तथी सांभळ, सांभळीने पछी तारी

"कौशाम्बी नामे अति जीर्ण अने विविध प्रकारनी भव्यताथी भरेली एक सुंदर नगरी छे, त्यां रिद्धिथी परिपूर्ण धनसंचय नामनो मारो पिता रहेतो हतो, हे महाराजा! यौवनवयना प्रथम भागमा मारी आंखो अति वेदनाथी घेराइ; आखे शरीरे अग्नि बळवा मंड्यो शस्त्रथी पण अतिशय तिक्ष्ण ते रोग वैरीनी पेठे मारापर कोपायमान थयो मारु मस्तक ते आंखनी असह्य वेदनाथी दु:खवा लाग्यु वज्रना प्रहार जेवी, बीजाने पण रौद्र भय उपजावनारी एवी ते दारुण वेदनाथी हु अत्यंत शोकमा हतो सख्याबंध वैद्यकशास्त्रनिपुण वैद्यराजो मारी ते वेदनानो नाश करवा माटे आव्या, अने तेमणे अनेक औषध उपचार कर्या पण ते वृथा गया. ए महा निपूण गणाता वैद्यराजो मने ते दरदथी मुक्त करी शक्या नहीं, ए ज हे राजा! मारु अनाथपणु हतु मारी आंखनी वेदना टाळवाने माटे मारा पिताए सर्व धन आपवा माड्यु पण तेथी करीने मारी ते वेदना टळी नहीं, हे राजा! ए ज मारु अनाथपणु हतु. मारी माता पुत्रने शोके करीने अति दु:खार्त्त थइ, परंतु ते पण मने दरदथी मूकावी शकी नहीं, ए ज हे राजा! मारु अनाथपणु हतु. एक पेटथी जन्मेला मारा ज्येष्ठ अने कनिष्ठ भाइओ पोताथी बनतो परिश्रम करी चूक्या पण मारी ते वेदना टळी नहीं, हे राजा! ए ज मारु अनाथपणु हतु. एक पेटथी जन्मेली मारी ज्येष्ठा अने कनिष्ठा भगिनीओथी मारुं ते दुःख टळ्यु नहीं, हे महाराजा! ए ज मारु अनाथपणुं हतु मारी स्त्री जे पतिव्रता, मारापर अनुरक्त अने प्रेमवती हती, ते आंसु भरी मारु हैयु पलाळती हती. तेणे अन्न पाणी आप्या छता, अने नाना प्रकारना अंगोल्ण, चुवादिक सुगंधी पदार्थ, तेम ज अनेक प्रकारना फुल चंदनादिकना जाणिता अजाणिता विलेपन कर्या छता, हु ते विलेपनथी मारो रोग शमावी न शक्यो; क्षण पण ... रहेती नहोती मारी ते स्त्री ...

रोगने टाळी न शकी, ए ज हे महाराजा ! मारुं अनाथपणुं हतुं एम कोइना प्रेमथी, कोइनां औषधथी, कोइना विलापथी के कोइना परिश्रमथी ए रोग उपशम्यो नहीं ए वेळा पुन पुन: में असह्य वेदना भोगवी, पछी हुं प्रपंची संसारथी खेद पाम्यो एकवार जो आ महा विडंबनामय वेदनाथी मुक्त थउं तो खंती, दंती अने निरारंभी प्रवर्ज्याने धारण करुं एम चिंतवीने शयन करी गयो ज्यारे रात्रि व्यतिक्रमी गइ त्यारे हे महाराजा ! मारी ते वेदना क्षय थइ गइ, अने हुं निरोगी थयो मात, तात स्वजन बंधवादिकने पूछीने प्रभाते में महा क्षमावंत इंद्रियने निग्रह करवावाळुं, अने आरंभोपाधिथी रहित एवुं अणगारत्व धारण कर्युं

शिक्षापाठ ७ अनाथी मुनि भाग ३

हे श्रेणिक राजा ! त्यार पछी हुं आत्मा परमात्मानो नाथ थयो हवे हुं सर्व प्रकारना जीवनो नाथ छउं तुं जे शंका पाम्यो हतो ते हवे टळी गइ हशे एम आखुं जगत्‌–चक्रवर्ती पर्यंत अशरण अने अनाथ छे ज्यां उपाधि छे त्यां अनाथता छे, माटे हुं कहुं छउं ते कथन तुं मनन करी जजे निश्चय मानजे के, आपणो आत्मा ज दु:खनी भरेली वैतरणीनो करनार छे, आपणो आत्मा ज क्रूर सालमलि वृक्षना दु:खनो उपजावनार छे, आपणो आत्मा ज वंछित वस्तुरूपी दुधनी देवावाळी कामधेनु सुखनो उपजावनार छे, आपणो आत्मा ज नंदनवननी पठे आनंदकारी छे, आपणो आत्मा ज कर्मनो करनार छे, आपणो आत्मा ज ते कर्मनो टाळनार छे, आपणो

सुखोपार्जन करनार छे; आपणो आत्मा ज मित्र, ने आपणो आत्मा ज वैरी छे, आपणो आत्मा ज कनिष्ठ आचारे स्थित, अने आपणो आत्मा ज निर्मळ आचारे स्थित रहे छे.

एम आत्मप्रकाशक बोध श्रेणिकने ते अनाथी मुनिए आप्यो श्रेणिकराजा बहु संतोष पाम्यो बे हाथनी अंजलि करीने ते एम बोल्योः "हे भगवन्! तमे मने भली रीते उपदेश्यो; तमे जेम हतु तेम अनाथपणु कही बताव्युं महर्षि! तमे सनाथ, तमे सबंधव अने तमे सधर्म छो. तमे सर्व अनाथना नाथ छो हे पवित्र संयति! हु तमने क्षमावु छु तमारी ज्ञानि शिक्षाथी लाभ पाम्यो छु. धर्मध्यानमा विघ्न करवावालुं भोग भोगववा संबंधीनुं में तमने हे महा भाग्यवंत! जे आमंत्रण दीधु ते संबंधीनो मारो अपराध मस्तक नमावीने क्षमावु छु." एवा प्रकारथी स्तुति उच्चारीने राजपुरुष केशरी श्रेणिक विनयथी प्रदक्षिणा करी स्वस्थानके गयो

महा तपोधन, महा मुनि, महा प्रज्ञावंत, महा यशवंत, महा निर्ग्रंथ अने महा श्रुत अनाथी मुनिए मगध देशना श्रेणिक राजाने पोताना वितक चरित्रथी जे बोध आप्यो छे ते खरे! अशरणभावना सिद्ध करे छे महा मुनी अनाथीए भोगवेली वेदना जेवी, के एथी अति विशेष वेदना अनंत आत्माओने भोगवता जोइए छीए ए केवु विचारवा लायक छे! संसारमा अशरणता अने अनंत अनाथता छवाइ रही छे तेनो त्याग उत्तम तत्त्वज्ञान अने परम शीलने सेववाथी ज थाय छे ए ज मुक्तिना कारणरूप छे. जेम संसारमा रह्या अनाथी अनाथ हता तेम प्रत्येक आत्मा तत्त्वज्ञाननी प्राप्ति विना सदैव अनाथ ज छे सनाथ थवा सद्देव, सद्धर्म अने सद्गुरुने जाणवा अने ओळखवा ए अवश्यनु छे

त्रीजी स्वदया–आ आत्मा अनादि काळथी मिथ्यात्वथी ग्रहायो छे, तत्त्व पामतो नथी, जिनाज्ञा पाळी शकतो नथी, एम चिंतवी धर्ममां प्रवेश करवो ते 'स्वदया.'

चोथी परदया–छकाय जीवनी रक्षा करवी ते 'परदया'

पांचमी स्वरूपदया–सूक्ष्म विवेकथी स्वरूपविचारणा करवी ते 'स्वरूपदया'

छठ्ठी अनुबंधदया–सद्गुरु, के सुशिक्षक शिष्यने कडवां कथनथी उपदेश आपे ए देखवामां तो अयोग्य लागे छे, परंतु परिणामे करुणानु कारण छे–आनुं नाम 'अनुबंधदया'

सातमी व्यवहारदया–उपयोगपूर्वक तथा विधिपूर्वक जे दया पाळवी तेनुं नाम 'व्यवहारदया'

आठमी निश्चयदया–शुद्ध साध्य उपयोगमां एकता भाव, अने अभेद उपयोग ते 'निश्चयदया'

ए आठ प्रकारनी दयावडे करीने व्यवहारधर्म भगवाने कह्यो छे एमा सर्व जीवनु सुख, संतोष, अभयदान ए सघळां विचारपूर्वक जोता आवी जायछे

बीजो निश्चयधर्म–पोताना स्वरूपनी भ्रमणा टाळवी, आत्माने आत्मभावे ओळखवो, 'आ संसार ते मारो नथी, हुं एथी भिन्न, परम असंग सिद्धसदृश्य शुद्ध आत्मा छुं,' एवी आत्मस्वभाववर्त्तना ते 'निश्चयधर्म' छे

जेमा कोइ प्राणीनु दु ख, अहित के असंतोष रह्या छे त्यां दया नथी, अने दया नथी त्यां धर्म नथी अर्हत् भगवाननां कहेला धर्मतत्त्वथी सर्व प्राणी अभय थाय छे

मरण अने अनंत संसार जेनो गयो छे तेने निर्ग्रंथना आगममां सद्देव कह्या छे. ए दोषरहित शुद्ध आत्मस्वरूपने पामेला होवाथी पूजनीय परमेश्वर कहेवा योग्य छे. उपर कह्या ते अढार दोषमानो एक पण दोष होय त्यां सद्देवनु स्वरूप घटतु नथी. आ परम तत्त्व महत्पुरुषोथी विशेष जाणवु अवश्यनु छे.

शिक्षापाठ ९. सद्धर्मतत्त्व

अनादि काळथी कर्मजाळना बंधनथी आ आत्मा संसारमां रखड्या करे छे. समय मात्र पण तेने खरु सुख नथी. अधोगतिने ए सेव्या करे छे, अने अधोगतिमां पडता आत्माने धरी राखनार सद्गति आपनार वस्तु तेनु नाम 'धर्म' कहेवाय छे, अने ए ज सत्य सुखनो उपाय छे. ते धर्मतत्त्वना सर्वज्ञ भगवाने भिन्न भिन्न भेद कह्या छे. तेमाना मुख्य बे छेः १. व्यवहारधर्म २. निश्चयधर्म.

व्यवहारधर्ममां दया मुख्य छे. सत्यादि बाकीना चार महाव्रतो ते पण दयानी रक्षा वास्ते छे. दयाना आठ भेद छेः १. द्रव्यदया २. भावदया ३. स्वदया ४. परदया ५. स्वरूपदया ६. अनुबंधदया ७. व्यवहारदया ८. निश्चयदया.

प्रथम द्रव्यदया—कोई पण काम करवु ते यत्नापूर्वक जीवरक्षा करीने करवु ते 'द्रव्यदया.'

बीजी भावदया—बीजा जीवने दुर्गति जतो देखीने अनुकंपा-बुद्धिथी उपदेश आपवो ते 'भावदया.'

परभवश्रेयस्कर धर्मनीति उत्तम गुरुथी मळी शके छे व्यवहारनीतिना शिक्षक अने धर्मनीतिना शिक्षकमा बहु भेद छे ठीकरीना कटका जेम व्यवहारशिक्षक अने अमूल्य कौस्तुभ जेम आत्मधर्म शिक्षक छे.

पुत्र–शीरछत्र ! आपनुं कहेवुं व्याजवी छे धर्मना शिक्षकनी संपूर्ण अवश्य छे आपे वारवार संसारनां अनंत दुःख सबधी मने कह्यु छे, एथी पार पामवा धर्म ज सहायभूत छे, त्यारे धर्म केवा गुरुथी पामीए तो श्रेयस्कर नीवडे ते मने कृपा करीने कहो

शिक्षापाठ ११ सद्गुरुतत्त्व भाग २

पिता–पुत्र गुरु त्रण प्रकारना कहेवाय छे १ काष्टस्वरूप २ कागळस्वरूप ३ पथ्थरस्वरूप काष्टस्वरूप गुरु सर्वोत्तम छे, कारण संसाररूपी समुद्रने १ काष्टस्वरूपी गुरु ज तरे छे, अने तारी शके छे २ कागळस्वरूप गुरु ए मध्यम छे ते संसारसमुद्रने पोते तरी शके नहीं, परंतु कइ पुण्य उपार्जन करी शके ए बीजाने तारी शके नहीं ३ पथ्थरस्वरूप ते पोते बुडे अने परने पण बुडाडे काष्टस्वरूप गुरु मात्र जिनेश्वर भगवानना शासनमा छे बाकी बे प्रकारना जे गुरु रह्या ते कर्मावरणनी वृद्धि करनार छे आपणे बधा उत्तम वस्तुने चाहीए छीए, अने उत्तमथी उत्तम मळी शके छे गुरु जो उत्तम होय तो ते भवसमुद्रमा नाविकरूप थई सद्धर्म नावमां बेसाडी पार पमाडे तत्त्वज्ञानना भेद, स्वस्वरूपभेद, लोकालोकविचार, संसारस्वरूप ए सघळुं उत्तम गुरु विना मळी शके नहीं, त्यारे तने प्रश्न करवानी इच्छा थशे के एवा गुरुना लक्षण कियां किया ?

शिक्षापाठ १० सद्गुरुतत्त्व भाग १.

पिता—पुत्र, तु जे शाळामां अभ्यास करवा जाय छे ते शाळानो शिक्षक कोण छे ?

पुत्र—पिताजी, एक विद्वान अने समजु ब्राह्मण छे.

पिता—तेनी वाणी, चालचलगत वगेरे केवां छे ?

पुत्र—एनी वाणी बहु मधुरी छे. ए कोइने अविवेकथी बोलावता नथी, अने बहु गंभीर छे; बोले छे त्यारे जाणे मुखमांथी फुल झरे छे. कोइनुं अपमान करता नथी; अने अमने योग्य नीति समजाय तेवी शिक्षा आपे छे

पिता—तुं त्यां शा कारणे जाय छे ते मने कहे जोइए

पुत्र—आप एम केम कहो छो, पिताजी ! संसारमां विचक्षण थवाने माटे पद्धतिओ समजुं, व्यवहारनी नीति शीखुं एटला माटे थइने आप मने त्यां मोकलो छो.

पिता—तारा ए शिक्षक दुराचारी के एवा होत तो ?

पुत्र—तो तो बहु माठुं थात; अमने अविवेक अने कुवचन बोलता आवडत, व्यवहारनीति तो पछी शीखवे पण कोण ?

पिता—जो पुत्र ए उपरथी हु हवे तने एक उत्तम शिक्षा कहुं; जेम संसारमां पडवा माटे व्यवहारनीति शीखवानुं प्रयोजन छे, तेम धर्मतत्त्व अने धर्मनीतिमां प्रवेश करवानुं परभवने माटे प्रयोजन छे जेम ते व्यवहारनीति सदाचारी शिक्षकथी उत्तम मळी शके छे, तेम

सत्शास्त्रनुं मनन करे छे

अने त्यांसुधी उपजीविकामां पण माया, कपट, इ० करतो नथी

स्त्री, पुत्र, मात, तात, मुनि अने गुरु ए सघळाने यथायोग्य सन्मान आपे छे.

मातापने धर्मनो बोध आपे छे

यत्नथी घरनी स्वच्छता, रांधवुं, सींधवुं, शयन इ० रखावे छे

पोते विचक्षणताथी वर्त्ती स्त्री, पुत्रने विनयी अने धर्मी करे छे

कुटुंबमां संपनी वृद्धि करे छे.

आवेला अतिथिनुं यथायोग्य सन्मान करे छे

याचकने क्षुधातुर राखतो नथी

सत्पुरुषोनो समागम, अने तेओनो बोध धारण करे छे

समर्याद अने संतोषयुक्त निरंतर वर्त्ते छे

जे यथाशक्ति शास्त्रसंचय घरमां राखे छे

अल्प आरंभथी जे व्यवहार चलावे छे

आवो गृहस्थाश्रम उत्तम गतिनुं कारण थाय, एम ज्ञानीओ कहे छे

ते कहु छु जिनेश्वर भगवाननी भाखेली आज्ञा जाणे, तेने यथातथ्य पाळे, अने बीजाने बोधे, कंचन, कामिनीथी सर्व भावथी त्यागी होय, विशुद्ध आहारजळ लेता होय, बावीश प्रकारना परिषह सहन करता होय, क्षांत, दांत, निरारंभी अने जितेंद्रिय होय, सिद्धांतिक ज्ञानमां निमग्न होय, धर्म माटे थईने मात्र शरीरनो निर्वाह करता होय, निर्ग्रंथपंथ पाळता कायर न होय, सळी मात्र पण अदत्त लेता न होय, सर्व प्रकारना आहार रात्रिए त्याग्या होय, समभावि होय, अने निरागताथी सत्योपदेशक होय टुंकामां तेओने काष्टस्वरूप सद्गुरु जाणवा पुत्र! गुरुना आचार, ज्ञान ए सम्बंधी आगममां बहु विवेकपूर्वक वर्णन कर्युं छे जेम तुं आगळ विचार करता शीखतो जइश, तेम पछी हु तने ए विशेष तत्त्वो बोधतो जइश.

पुत्र–पिताजी, आपे मने टुंकामां पण बहु उपयोगी, अने कल्याणमय कह्युं; हुं निरंतर ते मनन करतो रहीश

शिक्षापाठ १२ उत्तम गृहस्थ

संसारमां रह्या छतां पण उत्तम श्रावको गृहाश्रमथी आत्मसाधनने साधे छे; तेओनो गृहाश्रम पण वखणाय छे.

ते उत्तम पुरुष, सामायिक, क्षमापना, चोविहार प्रत्याख्यान इ० यम नियमने सेवे छे

परपत्नि भणी मा बहेननी दृष्टि राखे छे

सत्पात्रे यथाशक्ति दान दे छे

शांत, मधुरी अने कोमळ भाषा बोले छे

बीजाने तेओ केम तारी शके? वळी केटलाक अवतार लेवारूपे परमेश्वर कहेवराने छे तो त्या तेओने अमुक कर्मनुं भोगववुं बाकी छे एम सिद्ध थाय छे

जिज्ञासु–भाई, त्यारे पूज्य कोण? अने भक्ति कोनी करवी के जेवडे आत्मा स्वशक्तिनो प्रकाश करे.

सत्य–शुद्ध सच्चिदानंदस्वरूप जीवनसिद्ध भगवान् तेम ज सर्व दूषणरहित, कर्ममलहीन, मुक्त, वीतराग सकळ भयरहित, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी जिनेश्वर भगवाननी भक्तिथी आत्मशक्ति प्रकाश पामे छे

जिज्ञासु–एओनी भक्ति करवाथी आपणने तेओ मोक्ष आपे छे एम मानवु खरू?

सत्य–भाइ जिज्ञासु, ते अनतज्ञानी भगवान् तो निरागी अने निर्विकार छे एने स्तुति निंदानु आपणने कइ फळ आपवानु प्रयोजन नथी आपणो आत्मा अज्ञानी अने मोहांध थइने जे कर्मदळथी घेरायेलो छे ते कर्मदळ टाळवा अनुपम पुरुषार्थनु अवश्य छे सर्व कर्मदळ क्षय करी अनंत ज्ञान, अनत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत वीर्य, अने स्वस्वरूपमय थया एवा जिनेश्वरोनु स्वरूप आत्मानी निश्चयनये रिद्धि होवाथी ते भगवाननु स्मरण, चिंतवन, ध्यान अने भक्ति ए पुरुषार्थता आपे छे विकारथी आत्मा विरक्त करे छे शांति अने निर्जरा आपे छे जेम तरवार हाथमां लेवाथी शौर्यवृत्ति अने भाग पीवाथी निशो उत्पन्न थाय छे, तेम ए गुणचिंतवनथी आत्मा स्वस्वरूपानंदनी श्रेणिए चढतो जाय छे दर्पण जोता जेम मुखाकृतिनु भान थाय छे तेम, सिद्ध के जिनेश्वरस्वरूपनां चिंतवनरूप दर्पणथी आत्मस्वरूपनुं भान थाय छे

शिक्षापाठ १३ जिनेश्वरनी भक्ति भाग १

जिज्ञासु—विचक्षण सत्य! कोइ शंकरनी, कोइ ब्रह्मानी, कोइ विष्णुनी, कोइ सूर्यनी, कोइ अग्निनी, कोइ भवानीनी, कोइ पेगम्बरनी अने कोइ क्राइस्टनी भक्ति करे छे एओ भक्ति करीने शु आशा राखता हशे?

सत्य—प्रिय जिज्ञासु, ते भाविक मोक्ष मेळववानी परम आशाथी ए देवोने भजे छे

जिज्ञासु—कहो त्यारे, एथी तेओ उत्तम गति पामे एम तमारु मत छे?

सत्य—एओनी भक्तिवडे तेओ मोक्ष पामे एम हु कही शकतो नथी. जेओने ते परमेश्वर कहे छे तेओ कइ मोक्षने पाम्या नथी, तो पछी उपासकने ए मोक्ष क्याथी आपे? शंकर वगेरे कर्मक्षय करी शक्या नथी अने दूषणसहित छे एथी ते पूजवायोग्य नथी

जिज्ञासु—ए दूषणो कया कया ते कहो?

सत्य—अज्ञान, निद्रा, मिथ्यात्व, राग, द्वेष, अविरति, भय, शोक, जुगुप्सा, दानांतराय, लाभांतराय, वीर्यांतराय अने उपभोगांतराय, काम, हास्य, रति, अने अरति ए अढार दूषणमानु एक दूषण होय तोपण ते अपूज्य छे. एक समर्थ पंडिते पण कह्यु छे के, 'परमेश्वर छउ' एम मिथ्या रीते मनाववनारा पुरुषो पोते पोताने ठगे छे, कारण पडखामा स्त्री होवाथी तेओ विषयी ठरे छे; शस्त्र धारण करेला होवाथी द्वेषी ठरे छे जपमाळा धारण कर्याथी तेओनु चित्त व्यग्र छे एम सूचवे छे, 'मारे शरणे आव, हु सर्व पाप हरी लउ' एम कहेनारा अभिमानी अने नास्तिक ठरे छे आम छे तो पछी

ग्यु छे तओना जन्म, विहार, उपदेश ए सघळु नामनिक्षेपे जाणी शकायछे ए वडे आपणो आत्मा प्रकाश पामे छे सर्प जेम मोरलीना नादथी जागृत थाय छे, तेम आत्मा पोतानी सत्य रिद्धि सांभळता ने मोहनिद्राथी जागृत थाय छे

जिज्ञासु—मने तमे जिनेश्वरनी भक्ति सबन्धी बहु उत्तम कारण कह्यु जिनेश्वरनी भक्ति कइ फळदायक नथी एम आधुनिक केळवणीथी मने आस्था थइ हती ते नाश पामी छे जिनेश्वर भगवाननी भक्ति अवश्य करवी जोइए ए हु मान्य राखु छउ

सत्य—जिनेश्वर भगवाननी भक्तिथी अनुपम लाभ छे, एना कारणो महान् छे, तेमना परम उपकारने लीधे पण तेओनी भक्ति अवश्य करवी जोइए वळी तेओना पुरूषार्थनु स्मरण थता पण शुभ वृत्तिओनो उदय थाय छे जेम जेम श्री जिनना स्वरूपमा वृत्ति लय पामे छे, तेम तेम परम शांति प्रवहे छे एम जिनभक्तिना कारणो अत्रे संक्षेपमा कह्या छे ते आत्मार्थीओए विशेषपणे मनन करवायोग्य छे

शिक्षापाठ १५ भक्तिनो उपदेश

तोटक छंद

शुभ शीतळतामय छाय रही,
मनवांछित ज्यां फळपंक्ति कही,
जिन भक्ति ग्रहो तरु कल्प अहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो १

शिक्षापाठ १४. जिनेश्वरनी भक्ति भाग २

जिज्ञासु—आर्य सत्य ! सिद्धस्वरूप पामेला ते जिनेश्वरो तो सघळा पूज्य छे; त्यारे नामथी भक्ति करवानी कइ जरूर छे ?

सत्य—हा, अवश्य छे. अनंत सिद्धस्वरूपने ध्याता जे शुद्ध स्वरूपना विचार थाय ते तो कार्य, परंतु ए जेवडे ते स्वरूपने पाम्या ते कारण कयुं ? ए विचारता उग्र तप, महान् वैराग्य, अनंत दया महान् ध्यान ए सघळानुं स्मरण थशे. एओना अर्हत् तीर्थंकरपदमा जे नामथी तेओ विहार करता हता ते नामथी तेओना पवित्र आचार अने पवित्र चरित्रो अंतःकरणमां उदय पामशे. जे उदय परिणामे महा लाभदायक छे. जेम महावीरनुं पवित्र नाम स्मरण करवाथी तेओ कोण ? क्यारे ? केवा प्रकारे सिद्धि पाम्या ? ए आदि चरित्रोनी स्मृति थशे; अने एथी आपणे वैराग्य, विवेक इत्यादिकनो उदय पामीए.

जिज्ञासु—पण लोगस्समां तो चोवीश जिनेश्वरना नामोनुं सूचवन कर्युं छे ? एनो हेतु शुं छे ते मने समजावो.

सत्य—आ काळमां आ क्षेत्रमां जे चोवीश जिनेश्वरो थया एमना नामोनुं अने चरित्रोनुं स्मरण करवाथी शुद्ध तत्त्वनो लाभ थाय. वैरागीनुं चरित्र वैराग बोधे छे. अनंत चोवीशीना अनंत नाम सिद्धस्वरूपमां समग्र आवी जाय छे. वर्तमानकाळना चोवीश तीर्थंकरना नाम आ काळे लेवाथी काळनी स्थितिनुं बहु सूक्ष्मज्ञान पण सांभरी आवे छे. जेम एओनां नाम आ काळमां लेवाय छे, तेम चोवीशी चोवीशीना नाम काळ अने चोवीशी फरतां लेवाता जाय छे; एटले अमुक नाम लेवां एम कंइ हेतु नथी. परंतु तेओना गुणना पुरुषार्थनी स्मृति माटे [illegible] स्मृति करवी एम

जेमां महत्ता ठरावे छे तेमा महत्ता नथी, पण लघुता छे लक्ष्मीथी संसारमां खान, पान, मान, अनुचरो पर आज्ञा, वैभव ए सघळुं मळे छे, अने ए महत्ता छे, एम तमे मानता हशो, पण एटलेथी एने महत्ता मानवी जोइती नथी लक्ष्मी अनेक पाप वडे करीने पेदा थाय छे आव्या पछी अभिमान, बेभानता, अने मूढता आपे छे कुटुंब-समुदायनी महत्ता मळववा माटे तेनुं पाळणपोषण करवुं पडे छे ते वडे पाप अने दुःख सहन करवा पडे छे आपणे उपाधिथी पाप करी एनुं उदर भरवुं पडे छे पुत्रथी कंइ शाश्वत नाम रहेतुं नथी, एने माटे पण अनेक प्रकारना पाप अने उपाधि वेठवी पडे छे; छतां एथी आपणुं मंगळ शुं थाय छे ? अधिकारथी परतंत्रता के अमलमद आवे छे, अने एथी जुलम, अनीति, लांच तेम ज अन्याय करवा पडे छे, के थाय छे कहो त्यारे एमां महत्ता शानी छे ? मात्र पापजन्य कर्मनी पापी कर्म वडे करी आत्मानी नीच गति थाय छे, नीच गति छे त्यां महत्ता नथी पण लघुता छे

आत्मानी महत्ता तो सत्य वचन, दया, क्षमा, परोपकार अने समतामां रही छे लक्ष्मी इ० तो कर्ममहत्ता छे आम छतां लक्ष्मीथी शाणा पुरुषो दान दे छे, उत्तम विद्याशाळाओ स्थापी परदुःखभंजन थाय छे एक परणेली स्त्रीमां ज मात्र वृत्ति रोकी परस्त्री तरफ पुत्री भावथी जुए छे कुटुंब वडे करीने अमुक समुदायनुं हित काम करे छे पुत्र वडे तेने संसारमां भार आपी पोते धर्ममार्गमां प्रवेश करे छे अधिकारथी डहापण वडे आचरण करी राजा, प्रजा बन्नेनुं हित करी, धर्मनीतिनो प्रकाश करे छे, एम करवाथी केटलीक महत्ता पमाय खरी छतां ए महत्ता चोकस नथी, मरणभय माथे रह्यो छे, धारणा धरी रहे छे योजेली योजना के विवेक वखते हृदयमांथी जतां रहे एवो संसारमोह छे एथी आपणे एम निःसंशय समजवुं के, सत्य

निज आत्मस्वरूप मुदा प्रगटे,
मन ताप उताप तमाम मटे;
अति निर्जरता वण दाम ग्रहो,
भजिने भगवत भवंत लहो. २.

समभावि सदा परिणाम थशे,
जडमंद अधोगति जन्म जशे,
शुभ मंगळ आ परिपूर्ण चहो,
भजिने भगवत भवत लहो ३

शुभ भाववडे मन शुद्ध करो,
नवकार महा पदने समरो;
नहि एह समान सुमंत्र कहो,
भजिने भगवत भवत लहो. ४.

करशो क्षय केवळ राग कथा,
धरशो शुभ तत्त्वस्वरूप यथा,
नृपचंद्र प्रपंच अनंत दहो,
भजिने भगवत भवत लहो. ५.

शिक्षापाठ १६ खरी महत्ता.

केटलाक लक्ष्मीथी करीने महत्ता मळे छे एम माने छे, केटलाक महान् कुटुंबथी महत्ता मळे छे एम माने छे, केटलाक पुत्र वडे करीने महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक अधिकारथी महत्ता मळे छे एम माने छे; पण ए एमनु माननु विवेकथी जोता मिथ्या छे. एओ

आ मुष्टि मारवी योग्य नथी, तेम उगामी ते हवे पाछी वाळवी पण योग्य नथी एम विचारी तेणे पंच मुष्टि केश लुंचन कर्युं, अने त्यांथी मुनिभावे चाली नीकळ्या भगवान आदीश्वर ज्यां अठाणुं दिक्षित पुत्रोथी तेमज आर्य, आर्यांथी विहार करता हता त्यां जवा इच्छा करी, पण मनमां मान आव्युं के त्यां हुं जइश तो माराथी नाना अठाणुं भाइने वंदन करवुं पडशे, माटे त्यां तो जवुं योग्य नथी एम मानवृत्तिथी वनमां ते एकाग्र ध्याने रह्या हळवे हळवे चार मास थइ गया महा तपथी काया हाडकानो माळो थइ गइ, ते सुका झाड जेवा देखावा लाग्या, परंतु ज्यांसुधी माननो अंकुर तेना अंतःकरणथी खस्यो नहोतो त्यांसुधी ते सिद्धि न पाम्या ब्राह्मी अने सुंदरीए आवीने तेने उपदेश कर्यो "आर्य वीर! हवे मदोन्मत्त हाथीपरथी उतरो, एनाथी तो बहु शोष्युं एओना आ वचनोथी बाहुबळ विचारमां पड्या विचारता विचारता तेने भान थयुं के सत्य छे, हुं मानरूपी मदोन्मत्त हाथीपरथी हजु क्यां उतर्यो छउं? हवे एथी उतरवुं ए ज मंगळकारक छे," आम विचारी तेणे वंदन करवाने माटे पगलुं भर्युं के ते अनुपम दिव्य कैवल्य कमळाने पाम्या

वांचनार, जुओ, मान ए केवी दुरित वस्तु छे!!

शिक्षापाठ १८ चार गति

जीव शातावेदनीय, अशातावेदनीय वेदतो शुभाशुभ कर्मनां फळ भोगववा आ संसारवनमां चार गतिने विषे भम्या करेछे, तो ए चार गति खचित जाणवी जोइए

वचन, दया, क्षमा, ब्रह्मचर्य अने समता जेवी आत्ममहत्ता क्रोड स्थळे नथी. शुद्ध पंचमहाव्रतधारी भिक्षुके जे रिद्धि अने महत्ता मेळवी छे, ते ब्रह्मदत्त जेवा चक्रवर्त्तीए लक्ष्मी, कुटुंब, पुत्र के अधिकारथी मेळवी नथी, एम मारु मानवु छे!

शिक्षापाठ १७ बाहुबळ

बाहुबळ एटले पोतानी भूजानु बळ एम अहीं अर्थ करवानो नथी, कारण के, बाहुबळ नामना महापुरुषनु आ एक नानु पण अद्भुत चरित्र छे.

सर्व संग परित्याग करी, भगवान् ऋषभदेवजी भरत अने बाहुबळ नामना पोताना बे पुत्रोने राज्य सोंपी विहार करता हता त्यारे, भरतेश्वर चक्रवर्त्ती थयो आयुधशाळामा चक्रनी उत्पत्ति थया पछी प्रत्येक राज्यपर तेणे पोतानी आम्नाय बेसाडी, अने छखंडनी प्रभुता मेळवी मात्र बाहुबळे ज ए प्रभुता अंगीकार न करी आथी परिणाममां भरतेश्वर अने बाहुबळने युद्ध मंडायु घणा वखत सुधी भरतेश्वर, के बाहुबळ ए बन्नेमाथी एके हठ्या नहीं, त्यारे क्रोधावेशमा आवी जइ भरतेश्वरे बाहुबळ पर चक्र मूक्यु एक वीर्यथी उत्पन्न थयेला भाइपर चक्र प्रभाव न करी शके आ नियमने लीधे ते चक्र फरीने पाछु भरतेश्वरना हाथमा आव्यु भरते चक्र मूकवाथी बाहुबळने बहु क्रोध आव्यो. तेणे महा बळवत्तर मुष्टि उपाडी तत्काळ त्या तेनी भावनानु स्वरूप फर्यु ते विचारी गयो के, हुं आ बहु निंदनीय कर्म करु छउ, आनु परिणाम केवु दुःखदायक छे! भले भरतेश्वर राज्य भोगवो मिथ्या, परस्परनो नाश शा माटे करवो?

पमाय छे, ए मनुष्यगतिमां पण केटलाय दु:ख अने आत्मसाधनमां अंतरायो छे

एक तरुण सुकुमारने रोमे रोमे लालचोळ सुया घोंचवाथी जे असह्य वेदना उपजे छे ते करतां आठगुणी वेदना गर्भस्थानमां जीव ज्यारे रहे छे त्यारे पामे छे लगभग नव महिना मळ, मूत्र, लोही परु आदिमां अहोरात्र मूर्छागत स्थितिमां वेदना भोगवी भोगवीने जन्म पामे छे गर्भस्थानकनी वेदनाथी अनंतगुणी वेदना जन्मसमये उत्पन्न थाय छे त्यार पछी बाळावस्था पमाय छे मळ, मूत्र, धूळ अने नग्नावस्थामां अणसमजथी रझळी रडीने ते बाळावस्था पूर्ण थाय छे, अने युवावस्था आवे छे धन उपार्जन करवा माटे नाना प्रकारना पापमां पडवुं पडे छे ज्यांथी उत्पन्न थयो छे त्यां एटले विषय विकारमां वृत्ति जाय छे उन्माद, आळस, अभिमान, निंद्यदृष्टि, संयोग, वियोग एम घटमाळमां युवावय चाल्युं जाय छे, त्यां वृद्धावस्था आवे छे, शरीर कंपे छे, मुखे लाळ झरे छे त्वचापर करोचली पडी जाय छे सुंघवुं, सांभळवुं अने देखवुं ए शक्तिओ केवळ मंद थई जाय छे केश धवल थई खरवा मंडे छे, चालवानी आय रहेती नथी हाथमां लाकडी लई लडथडीआं खातां चालवुं पडे छे का तो जीवन पर्यंत खाटले पड्यां रहेवुं पडे छे श्वास, खांसी इत्यादिक रोग आवीने वळगे छे, अने थोडाकाळमां काळ आवीने कोळीओ करी जाय छे आ देहमांथी जीव चाली नीकळे छे काया हती नहती थई जाय छे मरणसमये पण केटली बधी वेदना छे ! चतुर्गतिना दु:खमां जे मनुष्यदेह श्रेष्ठ तेमां पण केटलां बधां दु:ख रह्यां छे ! तेम छतां उपर जणाव्या प्रमाणे अनुक्रमे काळ आवे छे एम पण नथी गमे ते वखते ते आवीने लई जाय छे माटे ज विचक्षण पुरुषो प्रमाद विना आत्मकल्याणने आराधे छे

१. नरकगति–महारंभ, मदिरापान, मांसभक्षण, ईत्यादिक तीव्र हिंसाना करनार जीवो अघोर नरकमां पडे छे त्यां लेश पण शाता, विश्राम के सुख नथी. महा अंधकार व्याप्त छे अंगछेदन सहन करवुं पडे छे, अग्निमां बळवुं पडे छे, अने छरपलानी धार जेवुं जळ पीवुं पडे छे अनंत दुःखथी करीने ज्यां प्राणीभूते सांकड, अशाता अने विलविलाट सहन करवां पडे छे. आवां जे दुःख तेने केवल-ज्ञानीओ पण कही शकता नथी अहोहो ! ते दुःख अनंतिवार आ आत्माए भोगव्यांछे.

२. तिर्यंचगति–छल, जूठ प्रपंच ईत्यादिक करीने जीव सिंह, वाघ, हाथी, मृग, गाय, भेंस, बळद ईत्यादिक तिर्यंचना शरीर धारण करे छे ते तिर्यंचगतिमां भूख, तरश, ताप, वध, बंधन, ताडन, भारवहन ईत्यादिना दुःखने सहन करे छे

३ मनुष्यगति–खाद्य, अखाद्य विषे विवेकरहित छे, लज्जाहीन, माता पुत्री साथे कामगमन करवामां जेने पापापापनुं भान नथी; निरंतर मांसभक्षण, चोरी, परस्त्रीगमन वगेरे महा पातक कर्यां करे छे, ए तो जाणे अनार्य देशना अनार्य मनुष्य छे आर्य देशमां पण क्षत्री, ब्राह्मण, वैश्य प्रमुख मतिहीन, दरिद्रि, अज्ञान अने रोगथी पीडित मनुष्य छे, मान, अपमान ईत्यादि अनेक प्रकारना दुःख तेओ भोगवी रह्या छे

४ देवगति–परस्पर वेर, झेर, क्लेश, शोक, मत्सर, काम, मद, क्षुधा आदिथी देवताओ पण आयुष् व्यतीत करी रह्या छे; ए देवगति

एम चार गति सामान्य रूपे कही आ चारे गतिमां मनुष्यगति सौथी श्रेष्ठ अने दुर्लभ छे. आत्मानं परमहित–मोक्ष गति, एथी

संसारना मुख्यमां पडेलानो ते भक्ष करी जाय छे. अग्निमां जेम जेम घी अने इंधन होमाय छे, तेम तेम ते वृद्धि पामे छे, तेवी ज रीते संसाररूप अग्निमां तीव्र मोहरूप घी, अने विषयरूप इंधन होमाता ते वृद्धि पामे छे.

३ संसारने त्रीजी उपमा अंधकारनी छाजे छे. अंधकारमां जेम सींदरी, सर्पनु भान करावे छे, तेम संसार सत्यने असत्यरूप बतावे छे, अंधकारमां जेम प्राणीओ आम तेम भटकी विपत्ति भोगवे छे, तेम संसारमां बेभान थइने अनंत आत्माओ चतुर्गतिमां आम तेम भटके छे. अंधकारमां जेम काच अने हीरानु ज्ञान थतु नथी, तेम संसाररूपी अंधकारमां विवेक अविवेकनु ज्ञान थतुं नथी. जेम अंधकारमां प्राणीओ छती आंखे अंध बनी जाय छे, तेम छती शक्तिए संसारमां तेओ मोहांध बनी जाय छे. अंधकारमां जेम घुवड इत्यादिकनो उपद्रव वधे छे, तेम संसारमां लोभ, मायादिकनो उपद्रव वधे छे. एम अनेक भेदे जोता संसार ते अंधकाररूप ज जणाय छे.

शिक्षापाठ २०. संसारने चार उपमा भाग २

४ संसारने चोथी उपमा शकटचक्रनी एटले गाडाना पैडानी छाजे छे. चालता, शकटचक्र जेम फरतु रहे छे, तेम संसारमां प्रवेश करता ते फरवारूपे रहे छे. शकटचक्र जेम धरीविना चाली शकतुं नथी, तेम संसार मिथ्यात्वरूपी धरी विना चाली शकतो नथी. शकटचक्र जेम आरावडे करीने रह्यु छे, तेम संसार शंका प्रमादादिक आराथी टक्यो छे. एम अनेक प्रकारथी शकटचक्रनी उपमा पण संसारने लागी शके छे.

शिक्षापाठ १९ संसारने चार उपमा भाग १

१ ससारने तत्त्वज्ञानीओ एक महासमुद्रनी उपमा पण आपे छे. ससाररूपी समुद्र अनत अने अपार छे अहो लोको! एनो पार पामवा पुरुषार्थनो उपयोग करो! उपयोग करो!! आम एमना स्थळे स्थळे वचनो छे ससारने समुद्रनी उपमा छाजती पण छे समुद्रमा जेम मोजानी छोळो उछळ्या करे छे, तेम ससारमा विषयरूपी अनेक मोजाओ उछळे छे जळनो उपरथी जेम सपाट देखाव छे तेम, ससार पण सरळ देखाव दे छे. समुद्र जेम क्याक बहु ऊडो छे, अने क्याक भमरीओ खवरावे छे तेम, ससार कामविषय प्रपचादिकमा बहु ऊडो छे ते मोहरूपी भमरीओ खवरावे छे थोडु जळ छता समुद्रमा जेम उभा रहेवाथी कादवमा खुची जइए छीए तेम, ससारना लेश प्रसगमा ते तृष्णारूपी कादवमा खुचवी दे छे समुद्र जेम नाना प्रकारना खरावा, अने तोफानथी नाव के वहाणने जोखम पहोचाडे छे, तेम स्त्रीओरूपी खरावा अने कामरूपी तोफानथी ससार आत्माने जोखम पहोचाडे छे समुद्र जेम अगाध जळथी शीतल देखातो छता वडवानळ नामना अग्निनो तेमा वास छे तेम ससारमा मायारूपी अग्नि बळ्या ज करे छे समुद्र जेम चोमासामा वधारे जळ पामीने ऊडो उतरे छे तेम पापरूपी जळ पामीने ससार ऊडो उतरे छे एटले मजबुत पाया करतो जाय छे

२. ससारने बीजी उपमा अग्निनी छाजे छे अग्निथी करीने जेम महा तापनी उत्पत्ति छे, तेम ससारथी पण त्रिविध तापनी उत्पत्ति छे. अग्निथी बळेलो जीव जेम महा विलविलाट करे छे, तेम ससारथी बळेलो जीव अनत दुःखरूप नरकथी असह्य विलविलाट करे छे अग्नि जेम सर्व वस्तुनो भक्ष करी जाय छे. तेम

शिक्षापाठ २१ बार भावना

वैराग्यनी, अने तेवा आत्महितैषि विषयोनी सुदृढता थवा माटे बार भावना चिंतववानु तत्त्वज्ञानीओ कहे छे

१ शरीर, वैभव, लक्ष्मी, कुटुंब परिवारादिक सर्व विनाशी छे जीवनो मूळ धर्म अविनाशी छे, एम चिंतववुं ते पहेली 'अनित्यभावना'

२ संसारमा मरण समये जीवने शरण राखनार कोई नथी, मात्र एक शुभ धर्मनुं ज शरण सत्य छे, एम चिंतववु ते बीजी 'अशरणभावना'

३ "आ आत्माए संसारसमुद्रमा पर्यटन करता करता सर्व भव कीधा छे, ए संसारजंजीरथी हु क्यारे छूटीश? ए संसार मारो नथी, हु मोक्षमयी छु," एम चिंतववु ते त्रीजी 'संसारभावना'

४ "आ मारो आत्मा एकलो छे, ते एकलो आव्यो छे, एकलो जशे, पोताना करेलां कर्म एकलो भोगवशे" एम चिंतववु ते चोथी 'एकत्वभावना'

५ आ संसारमा कोइ कोइनु नथी एम चिंतववु ते पांचमी 'अन्यत्वभावना'

६ "आ शरीर अपवित्र छे, मळमूत्रनी खाण छे, रोग जराने रहेवानुं धाम छे, ए शरीरथी हुं न्यारो छउं" एम चिंतववु ते छठी 'अशुचिभावना'

एवी रीते ससारने जेटली अगोउपमा आपो एटली थोडी छे. मुख्यपणे ए चार उपमा आपणे जाणी इने एमाथी तत्त्व लेवु योग्य छे:—

१ सागर जेम मजबुत नाव अने माहितगार नाविकथी तरीने पार पमाय छे, तेम सद्धर्मरूपी नाव, अने सद्गुरुरूपी नाविकथी ससारसागर पार पामी शकाय छे. सागरमा जेम डाह्या पुरुषोए निर्विघ्न रस्तो शोधी काढ्यो होय छे, तेम जिनेश्वर भगवाने तत्त्वज्ञानरूप निर्विघ्न उत्तम राह बताव्यो छे.

२ अग्नि जेम सर्वने भक्ष करी जाय छे, परतु पाणीथी बुझाई जाय छे; तेम वैराग्यजळथी ससारअग्नि बुझवी शकाय छे.

३ अधकारमा जेम दीवो लई जवाथी प्रकाश थता, जोई शकाय छे; तेम तत्त्वज्ञानरूपी निर्बुज दीवो ससाररूपी अधकारनो प्रकाश करी सत्य वस्तु बतावे छे

४ शकटचक्र जेम बळद विना चाली शकतु नथी तेम ससारचक्र राग द्वेषविना चाली शकतु नथी

एम ए ससारदरदनु निवारण उपमावडे अनुपानादि साथे कह्यु. ते आत्महितैषीए निरतर मनन करवु अने बीजाने बोधवु

धर्मअचलतानी प्रशंसा करी. एवामां त्यां एक तुच्छ बुद्धिवान देव बेठो हतो तेणे एवी सुदृढतानो अविश्वास बताव्यो, अने कह्युं के ज्यांसुधी परिषह पड्या न होय त्यांसुधी बधाय सहनशील अने धर्मदृढ जणाय. आ मारी वात हुं एने चळावी आपीने सत्य करी देखाडुं. धर्मदृढ कामदेव ते वेळा कायोत्सर्गमां लीन हता. देवताए प्रथम हाथीनुं रूप वैक्रिय कर्युं, अने पछी कामदेवने खूब गुंद्यो तोपण ते अचळ रह्या, एटले मुशळ जेवुं अंग करीने काळावर्णनो सर्प थइने भयंकर फुंफाडा कर्या तोय कामदेव कायोत्सर्गथी लेश चळ्या नहीं, पछी अट्टहास्य करता राक्षसनो देह धारण करीने अनेक प्रकारना परिषह कर्या, तोपण कामदेव कायोत्सर्गथी चळ्या नहीं. सिंह वगेरेना अनेक भयंकर रूप कर्यां तोपण कायोत्सर्गमां लेश हीनता कामदेवे आणी नहीं. एम रात्रिना चारे पहोर देवताए कर्या कर्युं, पण ते पोतानी धारणामां फाव्यो नहीं. पछी ते देवे अवधिज्ञानना उपयोगवडे जोयुं तो कामदेवने मेरुना शिखरनी पेठे अडोल रह्या दीठा. कामदेवनी अद्‌भुत निश्चळता जाणी तेने विनयभावथी प्रणाम करी पोतानो दोष क्षमावीने ते देवता स्वस्थानके गयो.

कामदेव श्रावकनी धर्मदृढता एवो बोध करे छे के, सत्यधर्म अने सत्य प्रतिज्ञामां परम दृढ रहेवुं, अने कायोत्सर्ग आदि जेम बने तेम एकाग्र चित्तथी अने सुदृढताथी निर्दोष करवां. चलविचल भावथी कायोत्सर्गादि बहु दोषयुक्त थाय छे. पाई जेवा द्रव्यलाभ माटे धर्मशास्त्र काढनारथी धर्ममां दृढता क्यांथी रही शके? अने रही शके तो केवी रहे! ए विचारतां खेद थाय छे.

७ राग, द्वेष, अज्ञान, मिथ्यात्व इत्यादिक सर्व आश्रव छे एम चिंतववु ते सातमी 'आश्रवभावना.'

८. ज्ञान, ध्यानमा जीव प्रवर्त्तमान थइने नवा कर्म बांधे नही एवी चिंतवना करवी ते आठमी 'सम्वरभावना '

९ ज्ञानसहित क्रिया करवी ते निर्जरानु कारण छे एम चिंतववु ते नवमी 'निर्जराभावना '

१०. लोकस्वरूपनु उत्पत्ति स्थिति विनाशस्वरूप विचारवु ते दशमी 'लोकस्वरूपभावना '

११ ससारमा भमता आत्माने सम्यग्ज्ञाननी प्रसादी प्राप्त थवी दुर्लभ छे; वा सम्यग्ज्ञान पाम्यो, तो चारित्र सर्व विरतिपरिणामरूप धर्म पामवो दुर्लभ छे; एवी चिंतवना ते अग्यारमी 'बोधदुर्लभभावना '

१२. धर्मना उपदेशक तथा शुद्ध शास्त्रना बोधक एवा गुरु अने एनु श्रवण मळवु दुर्लभ छे एवी चिंतवना ते बारमी 'धर्मदुर्लभभावना '

आ बार भावनाओ मननपूर्वक निरंतर विचारवाथी सत्पुरुषो उत्तम पदने पाम्या छे, पामे छे, अने पामशे

शिक्षापाठ २२ कामदेव श्रावक

महावीर भगवानना समयमा द्वादशव्रतने विमळ भावथी धारण करनार, विवेकी अने निर्ग्रंथवचनानुरक्त कामदेव नामना एक श्रावक

साथे पर्वतनी माए राजाने कह्यु. "मारा पुत्रथी 'बोकडो' कहेवायो छे माटे, तेनो पक्ष करवो पडशे, तमने पूछवा माटे तेओ आवशे" वसुराजा बोल्यो "हु असत्य केम कहु? माराथी ए बनी शके नहीं" पर्वतनी माए कह्यु "पण जो तमे मारा पुत्रनो पक्ष नही करो तो तमने हु हत्या आपीश" राजा विचारमा पडी गयो के, सत्यवडे करीने हु मणिमय सिंहासनपर अद्धर बेसु छउ लोकसमुदायने न्याय आपु छउ लोक पण एम जाणे छे के, राजा सत्यगुणे करीने सिंहासनपर अतरिक्ष बेसे छे हवे केम करवु? जो पर्वतनो पक्ष न करु तो ब्राह्मणी मरे छे, ए वळी मारा गुरुनी स्त्री छे. न चाल्ता छेवट राजाए ब्राह्मणीने कह्यु "तमे भले जाओ, हु पर्वतनो पक्ष करीश" आवो निश्चय करावीने पर्वतनी मा घेर आवी प्रभाते नारद, पर्वत अने तेनी मा विवाद करता राजा पासे आव्या राजा अजाण थई पूछवा लाग्यो के शु छे पर्वत? पर्वते कह्यु "राजाधिराज! अज ते शु? ते कहो" राजाए नारदने पुछ्यु "तमे शु कहो छो?" नारदे कह्युः 'अज' ते त्रण वर्षनी 'व्रीहि' तमने क्या नथी सांभरतुं? वसुराजा बोल्योः 'अज' एटले 'बोकडो, पण 'व्रीहि' नही ते ज वेळा देवताए सिंहासनथी उछाळी हेठो नाख्यो, वसु काळ परिणाम पामी नरके गयो

आ उपरथी सामान्य मनुष्योए सत्य, तेमज राजाए न्यायमा अपक्षपात, अने सत्य बन्ने ग्रहण करवा योग्य छे ए मुख्य बोध मळे छे

जे पांच महाव्रत भगवाने प्रणीत कर्या छे, तेमाना प्रथम महा व्रतनी रक्षाने माटे बाकीना चार व्रत वाडरूपे छे, अने तेमा पण पहेली वाड ते सत्य महाव्रत छे ए सत्यना अनेक भेद सिद्धांतथी श्रुत करवा अवश्यना छे

शिक्षापाठ २३ सत्य

सामान्य कथनमां पण कहेवाय छे के, सत्य ए आ जगतनुं धारण छे, अथवा सत्यने आधारे आ जगत् रह्युं छे. ए कथनमांथी एवी शिक्षा मळे छे के, धर्म, नीति, राज अने व्यवहार ए सत्यवडे प्रवर्त्तन करी रह्यां छे; अने ए चारे न होय तो जगतनुं रूप केवुं भयंकर होय? ए माटे सत्य ए जगतनुं धारण छे एम कहेवुं ए कंइ अतिशयोक्ति जेवुं, के नहीं मानवा जेवुं नथी

वसुराजानुं एक शब्दनुं असत्य बोलवुं केटलुं दुःखदायक थयुं हतुं ते प्रसंग विचार करवा माटे अहीं कहीशुं'

वसुराजा, नारद अने पर्वत ए त्रणे एक गुरु पासेथी विद्या भण्या हता पर्वत अध्यापकनो पुत्र हतो, अध्यापके काळ कर्यो एथी पर्वत तेनी मा सहित वसुराजाना दरबारमां आवी रह्यो हतो एक रात्रे तेनी मा पासे बेठी छे, अने पर्वत तथा नारद शास्त्राभ्यास करे छे. एमां एक वचन पर्वत एवुं बोल्यो के, 'अजाहोतव्यं' त्यारे नारदे पूछ्युं "अज ते शुं पर्वत?" पर्वते कह्युं "अज ते बोकडो" नारद बोल्योः "आपणे त्रणे जण तारा पिता कने भणता हता त्यारे, तारा पिताए तो 'अज' ते त्रण वर्षनी 'व्रीहि' कही छे, अने तुं अवळुं शा माटे कहे छे? एम परस्पर वचनविवाद वध्यो त्यारे पर्वते कह्युं "आपणने वसुराजा कहे ते खरुं" ए वातनी नारदे हा कही, अने जीते तेने माटे अमुक सरत करी पर्वतनी मा जे पासे बेठी हती तेणे आ सांभळ्युं. 'अज' एटले 'व्रीहि' एम तेने पण याद हतुं; सरतमां पोतानो पुत्र हारशे एवा भयथी पर्वतनी मा रात्रे राजा पासे गइ अने पूछ्युं 'राजा, 'अज' एटले शुं?" वसुराजाए संबंधपूर्वक कह्युं. "अज एटले

प्रवाह नीकळे छे ने, भाने एक ज रूप होवाथी घणा माणसो छतां, अने परस्परनो महवास छता ते एकातरूप ज छे, अने तेनी एकात मात्र सतसमागममा रही छे कदापि कोई एम विचारशे के, विषयीमडळ मळे छे त्या समभाव अने सरखीवृत्ति होवाथी एकात का न कहेवो? तेनु समाधान तत्काळ छे के, तेओ एक स्वभावी होता नथी. तेमा परस्पर स्वार्थबुद्धि अने मायानु अनुसधान होय छे, अने ज्या ए बे कारणथी समागम छे त्या एक स्वभाव के निर्दोषता होता नथी निर्दोष अने समस्वभावी समागम तो परस्परथी शात मुनीश्वरोनो छे, तेम ज धर्मध्यान प्रशस्त अल्पारभी पुरुषनो पण केटलेक अशे छे ज्या स्वार्थ अने माया कपट ज छे त्या समस्वभावता नथी, अने ते सत्सग पण नथी सत्सगथी जे सुख अने आनद मळे छे ते अति स्तुतिपात्र छे ज्या शास्त्रोना सुदर प्रश्नो थाय, ज्या उत्तम ज्ञान, ध्याननी सुकथा थाय, ज्यां सत्पुरुषोना चरित्रपर विचार बधाय, ज्या तत्त्वज्ञानना तरगनी लहरियो छूटे, ज्या सरळस्वभावथी सिद्धातविचार चर्चाय, ज्या मोक्षजन्य कथनपर पुष्कळ विवेचन थाय एवो सत्संग ते महा दुर्लभ छे कोइ एम कहे के, सत्सगमंडळमां कोइ मायावि नहि होय? तो तेनु समाधान आ छे ज्या माया अने स्वार्थ होय छे त्यां, सत्सग ज होतो नथी राजहसनी सभानो काग देखावे कदापि न कळाय तो अवश्य राग कळाशे, मान रह्यो तो मुखमुद्राए कळाशे पण ते अंधकारमा जाय नही तेम ज मायावियो सत्सगमा स्वार्थे जइने शु करे? त्या पेट भर्यानी वात तो होय नही ने घडी त्या जइ ते विश्रांति लेतो होय तो भले ले के, जेथी रग लागे, नही तो रोजीदार तेनु आगमन होय नहीं, जेम पृथ्वीपर तराय नहीं, तेम स सगथी बूडाय नही, आवी सत्सगमा चमत्कृति छे निरतर एवा

शिक्षापाठ २४ सत्संग

सत्संग ए सर्व सुखनुं मूळ छे; सत्संगनो लाभ मळ्यो के तेना प्रभाववडे वांछित सिद्धि थई ज पडी छे. गमे तेवा पवित्र थवाने माटे सत्संग श्रेष्ठ साधन छे, सत्संगनी एक घडी जे लाभ दे छे ते कुसंगना एक कोट्यावधि वर्ष पण लाभ न दई शकता अधोगतिमय महा पापो करावे छे, तेमज आत्माने मलिन करे छे सत्संगनो सामान्य अर्थ एटलो छे के, उत्तमनो सहवास ज्यां सारी हवा नथी आवती त्यां रोगनी वृद्धि थाय छे; तेम ज्यां सत्संग नथी त्यां आत्मरोग वधे छे दुर्गंधथी कंटाळीने जेम नाके वस्त्र आडुं दइए छीए, तेम कुसंगथी सहवास बंध करवानुं अवश्यनुं छे; संसार ए पण एक प्रकारनो संग छे, अने ते अनंत कुसंगरूप तेम ज दुःखदायक होवाथी त्यागवायोग्य छे गमे ते जातनो सहवास होय परंतु जेवडे आत्मसिद्धि नथी ते सत्संग नथी आत्माने सत्य रंग चढावे ते सत्संग मोक्षनो मार्ग बतावे ते मैत्रि उत्तम शास्त्रमां निरंतर एकाग्र रहेवुं ते पण सत्संग छे, सत्पुरुषोनो समागम ए पण सत्संग छे मलीन वस्त्रने जेम साबु तथा जळ स्वच्छ करे छे तेम शास्त्र बोध अने सत्पुरुषोनो समागम, आत्मानी मलीनता टाळीने शुद्धता आपे छे जेनाथी हमेशनो परिचय रही राग, रंग, गान, तान, अने स्वादिष्ट भोजन सेवाता होय ते तमने गमे तेवो प्रिय होय तोपण निश्चय मानजो के, ते सत्संग नथी, पण कुसंग छे सत्संगथी प्राप्त थयेलुं एक वचन अमुल्य लाभ आपे छे. तत्त्वज्ञानीओए मुख्य बोध एवो कर्यो छे के, सर्व संग परित्याग करी, अंतरमां रहेला सर्व विकारथी पण विरक्त रही एकांतनुं सेवन करो तेमां सत्संगनी स्तुति आवी जाय छे केवळ एकांत ते तो ध्यानमां रहेवुं के योगाभ्यासमां रहेवुं ए छे, परंतु समस्वभाविनो समागम जेमाथी एक ज प्रकारनी वर्तनतानो

छ खंड साधी आज्ञा मनावनार राजाधिराज, चक्रवर्त्ती कहेवाय छे ए समर्थ चक्रवर्त्तीमां सुभुम नामे एक चक्रवर्त्ती थई गयो छे एणे छ खंड साधी लीधा एटले चक्रवर्त्ती-पदथी ते मनायो, पण एटलेथी एनी मनोवाञ्छा तृप्त न थई, हजु ते तरस्यो रह्यो एटले धातकी खंडना छ खंड साधवा एणे निश्चय कर्यो बधा चक्रवर्त्ती छ खंड साधे छे, अने हु पण एटला ज साधु तेमां महत्ता शानी? बार खंड साधवाथी चिरकाळ हु नामांकित थईश, समर्थ आज्ञा जीवनपर्यंत ए खंडोपर मनावी शकीश, एवा विचारथी समुद्रमां चर्मरत्न मूक्युं, ते उपर सर्व सैन्यादिकनो आधार रह्यो हतो. चर्मरत्नना एक हजार देवता सेवक कहेवाय छे, तेमां प्रथम एके विचार्यु के कोण जाणे केटलांय वर्ष आमाथी छूटको थशे? माटे देवांगनाने तो मळी आवुं एम धारी ते चाल्यो गयो, एवाज विचारे बीजो गयो, पछी त्रीजो गयो, अने एम करतां करता हजारे चाल्या गया, त्यारे चर्मरत्न बूड्युं, अश्व, गज अने सर्व सैन्यसहित सुभुम नामनो ते चक्रवर्त्ती बूड्यो, पापभावनामां ने पापभावनामां मरीने ते अनंत दुःखथी भरेली सातमी तमतमप्रभा नर्कने विषे जईने पड्यो जुओ! [illegible] खंडनुं आधिपत्य तो भोगववुं रह्युं, परंतु अकस्मात् अने भयंकर रीते परिग्रहनी प्रीतिथी ए चक्रवर्त्तीनुं मृत्यु थयुं, तो पछी बीजा माटे तो कहेवुं ज शुं? परिग्रह ए पापनुं मूळ छे, पापनो पिता छे, अने एकादशव्रतने महा दोष दे एवो एनो स्वभाव छे ए माटे थईने आत्महितैषिए जेम बने तेम तेनो त्याग करी मर्यादा पूर्वक वर्तन करवुं

निर्दोष समागममा माया ल्इने आवे पण कोण? कोइज दुर्भागी; अने ते पण असभवित छे.

सत्सग ए आत्मानु परम हितकारि औषध छे.

शिक्षापाठ २५ परिग्रहने संकोचवो

जे प्राणीने परिग्रहनी मर्यादा नथी, ते प्राणी सुखी नथीः तेने जे मळ्यु ते ओछु छे कारण जेटलु मळतु जाय तेटलाथी विशेष प्राप्त करवा तेनी इच्छा थाय छे परिग्रहनी प्रबळतामा जे कइ मळ्यु होय तेनु सुख तो भोगवातु नथी परतु होय ते पण वखते जाय छे. परिग्रहथी निरतर चळविचळ परिणाम अने पापभावना रहे छे; अकस्मात योगथी एवी पापभावनामा आयुष्य पूर्ण थाय तो बहुधा अधोगतिनु कारण थइ पडे. केवळ परिग्रह तो मुनीश्वरो त्यागी शके, पण गृहस्थो एनी अमुक मर्यादा करी शके मर्यादा थवाथी उपरात परिग्रहनी उत्पत्ति नथी, अने एथी करीने विशेष भावना पण बहुधा थती नथी; अने वळी जे मळ्यु छे तेमा सतोष राखवानी प्रथा पडे छे, एथी सुखमा काळ जाय छे कोण जाणे लक्ष्मीआदिकमा केवीए विचित्रता रही छे के जेम जेम लाभ थतो जाय छे तेम तेम लोभनी वृद्धि थती जाय छे, धर्म सबधी केटलु ज्ञान छता, धर्मनी दृढता छता पण परिग्रहना पाशमा पडेलो पुरुष कोइक ज छूटी शके छे; वृत्ति एमाज लटकी रहे छे, परतु ए वृत्ति कोइ काळे सुखदायक के आत्महितैषी थइ नथी. जेणे एनी टुकी मर्यादा करी नहीं, ते बहोळा दु:खना भागी थया छे

छउ कच्छना कोई गाममां श्रावकधर्म पाळनार रायशी, देवशी अ
खेतशी एम त्रण नामधारी ओसवाळ रहेता हता नियमित री
तेओ संध्याकाळे, अने परोढिये प्रतिक्रमण करता हता परोढि
रायशी अने संध्याकाळे देवशी प्रतिक्रमण करावता हता रा
संबंधी प्रतिक्रमण रायशी करावतो; एने संबंधे 'रायशी पडिक्कम
ठायमि' एम तेने बोलवुं पडतुं, तेमज देवशीने 'देवशी पडिक्कम
ठायमि' एम संबंध होवाथी बोलवुं पडतुं योगानुयोगे घणा
आग्रहथी एक दिवस संध्याकाळे खेतशीने बोलाववा बेसाये
खेतशीए ज्यां 'देवशी पडिक्कमणु ठायमि' एम आव्युं, त्यां 'खेत
पडिक्कमणुं ठायमि' ए वाक्यो लगावी दीधां! ए सांभळी स
हास्यग्रस्त थया अने पूछ्युं आम का? खेतशी बोल्यो' वळी अ
ते केम? त्यां उत्तर मळ्यो के, 'खेतशी पडिक्कमणु ठायमि'
तमे केम बोलो छो? खेतशीए कह्युं, हुं गरीब छउं एटले मारं ना
आव्युं त्यां पाघडी तकरार लइ बेठा, पण रायशी अने देवशी म
तो कोइ दिवस कोइ बोलता पण नथी ए बन्ने केम 'राय
पडिक्कमणु ठायमि अने 'देवशी पडिक्कमणु ठायमि' एम कहे छे
तो पछी हुं 'खेतशी पडिक्कमणु ठायमि' एम का न कहुं? ए
भद्रिकताए तो बधाने विनोद उपजाव्यो, पछी अर्थनी कारण सहि
समजण पाडी एटले खेतशी पोताना मुखपाठी प्रतिक्रमणथी शरमाये

आ तो एक सामान्य वात छे, परंतु अर्थनी खुबी न्यारी
तत्त्वज्ञ तेपर बहु विचार करी शके वाकी तो गोळ गळ्यो ज ल
तेम निर्ग्रंथवचनामृतो पण सत्फळ ज आपे अहो! पण
पामवानी वातनी तो बलिहारी ज छे!

शिक्षापाठ २६ तत्त्व समजवुं

शास्त्रोना शास्त्रो मुख पाठे होय एवा पुरुषो घणा मळी शके; परतु जेणे थोडा वचनोपर प्रौढ अने विवेकपूर्वक विचार करी शास्त्र जेटलु ज्ञान हृदयगत कर्युं होय तेवा मळवा दुर्लभ छे तत्त्वने पहोंची जवु ए कइ नानी वात नथी कूदीने दरियो ओळगी जवो छे

अर्थ एटले लक्ष्मी, अर्थ एटले तत्त्व अने अर्थ एटले शब्दनु बीजु नाम आवा अर्थशब्दना घणा अर्थ थाय छे पण 'अर्थ' एटले 'तत्त्व' ए विषयपर अहीं आगळ कहेवानु छे जेओ निर्ग्रंथप्रवचनमा आवेला पवित्र वचनो मुखपाठे करे छे, ते तेओना उत्साहबळे सत्फळ उपार्जन करे छे, परतु जो तेनो मर्म पाम्या होय तो एथी ए सुख, आनद, विवेक अने परिणामे महदद्भुत फळ पामे छे अभणपुरुष सुदर अक्षर अने ताणेला मिथ्या लीटा ए बेना भेदने जेटलु जाणे छे, तेटलुज मुखपाठी अन्य ग्रथ विचार अने निर्ग्रंथप्रवचनने भेद रूप माने छे, कारण तेणे अर्थ पूर्वक निग्रथ वचनामृतो धार्या नथी; तेम ते पर यथार्थ तत्त्वविचार कर्यो नथी जो के तत्त्वविचार करवामा समर्थ बुद्धिप्रभाव जोइए छीए, तोपण कइ विचार करी शके, पथ्थर पीगळे नही तोपण पाणीथी पलळे तेम ज जे वचनामृतो मुखपाठे कर्या होय ते अर्थ सहित होय तो बहु उपयोगी थई पडे; नहीं तो पोपटवाळु राम नाम पोपटने कोई परिचये रामनाम कहेता शीखडावे; परतु पोपटनी बला जाणे क राम ने दाडम के द्राक्ष सामान्यार्थ समज्या वगर एवु थाय छे कच्छी वैश्योनु दृष्टात एक कहेवाय छे ते कईक हास्ययुक्त छे खरू, परतु एमांथी उत्तम शिक्षा मळी शके तेम छे, एटले अही कही जउं

प्रत्येक काम यतना पूर्वक ज करवु ए विवेकी श्रावकनु कर्त्तव्य छे

शिक्षापाठ २८ रात्रिभोजन

अहिंसादिक पंचमहाव्रत जेवु भगवाने रात्रिभोजनत्यागव्रत कह्यु छे रात्रिमा जे चार प्रकारना आहार छे ते अभक्षरूप छे जे जातिनो आहारनो रंग होय छे ते जातिना तमस्काय नामना जीव ते आहारमा उत्पन्न थाय छे रात्रिभोजनमा ए शिवाय पण अनेक दोष रह्या छे रात्रे जमनारने रसोइने माटे अग्नि सळगाववो पडे छे, त्यारे समीपनी भींतपर रहेला निरपराधी सूक्ष्म जंतुओ नाश पामे छे इंधनने माटे आणेला काष्ठादिकमा रहेला जंतुओ रात्रिए नहीं देखावाथी नाश पामे छे, तेम ज सर्पना झेरनो, करोळियानी लाळनो अने मच्छरादिक सूक्ष्म जंतुनो पण भय रहे छे, वखते ए कुटुंबादिकने भयंकर रोगनु कारण पण थइ पडे छे

रात्रिभोजननो पुराणादिक मतमा पण सामान्य आचारने खातर त्याग कर्यो छे, छतां तेओमा परंपरानी रूढिये करीने रात्रिभोजन पेसी गयु छे पण ए निषेधक तो छे ज

शरीरनी अंदर बे प्रकारना कमळ छे ते सूर्यना अस्तथी संकोच पामी जाय छे, एथी करीने रात्रिभोजनमा सूक्ष्म जीव भक्षणरूप अहित थाय छे, जे महा रोगनु कारण छे एवो केटलेक स्थळे आयुर्वेदनो पण मत छे

शिक्षापाठ २७ यतना

जेम विवेक ए धर्मनु मूळतत्व छे, तेम यतना ए धर्मनु उपतत्त्व छे. विवेकथी धर्म तत्त्व ग्रहण कराय छे; तथा यतनाथी ते तत्त्व शुद्ध राखी शकाय छे, अने ते प्रमाणे प्रवर्त्तन करी शकाय छे. पाच समितिरूप यतना तो बहु श्रेष्ठ छे, परतु ग्रहाश्रमीथी ते सर्व भावे पाळी शकाती नथी; छता जेटला भावाशे पाळी शकाय तेटला भावाशे पण सावधानीथी पाळी शकता नथी. जिनेश्वर भगवते बोधेली स्थूल अने सूक्ष्म दया प्रत्ये ज्या बेदरकारी छे, त्या ते बहु दोषथी पाळी शकाय छे. ए यतनानी न्यूनताने लीधे छे. उतावळी अने वेगभरी चाल, पाणी गळी तेनो सखाळो राखवानी अपूर्ण विधि, काष्ठादिक इधननो वगर खखेर्ये, वगर जोये उपयोग, अनाजमा रहेला सूक्ष्म जतुओनी अपूर्ण तपास, पुज्या प्रमार्ज्या वगर रहेवा दीधेला ठाम, अस्वच्छ राखेला ओरडा, आगणामा पाणीनु ढोळवु, एठनु राखी मूकवु, पाटला वगर धखधखती थाळी नीचे मूकवी, एथी पोताने आ लोकमा अस्वच्छता, अगवड, अनारोग्यता इत्यादिक फळरूप थाय छे, अने परलोकमा दु:खदायि महापापना कारण पण थइ पडे छे, ए माटे कहेवानो बोध के चालवामा, बेसवामा, उठवामा, जमवामा अने बीजा हरेक प्रकारमा यतनानो उपयोग करवो. एथी द्रव्ये अने भावे बन्ने प्रकारे लाभ छे. चाल धीमी अने गभिर राखवी, घर स्वच्छ राखवा, पाणी विधिसहित गळाववु, काष्ठादिक इधन खखेरी वापरवा ए कइ आपणने अगवड पडतु काम नथी; तेम तेमा विशेष वखत जतो नथी. एवा नियमो दाखल करी दीधा पछी पाळवा मुश्केल नथी. एथी बिचारा असख्यात निरपराधी

परंतु ए सघळा करता आपणे केवा भाग्यशाळी के ज्यां एक पुष्पपाखडी दूभाय त्यां पाप छे ए खरु तत्त्व समज्या अने यज्ञयागादिक हिंसाथी तो केवळ विरक्त रह्या छीए। बनता प्रयत्नथी जीव बचावीए छीए, वळी चाहिने जीव हणवानी आपणी लेश इच्छा नथी अनतकाय अभक्ष्यथी बहु करी आपणे विरक्त ज छीए आ काळे ए सघळो पुण्यप्रताप सिद्धार्थ भूपालना पुत्र महावीरना कहेला परमतत्त्वबोधना योगबळथी वध्यो छे मनुष्यो रीद्धि पामे छे, सुदर स्त्री पामे छे आज्ञाकित पुत्र पामे छे, बहोळो कुटुबपरिवार पामे छे, मानप्रतिष्ठा तेम ज अधिकार पामे छे, अने ते पामवा कइ दुर्लभ नथी, परतु खरु धर्मतत्त्व के तेनी श्रद्धा के तेनो थोडो अश पण पामवो महा दुर्लभ छे ए रीद्धि इत्यादिक अविवेकथी पापनुं कारण थई अनत दु खमा लई जाय छे, परतु आ थोडी श्रद्धा-भावना पण उत्तम पदवीए पहोंचाडे छे आम दयानु सत्परिणाम छे, आपणे धर्मतत्त्वयुक्त कुळमा जन्म पाम्या छीए तो हवे जेम बने तेम विमळ दयामय वर्त्तनमा आवबु वारवार लक्षमा राखवुं के, सर्व जीवनी रक्षा करवी बीजाने पण एवो ज युक्तिप्रयुक्तिथी बोध आपवो सर्व जीवनी रक्षा करवा माटे एक बोधदायक उत्तम युक्ति बुद्धिशाळी अभयकुमारे करी हती ते आवता पाठमा हु कहु छउ, एम ज तत्त्वबोधने माटे यौक्तिक न्यायथी अनार्य जेवा धर्ममतवादीओने शिक्षा आपवानो वखत मळे तो आपणे केवा भाग्यशाळी!

सत्पुरुषो तो बे घडी दिवस रहे सारे वाळु करे, अने बे घडी दिवस चढ्या पहेला गमे ते जातनो आहार करे नहीं रात्रिभोजनने माटे विशेष विचार मुनिसमागमथी के शास्त्रथी जाणवो ए संबंधी बहु सूक्ष्म भेदो जाणवा अवश्यना छे

चारे प्रकारना आहार रात्रिने विषे त्यागवाथी महद्फळ छे आ जिन वचन छे

शिक्षापाठ २९ सर्व जीवनी रक्षा भाग १

दया जेवो एके धर्म नथी दया ए ज धर्मनु स्वरूप छे. ज्या दया नथी त्या धर्म नथी जगतितळमा एवा अनर्थकारक धर्ममतो पड्या छे के, जेओ एम कहे छे के जीवने हणता लेश पाप थतु नथी; बहु तो मनुष्यदेहनी रक्षा करो तेम ए धर्ममतवाळा झनुनी, अने मदाध छे, अने दयानु लेश स्वरूप पण जाणता नथी एओ जो पोतानु हृदयपट प्रकाशमा मूकीने विचारे तो अवश्य तेमने जणाशे के एक सूक्ष्ममा सूक्ष्म जतुने हणवामा पण महा पाप छे. जेवो मने मारो आत्मा प्रिय छे तेवो तेने पण तेनो आत्मा प्रिय छे हु मारा लेश व्यसन खातर के लाभ खातर एवा असख्याता जीवोने बेधडक हणु छउ ए मने केटलु बधु अनत दुःखनु कारण थइ पडशे? तेओमा बुद्धिनु बीज पण नहीं होवाथी तेओ आवो सात्विक विचार करी शकता नथी पापमा ने पापमा निशदिन मग्न छे वेद, अने वैष्णवादि पथोमा पण सूक्ष्म दया सबधी कइ विचार जोवामा आवतो नथी तोपण एओ केवळ दयाने नहीं समजनार करता घणा उत्तम छे स्थूळ जीवोनी रक्षामा ए ठीक समज्या छे;

अभयकुमार बोल्या "महाराज ! काले आपना सामंतो सभामां बोल्या हता के हमणा मांस सस्तुं मळे छे जेथी हुं तेओने त्यां लेवा गयो हतो, त्यारे सघळाए मने बहु द्रव्य आप्युं, परंतु काळजानुं सवा पैसाभार मांस न आप्युं त्यारे ए मांस सस्तुं के मोंघु?" बधा सामंतो सांभळी शरमथी नीचुं जोई रह्या कोइथी कंइ बोली शकायुं नहीं पछी अभयकुमारे कह्युं "आ कंइ में तमने दुःख आपवा कर्युं नथी, परंतु बोध आपवा कर्युं छे आपणने आपणा शरीरनुं मांस आपवुं पडे तो अनंतभय थाय छे, कारण आपणा देहनी आपणने प्रियता छे, तेम जे जीवनुं ए मांस हशे तेनो पण जीव तेने वहालो हशे जेम आपणे अमूल्य वस्तुओ आपीने पण पोतानो देह बचावीए छीए तेम ते बिचारा पामर प्राणीओने पण होवुं जोइए आपण समजणवाळा, बोलतां चालता प्राणी छइए ए बिचारा अवाचक अने निराधार प्राणी छे तेमने मोतरूप दुःख आपीए ए केवुं पापनुं प्रबळ कारण छे? आपणे आ वचन निरंतर लक्षमां राखवुं के सर्व प्राणीने पोतानो जीव वहालो छे, अने सर्व जीवनी रक्षा करवी ए जेवो एके धर्म नथी।" अभयकुमारना भाषणथी श्रेणिक महाराजा संतोषाया सघळा सामंतो पण बोध पाम्या तओए ते दिवसथी मांस खावानी प्रतिज्ञा करी, कारण एक तो ते अभक्ष्य छे अने कोई जीव हणाया विना ते आवतुं नथी ए मोटो अधर्म छे, माटे अभय प्रधाननुं कथन सांभळीने तेओए अभयदानमां लक्ष आप्युं

अभयदान आत्माना परम सुखनुं कारण छे

शिक्षापाठ ३० सर्व जीवनी रक्षा भाग २

मगध देशनी राजगृही नगरीनो अधिराज श्रेणिक एक वखते सभा भरीने बेठो हतो प्रसगोपात वातचितना प्रसगथी मासलुब्ध सामतो हता ते बोल्या के, हमणा मासनी विशेष सस्ताई छे आ वात अभयकुमारे सांभळी. ए उपरथी ए हिंसक सामतोने बोध देवानो तेणे निश्चय कर्यो. साजे सभा विसर्जन थई अने राजा अतःपुरमा गया त्यार पछी क्रयविक्रय माटे जेणे जेणे मासनी वात उच्चारी हती तेने तेने घेर अभयकुमार गया जेने घेर जाय त्या सत्कार कर्या पछी तेओ पूछवा लाग्या के, आपनु परिश्रम लई अमारे घेर केम पधारवु थयुं छे? अभयकुमारे कह्युः "महाराजा श्रेणिकने अकस्मात् महा रोग उत्पन्न थयो छे. वैद्य भेळा करवाथी तेणे कह्यु के, कोमळ मनुष्यना काळजानु सवा टाकभार मास होय तो आ रोग मटे तमे राजाना प्रियमान्य छो माटे तमारे त्या ए मास लेवा आव्यो छउ" प्रत्येक सामते विचार्युं के काळजानु मास हु मुवाविना शी रीते आपी शकु? एथी अभयकुमारने पूछ्युः महाराज, ए तो केम थई शके? एम कही पछी अभयकुमारने केटलुक द्रव्य पोतानी वात राजा आगळ नहीं प्रसिद्ध करवा ते प्रत्येक सामत आपता गया अने ते अभयकुमार लेता गया. एम सघळा सामतोने घेर अभयकुमार फरी आव्या. सघळा मास न आपी शक्या, अने आम तेमणे पोतानी वात ढुपाववा द्रव्य आप्यु पछी बीजे दिवसे ज्यारे सभा भेळी थई त्यारे सघळा सामतो पोताने आसने आवीने बेठा राजा पण सिंहासनपर विराज्या हता सामतो आवी आवीने गइ काल्नु कुशळ पूछवा लाग्या राजा ए वातथी विस्मीत थया अभयकुमार भणी जोयु एटले

विचार, अहंतु, ममत्व के एवी कइ उपाधि रहेती नथी प
मन बहु बहोळताने पामी नियमरूपी सडकमां चाल्युं जाय
अश्व जो लगाममां आवी जाय छे, तो पछी गमे तेवो प्रबळ
तेने धारेले रस्ते जेम लइ जवाय छे तेम मन ए नियमरूपी लगा
आववाथी पछी गमे ते शुभ राहमां लइ जवाय छे, अने
वारंवार पर्यटन कराववाथी ते एकाग्र, विचारशील अने वि
थाय छे. मननो आनंद शरीरने पण निरोगी करे छे. अभ
अनंतकाय, परस्त्रियादिकना नियम कर्याथी पण शरीर नि
रही शके छे. मादक पदार्थो मनने अवळे रस्ते दोरे छे,
प्रत्याख्यानथी मन त्यां जतुं अटके छे, एथी ते विमळ थाय छे

प्रत्याख्यान ए केवी उत्तम नियम पाळवानी प्रतिज्ञा छे, त
उपरथी तमे समज्या हशो. विशेष सद्गुरु मुखथी अने शास्
लोकनथी समजवा हुं बोध करुं छउं.

शिक्षापाठ ३२. विनयवडे तत्त्वनी सिद्धि छ

राजगृही नगरीना राज्यासनपर ज्यारे श्रेणिक राजा विराज
हता, त्यारे ते नगरीमां एक चंडाळ रहेतो हतो. एक वखत
चंडाळनी स्त्रीने गर्भ रह्यो, त्यारे तेने केरी खावानी इच्छा उ
थइ. तेणे ते लावी आपवा चंडाळने कह्युं. चंडाळे कह्युं, आ केर
वखत नथी, एटले मारो उपाय नथी. नहीं तो हुं गमे तेटले
होय त्यांथी मारी विद्याना बळवडे लावी तारी इच्छा सिद्ध क
चंडाळणीए कह्युं, राजानी महाराणीना बागमां एक अकाळे

शिक्षापाठ ३१ प्रत्याख्यान

'पच्चखाण' नामनो शब्द वारंवार तमारा सांभळवामां आव्यो छे. एनो मूळ शब्द 'प्रत्याख्यान' छे, अने ते (शब्द) अमुक वस्तु भणी चित्त न करवुं एम तत्त्वथी समजी हेतुपूर्वक नियम करवो तेने बदले वपराय छे. प्रत्याख्यान करवानो हेतु महा उत्तम अने सूक्ष्म छे. प्रत्याख्यान नहीं करवाथी गमे ते वस्तु न खाओ के न भोगवो तोपण तेथी संवरपणुं नथी, कारण के तत्त्वरूपे करीने इच्छानुं रूंधन कर्युं नथी. रात्रे आपणे भोजन न करता होइए; परंतु तेनो जो प्रत्याख्यानरूपे नियम न कर्यो होय तो ते फळ न आपे, कारण आपणी इच्छा खुल्ली रही. जेम घरनुं बारणुं उघाडुं होय अने श्वानादिक जनावर के मनुष्य चाल्युं आवे तेम इच्छाना द्वार खुल्लां होय तो तेमां कर्म प्रवेश करे छे. एटले के ए भणी आपणा विचार छूटथी जाय छे. ते कर्मबंधननुं कारण छे, अने जो प्रत्याख्यान होय तो पछी ए भणी दृष्टि करवानी इच्छा थती नथी. जेम आपणे जाणीए छीए के वांसानो मध्य भाग आपणाथी जोइ शकातो नथी, माटे ए भणी आपणे दृष्टि पण करता नथी. तेम प्रत्याख्यान करवाथी आपणे अमुक वस्तु खवाय के भोगवाय तेम नथी एटले ए भणी आपणुं लक्ष स्वाभाविक जतुं नथी, ए कर्म आववाने आडो कोट थइ पडे छे. प्रत्याख्यान कर्या पछी विस्मृति वगेरे कारणथी कोइ दोष आवी जाय तो तेना प्रायश्चित्त-निवारण पण महात्माओए कह्यां छे.

प्रत्याख्यानथी एक बीजो पण मोटो लाभ छे; ते ए के अमुक वस्तुओमां ज आपणुं लक्ष रहे छे, बाकी बधी वस्तुओनो त्याग थइ जाय छे; जे जे वस्तु त्याग करी छे ते ते संबंधी पछी विशेष

आ वात मात्र बोध लेवाने माटे छे. एक चंडाळनो पण विनय कर्या वगर श्रेणिक जेवा राजाने विद्या सिद्ध न थई, तो तेमांथी तत्त्व ए ग्रहण करवानुं छे के, सद्विद्याने साध्य करवा विनय करवो. आत्मविद्या पामवा निर्ग्रंथगुरुनो जो विनय करीए तो केवुं मंगळदायक थाय!

विनय ए उत्तम वशीकरण छे. उत्तराध्ययनमां भगवाने विनयने धर्मनुं मूळ कही वर्णव्यो छे. गुरुनो, मुनिनो, विद्वाननो, मातापितानो अने पोताथी वडानो विनय करवो ए आपणी उत्तमतानुं कारण छे.

शिक्षापाठ ३३ सुदर्शन शेठ

प्राचीन काळमां शुद्ध एकपत्नीव्रतने पाळनारा असंख्य पुरुषो थई गया छे, एमांथी संकट सही नामांकित थयेलो सुदर्शन नामनो एक सत्पुरुष पण छे. ए धनाढ्य सुंदर मुखमुद्रावाळो कांतिमान अने मध्य वयमां हतो. जे नगरमां ते रहेतो हतो, ते नगरना राज्यदरबार आगळथी कंई काम प्रसंगने लीधे तेने नीकळवुं पड्युं. ते वेळा राजानी अभया नामनी राणी पोताना आवासना गोखमां बेठी हती. त्यांथी सुदर्शन भणी तेनी दृष्टि गई. तेनुं उत्तम रूप अने काया जोईने तेनुं मन ललचायुं. एक अनुचरी मोकलीने कपटभावथी निर्मळ कारण बतावीने सुदर्शनने उपर बोलाव्यो. केटलाक प्रकारनी वातचीत कर्या पछी अभयाए सुदर्शनने भोग भोगववा संबंधीनुं आमंत्रण कर्युं. सुदर्शने केटलोक उपदेश आप्यो तोपण तेनुं मन शांत थयुं नहीं. छेवटे कंटाळीने सुदर्शने युक्तिथी कह्युं, बहेन, हुं

देनार आंबो छे. ते पर अत्यारे केरीओ लची रही हशे, माटे त्यां जइने ए केरी लावो पोतानी स्त्रीनी इच्छा पुरी पाडवा चडाळ ते बागमा गयो गुप्त रीते आंबा समीप जई मंत्र भणीने तेने नमाव्यो; अने केरी लीधी बीजा मंत्रवडे करीने तेने हतो एम करी दीधो पछी ते घेर आव्यो अने तेनी स्त्रीनी इच्छा माटे निरंतर ते चडाळ विद्यावडे त्याथी केरी लाववा लाग्यो एक दिवसे फरतां फरतां माळीनी दृष्टि आंबा भणी गई केरीओनी चोरी थयेली जोईने तेणे जइने श्रेणिकराजा आगळ नम्रता पूर्वक कह्यु. श्रेणिकनी आज्ञाथी अभयकुमार नामना बुद्धिशाळी प्रधाने युक्तिवडे ते चडाळने शोधी काढ्यो तेने पोता आगळ तेडावी पृछ्यु, एटला बधा माणसो बागमा रहे छे छता तु केवी रीते चढीने ए केरी लई गयो के ए वात कळवामा पण न आवी? चडाळे कह्यु, आप मारो अपराध क्षमा करजो हु साचु बोली जउ छउ के मारी पासे एक विद्या छे; तेना योगथी हु ए केरीओ लइ शक्यो अभयकुमारे कह्यु, माराथी क्षमा न थइ शके, परन्तु महाराजा श्रेणिकने ए विद्या तु आप तो तेओने एवी विद्या लेवानो अभिलाष होवाथी तारा उपकारना बदलामा हु अपराध क्षमा करावी शकु. चडाळे एम करवानी हा कही पछी अभयकुमारे चडाळने श्रेणिकराजा ज्या सिंहासनपर बेठा हता त्या लावीने सामो उभो राख्यो; अने सघळी वात राजाने कही बतावी ए वातनी राजाए हा कही. चडाळे पछी सामा उभा रही थरथरते पगे श्रेणिकने ते विद्यानो बोध आपवा माड्यो; पण ते बोध लाग्यो नहीं. झडपथी उभा थइ अभयकुमार बोल्या: महाराज! आपने जो ए विद्या अवश्य शीखवी होय तो सामा आवी उभा रहो; अने एने सिंहासन आपो राजाए विद्या लेवा खातर एम कर्यु तो तत्काळ विद्या सिद्ध थइ.

गम नेम हो, पण सृष्टिना दिव्य भंडारमां अजवाळुं छे सत्यनो प्रभाव ढांक्यो रहेतो नथी सुदर्शनने शूळीए बेसार्यो, के शूळी फीटीने तेनुं झळझळतुं सोनानुं सिंहासन थयुं, अने देव दुंदुभीना नाद थया, सर्वत्र आनंद व्यापी गयो सुदर्शननुं सत्यशील विश्वमंडळमां झळकी उठ्युं सत्यशीलनो सदा जय छे.

शीयळ अने सुदर्शननी उत्तम दृढता ए बन्ने आत्माने पवित्र श्रेणिए चढावे छे।

शिक्षापाठ ३४ ब्रह्मचर्यविषे सुभाषित

दोहरा

निरखीने नवयौवना, लेश न विषयनिदान,
गणे काष्ठनी पूतळी, ते भगवानसमान. १

आ सघळा संसारनी, रमणी नायकरूप,
ए त्यागी, त्याग्युं बधुं, केवळ शोकस्वरूप २

एक विषयने जीतता, जीत्यो सौ संसार,
नृपति जीतता जीतिये, दळ, पुर, ने अधिकार ३

विषयरूप अंकुरथी, टळे ज्ञान ने ध्यान,
लेश मदीरापानथी, छाके ज्यम अज्ञान. ४

जे नववाड विशुद्धथी, धरे शियळ सुखदाइ,
भव तेनो लव पछी रहे, तत्त्ववचन ए भाइ ५

पुरुषत्वमा नथी! तोपण राणीए अनेक प्रकारना हावभाव कर्या ए सघळी कामचेष्टाथी सुदर्शन चळ्यो नहो, एथी कटाळी जइने राणीए तेने जतो कर्यो

एक वार ए नगरमा उजाणी हती; तेथी नगर बहार नगरजनो आनदथी आम तेम भमता हता धामधुम मची रही हती. सुदर्शन शेठना छ देव कुमार जेवा पुत्रो पण त्या आव्या हता. अभया राणी कपिला नामनी दासी साथे ठाठमाठथी त्या आवी हती सुदर्शनना देवपूतळा जेवा छ पुत्रो तेना जोवामा आव्या, कपिलाने तेणे पूछ्युः आवा रम्य पुत्रो कोना छे? कपिलाए सुदर्शन शेठनु नाम आप्यु नाम साभळीने राणीनी छातीमा कटार भोकाइ; तेने कारी घा वाग्यो सघळी धामधुम वीती गया पछी मायाकथन गोठवीने अभयाए अने तेनी दासीए मळी राजाने कह्युः "तमे मानता हशो के, मारा राज्यमा न्याय अने नीति वर्ते छे; दुर्जनोथी मारी प्रजा दुःखी नथी; परतु ते सघळु मिथ्या छे अतःपुरमा पण दुर्जनो प्रवेश करे त्या सुधी हजु अंधेर छे! तो पछी बीजा स्थळ माटे पूछवु पण शु? तमारा नगरना सुदर्शन नामना शेठे मारी कने भोगनु आमत्रण कर्यु नही कहेवायोग्य कथनो मारे साभळवा पड्या, पण मैं तेनो तिरस्कार कर्यो आथी विशेष अंधार कयु कहेवाय?" घणा राजा मुळे कानना काचा होय छे ए वात जाणे बहु मान्य छे, तेमा वळी स्त्रीना मायाविं मधुरा वचन शु असर न करे? ताता तेलमा टाढा जळ जेवा वचनथी राजा क्रोधायमान थया सुदर्शनने शूळीए चढावी देवानी तत्काळ तेणे आज्ञा करी दीधी, अने ते प्रमाणे सघळु थइ पण गयु मात्र शूळीए सुदर्शन बेसे एटली वार हती

गुणतां जेटला थाय एटला गुणनो भरेलो मंत्र एम नवकार मंत्र तरीके एनो अर्थ थइ शके छे पंच परमेष्टि एटले आ सकळ जगतमां पांच वस्तुओ परमोत्कृष्ट छे ते ते कयि कयि ?–तो कही बतावो के अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु, एने नमस्कार करवानो जे मंत्र ते परमेष्टि मंत्र, अने पांच परमेष्टिने साथे नमस्कार होवाथी पंचपरमेष्टि मंत्र एवो शब्द थयो. आ मंत्र अनादि सिद्ध मनाय छे, कारण पंचपरमेष्टि अनादि सिद्ध छ एटले ए पांचे पात्रो आद्यरूप नथी, प्रवाहथी अनादि छे, अने तेना जपनार पण अनादि सिद्ध छे एथी ए जाप पण अनादि सिद्ध ठरे छे

प्र०–ए पंचपरमेष्टि मंत्र परिपूर्ण जाणवाथी मनुष्य उत्तम गतिने पामे छे एम सत्पुरुषो कहे छे ए माटे तमारुं शुं मत छे ?

उ०–ए कहेवुं न्यायपूर्वक छे, एम हुं मानुं छउं

प्र०–एने कया कारणथी न्यायपूर्वक कही शकाय ?

उ०–हा ए तमने हुं समजावुं; मननी निग्रहता अर्थे एक तो सर्वोत्तम जगद्भूषणना सत्य गुणनुं ए चिंतवन छे तत्त्वथी जोतां वळी अर्हतस्वरूप, सिद्धस्वरूप, आचार्यस्वरूप, उपाध्याय स्वरूप अने साधुस्वरूप एनो विवेकथी विचार करवानुं पण ए सूचवन छे कारण के तेओ पूजवा योग्य शाथी छे? एम विचारतां एओना स्वरूप, गुण इत्यादि माटे विचार करवानी सत्पुरुषने तो खरी अगत्य छे हवे कहो के ए मंत्र केटलो कल्याण कारक छे ?

प्रश्नकार–सत्पुरुषो नमस्कार मंत्रने मोक्षनुं कारण कहे छे प आ व्याख्यानथी हुं पण मान्य राखुं छउं

सुदर शीयळसुरतरू, मन वाणी ने देह;
जे नरनारी सेवशे, अनुपम फळ ले तेह ६

पात्र विना वस्तु न रहे, पात्रे आत्मिक ज्ञान;
पात्र थवा सेवो सदा, ब्रह्मचर्य मतिमान! ७

शिक्षापाठ ३५. नमस्कारमंत्र

नमो अरिहताण;
नमो सिद्धाण,
नमो आयरियाण;
नमो उवज्झायाण;
नमो लोए सव्वसाहुण

आ पवित्र वाक्योने निर्ग्रंथप्रवचनमा नवकार (नमस्कार) मत्र के पचपरमेष्ठिमंत्र कहे छे

अर्हत भगवतना बार गुण, सिद्ध भगवतना आठ गुण, आचार्यना छत्रीश गुण, उपाध्यायना पचवीश गुण, अने साधुना सत्तावीश गुण मळीने एकसो आठ गुण थया. अगुठा विना बाकीनी चार आंगळीओनां बार टेरवा थाय छे, अने एथी ए गुणोनुं चितवन करवानी योजना होवाथी तारने नवे गुणता १०८ थाय छे एटले नवकार एम कहेवामा साथे एवुं सूचवन रह्यु जणाय छे के हे भव्य! तारां ए आंगळीनां टेरवाथी (नवकार) मत्र नववार गण —कार ,- ः१९ एम पण थाय छे तारने नवे

पुत्र—नहीं पिताजी—मारा समजवामां नथी माटे आप ते कारण कहो

पिता—पुत्र! प्रत्यक्ष छे के मन ए एक बहु चंचळ चीज छे, जेने एकाग्र करवुं बहु बहु विकट छे, ते ज्यां सुधी एकाग्र थतुं नथी त्यां सुधी आत्ममलिनता जती नथी, पापना विचारो घटता नथी ए एकाग्रता माटे बार प्रतिज्ञादिक अनेक महान साधनो भगवाने कह्यां छे मननी एकाग्रताथी महा योगनी श्रेणिये चडवा माटे अने तेने केटलाक प्रकारथी निर्मळ करवा माटे सत्पुरुषोए आ एक साधनरूप कोष्टकावली करी छे पंच परमेष्टि मंत्रना पांच अंक एमां पहेला मूक्या छे, अने पछी लोमविलोमस्वरूपमा लक्षबंध एना ए पांच अंक मूकीने भिन्न भिन्न प्रकारे कोष्टको कर्यां छे एम करवानुं कारण पण मननी एकाग्रता थइने निर्जरा करी शकाय, ए छे

पुत्र—पिताजी! अनुक्रमे लेवाथी एम शा माटे न थइ शके?

पिता—लोमविलोम होय तो ते गोठवता जवुं पडे अने नाम संभारतां जवुं पडे पांचनो अंक मूक्या पछी बेनो आकडो आवे के 'नमो लोए सव्वसाहुणं' पछी—'नमो अरिहंताणं' ए वाक्य मूकीने 'नमो सिद्धाणं' ए वाक्य संभारवुं पडे एम पुन पुन लक्षनी दृढता राखतां मन एकाग्रताए पहोंचे छे अनुक्रमबंध होय तो तेम थइ शकतुं नथी, कारण के विचार करवो पडतो नथी ए सूक्ष्म वखतमां मन परमेष्टिमंत्रमांथी नीकळीने संसारतंत्रनी खटपटमां जइ पडे छे, अने वखते धर्म करतां धाड पण करी नाखे छे, जेथी सत्पुरुषोए अनुपूर्विनी योजना करी छे, ते बहु सुंदर छे अने आत्मशांतिने आपनारी छे

अर्हंत भगवत, सिद्ध भगवत, आचार्य, उपाध्याय अने साधु एओनो अकेको प्रथम अक्षर लेता "असिआउसा" एवु महद् वाक्य नीकळे छे जेनु ॐ एवु योगबिंदुनु स्वरूप थाय छे; माटे आपणे ए मंत्रनो अवश्य करीने विमळ भावथी जाप करवो

शिक्षापाठ ३६ अनुपूर्वि

नर्कानुपूर्वी, तिर्यंचानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, अने देवानुपूर्वी ए अनुपूर्वीओ विषेनो आ पाठ नथी, परंतु "अनुपूर्वी" ए नामना एक अवधानी लघु पुस्तकनां मंत्र स्मरण माटे छे.

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

पिता—आवी जातनां कोष्टकथी भरेलु एक नानु पुस्तक छे ते तें जोयु छे?

पुत्र—हा पिताजी

पिता—एमां आडा अवळा अंक मूक्या छे, तेनु कांइ पण कारण तारा समजवामां छे?

२ यशोवाछादोष–पोते सामायिक करे छे एम बीजा मनुष्यो जाणे तो प्रशसा करे एवी इच्छाए सामायिक करवु ते यशोवाछादोष.

३ धनवाछादोष—धननी इच्छाए सामायिक करवु ते धनवाछादोष

४ गर्वदोष–मने लोको धर्मी कहे छे अने हु सामायिक पण तेवुज करु छउ ? एवो अध्यवसाय ते गर्वदोष

५ भयदोष–हु श्रावककुलमा जन्म्यो छउ, मने लोको मोटा तरीके मान द छे, अने जो सामायिक नही करं तो कहेशे के आटली क्रिया पण नथी करतो, एम निंदाना भयथी सामायिक करे ते भयदोष

६ निदानदोष—सामायिक करीने तेना फळथी धन, स्त्री, पुत्रादिक मळवानु इच्छे ते निदानदोष

७ सशयदोष–सामायिकनु फळ हशे के नही होय ? एवो विकल्प करे ते सशयदोष

८ कपायदोष–सामायिक क्रोधादिकथी करवा बेसी जाय, किंवा पछी क्रोध, मान, माया, लोभमा वृत्ति धरे ते कपायदोष

९ अविनयदोष–विनय वगर सामायिक करे ते अविनयदोष

१० अबहुमानदोष–भक्तिभाव अने उमग पूर्वक सामायिक न करे ते अबहुमानदोष

शिक्षापाठ ३७ सामायिक विचार भाग १

आत्मशक्तिनो प्रकाश करनार, सम्यग्ज्ञानदर्शननो उदय करनार, शुद्ध समाधिभावमां प्रवेश करावनार, निर्जरानो अमूल्य लाभ आपनार, रागद्वेषथी मध्यस्थ बुद्धि करनार एवु सामायिक नामनुं शिक्षाव्रत छे. सामायिक शब्दनी व्युत्पत्ति सम+आय+इक ए शब्दोथी थाय छे. 'सम' एटले रागद्वेषरहित मध्यस्थ परिणाम, 'आय' एटले ते समभावनाथी उत्पन्न थतो ज्ञानदर्शन चारित्ररूप मोक्ष मार्गनो लाभ, अने 'इक' कहेता भाव एम अर्थ थाय छे एटले जे वडे करीने मोक्षना मार्गनो लाभदायक भाव उपजे ते सामायिक आर्त्त, अने रौद्र ए बे प्रकारना ध्याननो त्याग करीने मन, वचन, कायाना पापभावने रोकीने विवेकी मनुष्यो सामायिक करे छे

मनना पुद्गळ तरगी छे सामायिकमा ज्यारे विशुद्ध परिणामथी रहेवु कह्यु छे त्यारे पण ए मन आकाश पातालना घाट घड्या करे छे. तेमज भूल, विस्मृति, उन्माद इत्यादिथी वचन कायामां पण दूषण आववाथी सामायिकमा दोष लागे छे. मन, वचन अने कायाना थइने बत्रीस दोष उत्पन्न थाय छे. दश मनना, दश वचनना अने बार कायाना एम बत्रीश दोष जाणवा अवश्यना छे जे जाणवाथी मन सावधान रहे छे

मनना दश दोष कहु छउ

१ अविवेकदोष–सामायिकनु स्वरुप नही जाणवाथी मनमा एवो विचार करे के आथी शु फळ थवानु हतु ? आथी ते कोण तर्युं हशे ? एवा विकल्पनु नाम अविवेकदोष

ए वचनना दश दोष कह्या, हवे कायाना बार दोष कहुं छउं

१ अयोग्यआसनदोष–सामायिकमां पगपर पग चढावी बेसे, ते श्रीगुरु आदि प्रत्ये अविनयरूपआसन ते पहेलो अयोग्यआसनदोष

२ चलासनदोष–डगडगते आसने बेसी सामायिक करे, अथवा वारवार ज्यांथी उठवु पडे तेवे आसने बेसे ते चलासनदोष.

३ चलदृष्टिदोष–कायोत्सर्गमां आंखो चचळ ए चलदृष्टिदोष

४ सावद्यक्रियादोष–सामायिकमां कइ पाप क्रिया के तेनी सज्ञा करे ते सावद्यक्रियादोष

५ आलंबनदोष–भींतादिकने ओठींगण दइ बेसे एथी त्यां बेठेला जंतु आदिकनो नाश थाय के तेने पीडा थाय, तेमज पोताने प्रमादनी प्रवृत्ति थाय, ते आलंबनदोष

६ आकुंचनप्रसारणदोष—हाथ पग संकोचे, लांबा करे ए आदि ते आकुंचनप्रसारणदोष

७ आलसदोष—अंग मरडे, टचाका वगाडे ए आदि ते आलसदोष

८ मोटनदोष—आंगळी वगेरे वांकी करे, टचाका वगाडे ते मोटनदोष

९ मलदोष–घरडा घरड करी सामायिकमां चल करी मेल वगेरे ते मलदोष

१० विमासणदोष—गळामां हाथ नाखी बेसे इत्यादि ते विमासणदोष

शिक्षापाठ ३८ सामायिक विचार भाग २

मनना दश दोष कह्या हवे वचनना दश दोष कहु छउ

१ कुबोलदोष–सामायिकमां कुवचन बोलवुं ते कुबोल्दोष

२ सहसात्कारदोष—सामायिकमा साहसथी अविचारपूर्वक वाक्य बोलवु ते सहसात्कारदोष.

३ असदारोपणदोष—बीजाने खोटो बोध आपे, ते असदारोपणदोष.

४ निरपेक्षदोष–सामायिकमा शास्त्रनी दरकार विना वाक्य बोले ते निरपेक्षदोष

५ सक्षेपदोष–सूत्रनापाठ इत्यादिक टुकामा बोली नाखे; अने यथार्थ भाखे नहीं ते सक्षेपदोष

६ क्लेशदोष–कोइथी ककाश करे ते क्लेशदोष.

७ विकथादोष—चार प्रकारनी विकथा मांडी बेसे ते विकथादोष.

८ हास्यदोष—सामायिकमा कोइनी हांसी मश्करी करे ते हास्यदोष

९ अशुद्धदोष–सामायिकमा सूत्रपाठ न्यूनाधिक अने अशुद्ध बोले ते अशुद्धदोष

१० मुणमुणदोष–गडबडगोटाथी सामायिकमा सूत्रपाठ बोले जे पोते पण पूरु माड समजी शके ते मुणमुणदोष.

सार्थक न थयु ने ने घडीना विशुद्ध सामायिकथी थाय छे लक्षपूर्वक सामायिक थवा माटे तेमा प्रवेश कर्या पछी चार लोगस्सथी वधारे लोगस्सनो कायोत्सर्ग करी चित्तनी कइक स्वस्थता आणवी, पछी सूत्रपाठ के उत्तम ग्रथनु मनन करवु, वैराग्यना उत्तम काव्यो बोलवा, पाछळनु अ ययन करेलु स्मरण करी जवु, नूतन अभ्यास थाय तो करवो कोइने शास्त्राधारथी बोध आपवो, एम सामायिकी काळ व्यतीत करवो मुनिराजनो जो समागम होय तो आगमवाणी सांभळवी अने ते मनन करवी, तेम न होय अने शास्त्र परिचय न होय तो विचक्षण अभ्यासी पासेथी वैराग्यबोधक कथन श्रवण करवु, किंवा कइ अभ्यास करवो ए सघळी योगवाइ न होय तो केटलोक भाग लक्षपूर्वक कायोत्सर्गमा रोकवो, अने केटलोक भाग महापुरुषोना चरित्रकथामा उपयोगपूर्वक रोकवो, परतु जेम बने तेम विवेकथी अने उत्साहथी सामायिकीकाळ व्यतीत करवो कइ साहित्य न होय तो पच परमेष्ठिमंत्रनो जाप उत्साहपूर्वक करवो पण व्यर्थ काळ काढी नाखवो नही धीरजथी, शातिथी अने यतनाथी सामायिक करवु जेम बने तेम सामायिकमां शास्त्रपरिचय वधारवो

साठघडीना अहोरात्रिमाथी बेघडी अवश्य बचावी सामायिक तो सद्भावथी करवु

शिक्षापाठ ४० प्रतिक्रमणविचार

प्रतिक्रमण एटले पाछु फरवु–फरीथी जोई जवु एम एनो अर्थ थई शके छे भावनी अपेक्षाए जे दिवसे जे वखते प्रतिक्रमण करवानु थाय, ते वखतनी अगाउ अथवा ते दिवसे जे जे दोष

११ निद्रादोष—सामायिकमा उंघ आवे ते निद्रादोष

१२ वस्त्रसकोचन–सामायिकमा टाढ प्रमुखनी भीतिथी वस्त्रथी शरीर सकोचे ते वस्त्रसकोचनदोष

ए बत्रिश दूषणरहित सामायिक करवु पाच अतिचार टाळवा.

शिक्षापाठ ३९ सामायिक विचार भाग ३

एकाग्रता अने सावधानी विना ए बत्रीश दोषमाना अमुक दोष पण आवी जाय छे विज्ञानवेत्ताओए सामायिकनु जघन्य प्रमाण बे घडीनु बाध्यु छे ए व्रत सावधानी पूर्वक करवाथी परमशाति आपे छे. केटलाकनो ए बे घडीनो काळ, ज्यारे जतो नथी त्यारे तेओ बहु कटाळे छे सामायिकमा नवराश लइने बेसवाथी काळ जाय पण क्याथी? आधुनिक काळमा सावधानीथी सामायिक करनारा बहुज थोडा छे प्रतिक्रमण सामायिकनी साथे करवानु होय छे त्यारे तो वखत जवो सुगम पडे छे जो के एवा पामरो प्रतिक्रमण लक्ष पूर्वक करी शकता नथी तोपण केवळ नवराश करता एमा जरुर कइक फेर पडे छे सामायिक पण पुरु जेओने आवडतु नथी तेओ बिचारा सामायिकमा पछी बहु मुझाय छे केटलाक भारे कर्मियो ए अवसरमा व्यवहारना प्रपचो पण घडी राखे छे. आथी सामायिक बहु दोषित थाय छे

विधिपूर्वक सामायिक न थाय ए बहु खेदकारक अने कर्मनी बाहुल्यता छे. [illegible] घडीना अहोरात्र व्यर्थ चाल्या जाय, असख्यात [illegible] थी अनता कालचक्र व्यतीत करता

केटलाक सामान्य बुद्धिमानो एम कहे छे के दिवस अने रात्रिनुं सवारे प्रायश्चितरूप प्रतिक्रमण कर्युं होय तो कइ खोटुं नथी, परंतु ए कहेवुं प्रमाणिक नथी रात्रिये अकस्मात् अमुक कारण आवी पडे के काळधर्म प्राप्त थाय तो दिवस सबंधी पण रही जाय

प्रतिक्रमण सूत्रनी योजना बहु सुंदर छे एना मूळतत्त्व बहु उत्तम छे जेम बने तेम प्रतिक्रमण धीरजथी, समजाय एवी भाषाथी, शांतिथी, मननी एकाग्रताथी अने यतनापूर्वक करवु.

शिक्षापाठ ४१ भीखारीनो खेद भाग १

एक पामर भीखारी जगल्मा भटकतो हतो त्या तेने भूख लागी एटले ते बिचारो लडथडीआ खातो खातो एक नगरमा एक सामान्य मनुष्यने घर पहोंच्यो त्या जइने तेणे अनेक प्रकारनी आजीजी करी, तेना कालावालाथी करुणा पामीने ते गृहस्थनी स्त्रीए तेने घरमाथी जमता वधेलु मिष्टान्न आणि आप्युं भोजन मळवाथी भीखारी बहु आनद पामतो पामतो नगरनी बहार आव्यो, आवीने एक झाड तळे बेठो, त्या जरा स्वच्छ करीने एक बाजुए अति जूनो थयेलो पोतानो जळनो घडो मूक्यो एक बाजुए पोतानी फाटीतुटी मलिन गोदडी मूकी अने एक बाजुए पोते ते भोजन लइने बेठो राजी राजी थता थणे ते भोजन खाइने पुरु कर्यु पछी ओशिके एक पथ्थर मूकीने ते सुतो भोजनना मदथी जरावारमां तेनी आंखो मिंचाइ गइ निद्रावश थयो एटले तेने एक स्वप्न आव्युं पोते जाणे महा राजरीद्धिने पाम्यो छे, सुंदर वस्त्राभूषण धारण कर्या छे; देश आखामां पोताना विजयनो डको वागी गयो

थया होय ते एक पछी एक अतरात्माथी जोई जइ अने तेनो पश्चाताप करी ते दोषथी पाछु वळवु तेनु नाम प्रतिक्रमण कहेवाय

उत्तम मुनियो अने भाविक श्रावको सध्याकाळे अने रात्रिना पाछळना भागमा दिवसे अने रात्रे एम अनुक्रमे थयेला दोषनो पश्चाताप करे छे के तेनी क्षमापना इच्छे छे एनु नाम अही आगळ प्रतिक्रमण छे ए प्रतिक्रमण आपणे पण अवश्य करवु कारण के आ आत्मा मन, वचन अने कायाना योगथी अनेक प्रकारना कर्म बाधे छे प्रतिक्रमण सूत्रमा एनु दोहन करेलु छे, जेथी दिवस रात्रिना थयेला पापनो पश्चाताप ते वडे थई शके छे. शुद्धभाव वडे करी पश्चाताप करवाथी लेश पाप थतां परलोकभय अने अनुकपा छूटे छे; आत्मा कोमळ थाय छे त्यागवा योग्य वस्तुनो विवेक आवतो जाय छे भगवत्साक्षीए अज्ञान आदि जे जे दोष विस्मरण थया होय तेनो पश्चाताप पण थई शके छे आम ए निर्जरा करवानु उत्तम साधन छे

एनु आवश्यक एवु पण नाम छे. आवश्यक एटले अवश्य करीने करवा योग्य; ए सत्य छे ते वडे आत्मानी मलीनता खसे छे, माटे अवश्य करवा योग्य छे.

सायकाळे जे प्रतिक्रमण करवामा आवे छे तेनु नाम 'देवसीयपडिक्कमण' एटले दिवस सबधी पापनो पश्चाताप; अने रात्रिना पाछला भागमा प्रतिक्रमण करवामा आवे छे ते 'राइयपडिक्कमण' कहेवाय छे 'देवसीय' अने 'राइय' ए प्राकृत भाषाना शब्दो छे. पखवाडीए करवानु प्रतिक्रमण ते पाक्षिक अने सवत्सरे करवानु ते सावत्सरिक (छमछरी) कहेवाय छे सत्पुरुषोए योजनाथी बाधेलो ए सुदर नियम छे

भावथी कायोत्सर्गमां छे, त्यां आवी पहोन्च्यो कोयळ गजसुकुमारना माथापर चीकणी माटीनी वाड करी, अने अंदर धखधखता अंगारा भर्या, इंधन पूर्युं एटले महा ताप थयो एथी गजसुकुमारनो कोमळदेह बळवा मंड्यो एटले ते सोमल जतो रह्यो ते वखतना गजसुकुमारना असह्य दुःखनुं वर्णन केम थई शके? त्यारे पण तेओ समभाव परिणाममां रह्या किंचित् क्रोध के द्वेष एना हृदयमां जन्म पाम्यो नहीं पोताना आत्माने स्थितिस्थापक करीने बोध दीधो के जो! तुं एनी पुत्रीने परण्यो होत तो ए कन्यादानमां तने पाघडी आपत ए पाघडी थोडा वखतमां फाटी जाय तेवी अने परिणामे दुःखदायक थात. आ एनो बहु उपकार थयो के ए पाघडी बदल एणे मोक्षनी पाघडी बंधावी एवा विशुद्ध परिणामथी अडग रही समभावथी असह्य वेदना सहीने तेओ सर्वज्ञ सर्वदर्शी थई अनंत जीवन सुखने पाम्या केवी अनुपम क्षमा अने केवुं तेनुं सुन्दर परिणाम! तत्त्वज्ञानीओनां वचन छे के, आत्मा मात्र स्वसद्भावमां आववो जोइए, अने ते आव्यो तो मोक्ष हथेळीमां छे गजसुकुमारनी नामांकित क्षमा केवो शुद्ध बोध करे छे!

शिक्षापाठ ४४ राग

श्रमण भगवान् महावीरना अग्रेसर गणधर गौतमनुं नाम तमें घेहुवार सांभळ्युं छे. गौतमस्वामीना बोधेला केटलाक शिष्यो, केवळज्ञान पाम्या छतां गौतम पोते केवळज्ञान पाम्या नहोता. कारण के भगवान महावीरना अंगोपांग, वर्ण, वाणी, रूप इत्यादिपर हजु गौतमने मोह हतो निर्ग्रंथ प्रवचननो निष्पक्षपाती

छे; समीपमा तेनी आज्ञा अवलंबन करवा अनुचरो उभा थइ रह्या छे, आजुबाजु छडीदारो खमा खमा पोकारे छे, एक रमणीय महेलमा सुंदर पलंगपर तेणे शयन कर्युं छे, देवांगना जेवी स्त्रीओ तेना पग चांपे छे; पखाथी एक बाजुएथी पखानो मंद मंद पवन ढोळाय छे, एवा स्वप्नमा तेनो आत्मा चडी गयो ते स्वप्नना भोग लेता तेना रोम उल्लसी गया एवामा मेघ महाराजा चडी आव्या; वीजळीना झबकारा थवा लाग्या; सूर्य वादळाथी ढकाइ गयो; सर्वत्र अंधकार पथराइ गयो, मुशल्धार वर्षाद थशे एवु जणायु अने एटलामां गाजवीजथी एक प्रबळ कडाको थयो कडाकाना अवाजथी भय पामीने ते पामर भीखारी जागी गयो



शिक्षापाठ ४२ भीखारीनो खेद भाग २

जुए छे तो जे स्थळे पाणीनो खोखरो घडो पड्यो हतो ते स्थळे ते घडो पड्यो छे, ज्या फाटी तुटी गोदडी पडी हती त्याज ते पडी छे पोते जेवा मलिन अने फाटेला कपडा धारण कर्या हता तेवा ने तेवा ते वस्त्रो शरीर उपर छे नथी तल्भार वध्युं के नथी जवभार घट्यु. नथी ते देश के नथी ते नगरी, नथी ते महेल के नथी ते पलग, नथी ते चामरछत्र धरनारा के नथी ते छडीदारो; नथी ते स्त्रीयो के नथी ते वस्त्रालंकारो; नथी ते पखा के नथी ते पवन, नथी ते अनुचरो के नथी ते आज्ञा; नथी ते सुख विलास के नथी ते मदोन्मत्तता, भाइ तो पोते जेवा हता तेवाने तेवा देखाया. एथी ते देखाव जोइने ते खेद पाम्यो. स्वप्नमा में मिथ्या आडंबर दीठो तेथी आनंद मान्यो एमानुं तो अहीं कशुंए नथी;

शिक्षापाठ ४५ सामान्य मनोरथ

सवैया

मोहिनिभाव विचार अधीन थई,
ना निरखुं नयने परनारी,
पत्थरतुल्य गणुं परवैभव,
निर्मळ तात्त्विक लोभ समारी।

द्वादश व्रत अने दीनता धरि,
सात्त्विक थाउं स्वरूप विचारी,
ए मुज नेम सदा शुभ क्षेमक,
नित्य अखंड रहो भवहारी १

ते त्रिशलातनये मन चिंतवि,
ज्ञान, विवेक, विचार वधारुं,
नित्य विशोध करी नव तत्त्वनो,
उत्तम बोध अनेक उच्चारुं

संशयबीज उगे नहि अंदर,
जे जिननां कथनो अवधारुं
राज्य, सदा मुज एज मनोरथ,
धार, थशे अपवर्ग, उतारुं २

न्याय एवो छे के, गमे ते वस्तुपरनो राग दुःखदायक छे. राग ए मोह अने मोह ए संसार ज छे. गौतमना हृदयथी ए राग ज्यां सुधी खस्यो नहीं त्यां सुधी तेओ केवळज्ञान पाम्या नहीं श्रमण भगवान ज्ञातपुत्र ज्यारे अनुपमेय सिद्धिने पाम्या, त्यारे गौतम नगरमांथी आवता हता भगवानना निर्वाणसमाचार सांभळी तेओ खेद पाम्या. विरहथी तेओ अनुराग वचनथी बोल्याः "हे महावीर! तमे मने साथे तो न राख्यो परंतु संभार्योए नहीं मारी प्रीति सामी तमे दृष्टि पण करी नहीं! आम तमने छाजतुं नहोतुं. एवा विकल्पो थतां थतां तेनुं लक्ष फर्युं, ने ते निरागश्रेणिए चड्याः हुं बहु मूर्खता करुं छउं. ए वितराग, निर्विकारी अने निरागी ते मारामां केम मोह राखे? एनी शत्रु अने मित्रपर केवळ समान दृष्टि हती! हुं ए निरागीनो मिथ्या मोह राखुं छउं! मोह संसारनुं प्रबळ कारण छे," एम विचारतां विचारतां तेओ शोक तजीने निरागी थया एटले अनंतज्ञान प्रकाशित थयुं; अने प्रांते निर्वाण पधार्या

गौतममुनिनो राग आपणने बहु सूक्ष्म बोध आपे छे भगवानपरनो मोह गौतम जेवा गणधरने दुःखदायक थयो, तो पछी संसारनो, ते वळी पामर आत्माओनो मोह केवुं अनंत दुःख आपतो हशे! संसाररूपी गाडीने राग अने द्वेष ए बे रूपी बळद छे ए न होय तो संसारनुं अटकन छे. ज्यां राग नथी त्यां द्वेष नथी; आ मान्य सिद्धांत छे राग तीव्रकर्मबंधननुं कारण छे, एना क्षयथी आत्मसिद्धि छे.

सा जणाय तो धारेली सिद्धि थाय खरी" एक बे दिवस रोकाइ सज्ज थइ अस्तु कही कपिलजी पंथे पड्या

अवा बीतता कपिल श्रावस्तिए शास्त्रीजीने घेर आवी पहोंच्या प्रणाम करीने पोतानो इतिहास कही बताव्यो शास्त्रीजीए मित्रपुत्रने विद्यादान देवाने माटे बहु आनंद देखाड्यो, पण कपिल आगळ कइ पुंजी नहोती के ते तेमांथी खाय, अने अभ्यास करी शके, एथी करीने तेने नगरमा याचवा जवु पडतु हतु याचता याचता बपोर थइ जता हता, पछी रसोइ करे, अने जमे सां साजनो थोडो भाग रहेतो हतो, एटले कइ अभ्यास करी शकतो नहोतो पंडिते तेनु कारण पूछ्यु सारे कपिले ते कही बताव्यु पंडित तेने एक गृहस्थ पासे तेडी गया ते गृहस्थे कपिलनी अनुकंपा खातर एने हमेशा भोजन मळे एवी गोठवण एक विधवा ब्राह्मणीने सां करी दीधी जेथी कपिलने ऐ एक चिंता ओछी थइ

शिक्षापाठ ४७ कपिलमुनि भाग २

ए नानी चिंता ओछी थइ सा बीजी मोटी जजाळ उभी थइ भद्रिक कपिल हवे युवान् थयो हतो; अने जेने त्या ते जमवा जत ते विधवा बाइ पण युवान् हती तेनी साथे तेना घरमा बीजुं को माणस नहोतु हमेशनो परस्परनो वातचितनो संबंध वध्यो वधी हास्यविनोदरूपे थयो, एम करतां करतां बन्नेने प्रीति बंधाइ कपिल तेनाथी लुब्धायो! एकांत बहु अनिष्ट चीज छे!!

शिक्षापाठ ४६ कपिलमुनि भाग १

कोसांबी नामनी एक नगरी हती त्यांना राजदरबारमा राज्यना आभूपणरूप काश्यप नामनो एक शास्त्री रहेतो हतो. एनी स्त्रीनु नाम श्रीदेवी हतु तेना उदरथी कपिल नामनो एक पुत्र जन्म्यो हतो ते पदर वर्पनो थयो त्यारे तेना पिता परधाम गया कपिल लाडपाडमा उछरेलो होवाथी कइ विशेप विद्वत्ता पाम्यो नहतो, तेथी एना पितानी जगो कोइ बीजा विद्वानने मळी काश्यपशास्त्री जे पुजी कमाइ गया हता ते कमावामा अशक्त एवा कपिले खाइने पुरी करी श्रीदेवी एक दिवस घरना बारणामा उभी हती त्या ते चार नोकरो सहित पोताना पतिनी शास्त्रीयपदवी पामेलो विद्वान जतो तेना जोवामा आव्यो. घणा मानथी जता आ शास्त्रीने जोइने श्रीदेवीने पोतानी पूर्व स्थितिनु स्मरण थइ आव्यु ज्यारे मारा पति आ पदवीपर हता त्यारे हु केवु सुख भोगवती हती! ए मारु सुख तो गयु परतु मारो पुत्र पण पुरु भण्यो नही एम विचारमा डोल्ना डोलता तेनी आखमाथी दड दड आसु खरवा मड्या. एवामा फरतो फरतो कपिल त्या आवी पहोच्यो, श्रीदेवीने रडती जोइ तेनु कारण पूछ्यु कपिलना बहु आग्रहथी श्रीदेवीए जे हतु ते कही बताव्यु पछी कपिल बोल्यो "जो मा! हु बुद्धिशाळी छउ, परतु मारी बुद्धिनो उपयोग जेवो जोइए तेवो थइ शक्यो नथी. एटले विद्या वगर हु ए पदवी पाम्यो नही तु कहे त्या जइने हवे हु माराथी बनती विद्या साध्य करु; श्रीदेवीए खेद साथे कह्यु "ए ताराथी बनी शके नही, नही तो आर्यावर्त्तनी मर्यादापर आवेली श्रावस्ति नगरीमा इद्रदत्त नामनो तारा पितानो मित्र रहे छे, ते अनेक विद्यार्थीयोने विद्यादान दे छे; जो ताराथी

शु मागवु ते सूझतु नथी राजाए सामेना बागमा जइ त्यां बेसीने स्वस्थता पूर्वक विचार करी कपिलने मागवानु कह्यु एटले कपिल ने बागमा जइने विचार करवा बेठो

शिक्षापाठ ४८ कपिलमुनि भाग ३

बे मासा सोनु लेवानी जेनी इच्छा हती ते कपिल हव तृष्णातरंगमा तसडायो पाच महोर मागवानी इच्छा करी तो वा विचार आव्यो के पाचथी कइ पुरु थनार नथी माटे पचवीश महोर मागवी ए विचार पण फर्यो पचवीश महोरथी कइ आखुं वर्ष उतराय नही माटे सो महोर मागवी, त्या वळी विचार फर्यो सो महोरे बे वर्ष उतरी, वैभव भोगवीए, पाछा दु:खना दु ख माटे एक हजार महोरनी याचना करवी ठीक छे; पण एक हजार महोर छोकराछैयाना बेचार खर्च आवे के एवु थाय तो पुरु पण शु थाय ? माटे दश हजार महोर मागवी के जेथी जींदगी पर्यंत पण चिंता नही त्या वळी इच्छा फरी दश हजार महोर खवाई जाय एटले पछी मुडी वगरना थई रहेवु पडे माटे एक लाख महोरनी मागणी करुं के जेना व्याजमा बधा वैभव भोगवु, पण जीव! लक्षाधिपति तो घणाय छे एमा आपणे नामांकित क्याथी थवाना? माटे करोड महोर मागवी के जेथी महान् श्रीमतता कहेवाय वळी पाछो रग फर्यो महान् श्रीमतताथी पण घेर अमल कहेवाय नही माटे राजानु अधु राज्य मागवु, पण जो अर्धु राज्य मागीश तोय राजा मारा तुल्य गणाशे अने वळी हु एनो याचक पण गणाइश माटे मागवु तो आखु राज्य मागवु एम ए तृष्णामां डुब्यो,

विद्या प्राप्त करवानु ते भूली गयो गृहस्थ तरफथी मळता सीधाथी रन्नेनु माड पुरु थतु हतु; पण लगडाल्चाना वारा थया कपिले गृहस्थाश्रम माडी बेठा जेवु करी मूक्यु गमे तेवो उता हलुकर्मी जीव होवाथी ससारनी विशेप लोताळनी तेने माहिती पण नहोती. एथी पैसा केम पेदा करवा ते विचारो ते जाणतो पण नहोतो चचळ स्त्रीए तेने रस्तो बताव्यो के, मुझावामा कइ रळवानु नथी; परतु उपायथी सिद्धि छे आ गामना राजानो एवो नियम छे के, सवारमा पहेलो जइ जे ब्राह्मण आशिर्वाद आपे तेने वे मासा सोनु आपवु त्या जो जइ शको अने प्रथम आशिर्वाद आपी शको, तो ते बे मासा सोनु मळे कपिले ए वातनी हा कही आठ दिवस सुधी आटा खाधा पण वखत वित्या पछी जाय एटले कइ वळे नही एथी तेणे एक दिवस एवो निश्चय कर्यो के, जो हु चोकमा सुउ तो चीवट राखीने उठाशे पछी ते चोकमा सुतो, अधरात भागता चद्रनो उदय थयो. कपिले प्रभात समीप जाणीने मुठीओ वाळीने आशिर्वाद देवा माटे दोडता जवा माड्यु रक्षपाळे चोर जाणीने तेने पकडी राख्यो एक करता बीजु थइ पड्यु. प्रभात थयो एटले रक्षपाळ तेने लइ जइने राजानी समक्ष उभो राख्यो. कपिल बेभान जेवो उभो रह्यो; राजाने तेना चोरना लक्षण भास्या नही एथी तेने सघळु वृत्तात पुछ्यु चद्रना प्रकाशने सूर्य समान गणनारनी भद्रिकतापर राजाने दया आवी तेनी दरिद्रता टाळवा राजानी इच्छा थइ एथी कपिलने कह्यु, आशिर्वादने माटे थइ तारे जो एटली बधी तरखड थइ पडी छे तो हवे तारी इच्छा पुरतु तु मागी ले हु तने आपीश कपिल थोडी वार मूढ जेवो रह्यो एथी राजाए कह्यु, केम विप्र, कइ मागता नथी? कपिले उत्तर आप्यो; मारु मन हजु स्थिर थयु नथी, एटले

विचारता, तृष्णा शमाववाथी ते कपिलना अनेक आवरण क्षय थया तेनु अंत:करण प्रफुल्लित अने बहु विवेकशील थयु विवेकमा ने विवेकमा उत्तम ज्ञानवडे ते स्वात्मनो विचार करी शक्यो. अपूर्वश्रेणिए चढी ते कैवल्यज्ञानने पाम्यो

तृष्णा केवी कनिष्ट वस्तु छे! ज्ञानीओ एम कहे छे के तृष्णा आकाशना जेवी अनत छे, निरंतर ते नवयौवन रहे छे कइक चाहना जेटलु मळ्यु एटले चाहना वधारी दे छे संतोष एज कल्पवृक्ष छे, अने एज मात्र मनोवांछितता पूर्ण करे छे

शिक्षापाठ ४९ तृष्णानी विचित्रता.

मनहर छंद

(एक गरीबनी वधती गयेली तृष्णा.)

हती दीनताइ त्यारे ताकी पटेलाइ अने,
मळी पटेलाइ त्यारे ताकी छे शेठाइने,
सांपडी शेठाइ त्यारे ताकी मंत्रिताइ अने,
आवी मंत्रिताइ त्यारे ताकी नृपताइने
मळी नृपताइ त्यारे ताकी देवताइ अने,
दीठी देवताइ त्यारे ताकी शंकराइने,
अहो! राज्यचंद्र मानो मानो शंकराइ मळी,
वधे तृष्णाइ तोय जाय न मराइने. १

परतु तुच्छ ससारी एटले पाछो वळ्यो; भला जीव! आपणे एवी कृतघ्नता शा माटे करवी पडे के जे आपणने इच्छा प्रमाणे आपवा तत्पर थयो तेनुज राज्य लई लेवु; अने तेनेज भ्रष्ट करवो? खर जोता तो एमा आपणीज भ्रष्टता छे. माटे अर्धु राज्य मागवु; परतु ए उपाधिए मारे नथी जोइती त्यारे नाणानी उपाधि पण क्या ओछी छे? माटे करोड लाख मूकीने सो बसें महोरज मागी लेनी जीव, सो बसें महोर हमणा आवशे तो पछी विषयवैभवमाज वखत चाल्यो जशे, अने विद्याभ्यास पण धर्यो रहेशे; माटे पाच महोर हमणा तो लई जवी पछीनी वात पछी. अरे! पाच महोरनीए हमणा कइ जरूर नथी, मात्र बे मासा सोनु लेवा आव्यो हतो तेज मागी लेवु आ तो जीव बहु थई तृष्णासमुद्रमा ते बहु गळका खाधा आखु राज्य मागतां पण तृष्णा छीपती नहोती, मात्र सतोष अने विवेकथी ते घटाडी तो घटी ए राजा जो चक्रवर्त्ती होत तो पछी हु एथी विशेष शु मागी शकत? अने विशेष ज्या सुधी न मळत त्या सुधी मारी तृष्णा समात पण नहीं, ज्या सुधी तृष्णा समात नही त्या सुधी हु सुखी पण नहोत एटलेथी ए मारी तृष्णा टळे नही तो पछी बे मासाथी करीने क्याथी टळे? एनो आत्मा सवळीए आव्यो अने ते बोल्यो, हवे मारे ए बे मासा सोनानु पण कइ काम नथी बे मासाथी वधीने हु केटले सुधी पहोंच्यो! सुख तो सतोषमाज छे तृष्णा ए ससार वृक्षनु बीज छे. एनो हे! जीव, तारे शु खप छे? विद्या लेता तु विषयमा पडी गयो, विषयमा पडवाथी आ उपाधिमा पड्यो; उपाधि वडे करिने अनत तृष्णा समुद्रना तरगमा तु पड्यो. एक उपाधिमाथी आ ससारमां एम अनत उपाधि वेठवी पडे छे एथी एनो त्याग करवो उचित छे सत्य सतोष जेवु निरुपाधि सुख एके नथी. एम विचारतां

हाथने हलावी त्यां तो खीजी बुढे सूचव्युं ए,
बोल्या विना बेस बाळ तारी चतुराइने !
अरे राजचंद्र देखो देखो आशापाश कैवो ?
जतां गई नहीं डोशे ममता मराइने !

शिक्षापाठ ५० प्रमाद

धर्मनो अनादरता, उन्माद, आळस, कषाय ए सघळां प्रमादनां लक्षण छे

भगवाने उत्तराध्ययन सूत्रमां गौतमने कह्युं के, हे ! गौतम, मनुष्यनुं आयुष्य डाभनी अणीपर पडेला जळना बिंदु जेवुं छे जेम ते बिंदुने पडता वार लागती नथी तेम आ मनुष्यायु जतां वार लागती नथी ए बोधना काव्यमां चोथी कडी स्मरणमां अवश्य राखवा जेवी छे 'समय गोयम मापमाए'—ए पवित्र वाक्यना बे अर्थ थाय छे एक तो हे गौतम ! समय एटले अवसर पामीने प्रमाद न करवो अने बीजो ए के मेषोन्मेषमां चाल्या जता असंख्यातमा भागना जे समय कहेवाय छे तेटलो वखत पण प्रमाद न करवो कारण देह क्षणभंगुर छे, काळशीकारी माथे धनुष्यबाण चढावीने उभो छे लीधो के लेशे एम जंजाळ थइ रही छे; त्यां प्रमादथी धर्म कर्त्तव्य रही जशे

अति विचक्षण पुरुषो संसारनी सर्वोपाधि त्यागीने अहो रात्र धर्ममां सावधान थाय छे, पळनो पण प्रमाद करता नथी विचक्षण पुरुषो अहो रात्रना थोडा भागने पण निरंतर धर्मकर्त्तव्यमां गाळे

(२)

करोचली पडी दाढी डाचातणो दाट वळ्यो,
काळी केशपटी विषे, श्वेतता छवाइ गइ;
सूंघवु, सांभळवु ने, देखवु ते माडी वळ्यु,
तेम दांत आवली ते, खरी, के खवाइ गइ.
वळी केड वांकी, हाड गयां, अंगरंग गयो,
उठवानी आय जतां लाकडी लेवाइ गइ;
अरे! राज्यचंद्र एम, युवानी हराइ पण,
मनथी न तोय गइ, ममता मराइ गइ २

(३)

करोडोना करजना, शीरपर डंका वागे,
रोगथी रुंधाइ गयु, शरीर सूकाइने,
पुरपति पण माथे, पीडवाने ताकी रह्यो,
पेट तणी वेठ पण, शके न पुराइने.
पितृ अने परणी ते, मचावे अनेक धंध,
पुत्र, पुत्री भाखे खाउं खाउं दुःखदाइने,
अरे! राज्यचंद्र तोय जीव झावा दावा करे,
जंजाळ छंडाय नहीं तजी तृषनाइने. ३

(४)

थइ क्षीण नाडी अवाचक जेवो रह्यो पडी.
जीवन दीपक पाम्यो केवळ झंखाइने;
छेल्ली इसे पड्यो भाळी भाइए त्यां एम भाख्यु,
हवे टाढी माटी थाय तो तो ठीक भाइने.

गुरु —तमे जे वात कहो छो तेनु एक दृष्टान्त आपो जोइए

लघु शिष्यो —अमे पोते कडवाने कडवुज कहीए छीए, मधुरान मधुर कहीए छीए झेरने झेर ने अमृतने अमृत कहीए छीए

गुरु —आयुष्यमानो! ए बधा द्रव्य पदार्थ छे, परतु आत्मान कइ कडवाश, कइ मधुराश, कयु झेर अने कयु अमृत छे? ए भावपदार्थोनी एथी कंइ परीक्षा थइ शके?

लघु शिष्य—भगवन्! ए सबंधी तो अमारु लक्ष पण नथी

गुरु —त्यारे एज समजवानु छे के ज्ञान-दर्शनरूप आत्माना सत्य भाव पदार्थने अज्ञान अने अदर्शन रूप असत् वस्तुए घेरी लीधा छे, एमा एटली बधी मिश्रता थइ गइ छे के परीक्षा करवी अति अति दुर्लभ छे, ससारना सुखो अनतिवार आत्माए भोगव्यां छता, तेमाथी हजु पण मोह टळ्यो नही, अने तेने अमृत जेवो गण्यो ए अविवेक छे, कारण ससार कडवो छे कडवा विपाकने आपे छे तेमज वैराग्य जे ए कडवा विपाकनु औषध छे, तेने कडवो गण्यो, आ पण अविवेक छे ज्ञान दर्शनादिगुणो अज्ञान दर्शने घेरी लइ जे मिश्रता करी नाखी छे ते ओळखी भाव अमृतमा आववु, एनु नाम विवेक छे कहो त्यारे हवे विवेक ए केवी वस्तु ठरी?

लघु शिष्य —अहो! विवेक एज धर्मनु मूळ अने धर्म रक्षक कहेवाय छे ते सत्य छे आत्म स्वरूपने विवेक विना ओळखी शकाय नही ए पण सत्य छे ज्ञान, शील, धर्म, तत्त्व अने तप ए सघळा विवेक विना उदय पामे नही ए आपनु कहेवु यथार्थ छे जे विवेकी नथी ते अज्ञानी अने मंद छे तेज पुरुष मत भेद अने मिथ्या दर्शनमां लपटाइ रहे छे आपनी विवेक संबधीनी शिक्षा अमे निरंतर मनन करीशुं

छे, अने अवसरे अवसरे धर्मकर्त्तव्य करता रहे छे. पण मूढ पुरुषो निद्रा, आहार, मोजशोख अने विकथा तेमज रंगरागमां आयु व्यतीत करी नाखे छे एनुं परिणाम तेओ अधोगति रूप पामे छे

जेम बने तेम यतना अने उपयोगथी धर्मने साध्य करवो योग्य छे साठघडीना अहो रात्रमां वीशघडी तो निद्रामां गाळीए छीए बाकीनी चाळीश घडी उपाधि, टेलटप्पा अने रखडवामां गाळीए छीए ए करता ए साठघडीना वखतमांथी बे चार घडी विशुद्ध धर्मकर्त्तव्यने माटे उपयोगमां लइए तो बनी शके एवुं छे एनुं परिणाम पण केवुं सुंदर थाय !

पळ ए अमूल्य चीज छे चक्रवर्ती पण एक पळ पामवा आखी रिद्धि आपे तो पण ते पामनार नथी एक पळ व्यर्थ खोवाथी एक भव हारी जवा जेवुं छे एम तत्त्वनी दृष्टिए सिद्ध छे !

शिक्षापाठ ५१ विवेक एटले शुं ?

लघु शिष्योः—भगवन् ! आप अमने स्थळे स्थळे कहेता आवो छो के विवेक ए महान् श्रेयस्कर छे विवेक ए अंधारामां पडेला आत्माने ओळखवानो दीवो छे. विवेक वडे करीने धर्म टके छे विवेक नथी त्यां धर्म नथी तो विवेक एटले शुं ? ते अमने कहो

गुरुः—आयुष्यमनो ! सत्यासत्यने तेने स्वरूपे करीने समजवा तेनुं नाम विवेक

लघु शिष्यो—सत्यने सत्य अने असत्यने असत्य कहेवानुं तो बधाय समजे छे त्यारे महाराज ! एओ धर्मनुं मूळ पाम्या क

छे भुंडने एना वैभवना प्रमाणमां छे बन्ने जन्म्यां छे अने बन्ने मरवाना छे आम सूक्ष्म विचारे जोतां क्षणिकताथी, रोगथी, जरा वगेरेथी बन्ने ग्राहित छे द्रव्ये चक्रवर्त्ती समर्थ छे, महा पुण्यशाळी छे, मुख्यपणे सातावेदनीय भोगवे छे, अने भुंड बिचारुं असातावेदनीय भोगवी रह्युं छे बन्नेने असाता–सातापण छे, परंतु चक्रवर्त्ती महा समर्थ छे पण जो ए जीवन पर्यंत मोहांध रह्यो तो सघळी बाजी हारी जवा जेवुं करे छे भुंडने पण तेमज छे चक्रवर्त्ती शलाकापुरुष होवाथी भुंडथी ए रूपे एनी तुल्यना नथी, परंतु आ स्वरूपे जे भोग भोगववामां बन्ने तुच्छ छे, बन्नेनां शरीर परु मांसादिकनां छे, असाताथी पराधिन छे, संसारनी आ उत्तमोत्तम पद्वी आवी रही तेमां आवुं दु ख, आवी क्षणिकता, आवी तुच्छता, आवुं अंधपणुं ए रह्युं छे तो पछी बीजे सुख शा माटे गणवुं जोइए? ए सुख नथी, छतां सुख गणो तो जे सुख भयवाळां अने क्षणिक छे ते दु खज छे अनंत ताप, अनंत शोक, अनंत दु ख जोइने ज्ञानिओए ए संसारने पुंठ दीधी छे, ते सत्य छे ए भणी पाछुं वाळी जोवा जेवुं नथी त्यां दु'ख दु खने दु खज छे. दु.खनो ए समुद्र छे

वैराग्य एज अनंत सुखमां ल्इ जनार उत्कृष्ट भोमियो छे

शिक्षापाठ ५३ महावीरशासन

इमणां जे जिन शासन प्रवर्त्तमान छे ते भगवान महावीरनुं प्रणीत करेलुं छे भगवान महावीरने निर्वाण पधार्या २४०० वर्ष उपर थइ गयां मगध देशना क्षत्रियकुंड नगरमां सिद्धार्थ राजानी

शिक्षापाठ ५२ ज्ञानिओए वैराग्य शा माटे बोध्यो?

संसारना स्वरूप संबंधी आगळ केटलुक कहेवामा आव्युं छे. ते तमने लक्षमा हशे

ज्ञानिओए एने अनंत खेदमय, अनंत दुःखमय, अव्यवस्थित, चळविचळ, अने अनित्य कह्यो छे. आ विशेषणो लगाडवा पहेला एमणे संसार संबंधी संपूर्ण विचार करेलो जणाय छे अनंत भवनुं पर्यटन, अनंतकाळनुं अज्ञान, अनंत जीवननो व्याघात, अनंत मरण, अनंत शोक ए वडे करीने संसारचक्रमा आत्मा भम्या करे छे संसारनी देखाती इंद्रवारणा जेवी सुंदर मोहिनीए आत्माने तद्रूप लीन करी नाख्यो छे. ए जेवुं सुख आत्माने क्याय भासतुं नथी. मोहिनीथी सत्सुख अने एनुं स्वरूप जोवानी एणे आकांक्षा पण करी नथी पतंगनी जेम दीपक प्रत्ये मोहिनी छे तेम आत्मानी संसार संबंधे मोहिनी छे. ज्ञानिओ ए संसारने क्षणभर पण सुखरूप कहेता नथी ए संसारनी तल जेटली जग्या पण झेर विना रही नथी एक भुंडथी करीने एक चक्रवर्त्ती सुधी भावे करीने सरखापणुं रह्युं छे एटले चक्रवर्त्तीनी संसार संबंधमा जेटली मोहिनी छे, तेटलीज बलके तेथी विशेष भुंडने छे चक्रवर्त्ती जेम समग्र प्रजापर अधिकार भोगवे छे, तेम तेनी उपाधि पण भोगवे छे भुंडने एमानुं कंइए भोगववुं पडतुं नथी अधिकार करता उलटी उपाधि विशेष छे चक्रवर्त्तीनो पोतानी पत्नी प्रत्येनो जेटलो प्रेम छे, तेटलोज अथवा तेथी विशेष भुंडनो पोतानी भुंडणी प्रत्ये प्रेम रह्यो छे चक्रवर्त्ती भोगथी जेटलो रस ले छे, तेटलोज रस भुंड पण मानी बेठुं छे. चक्रवर्त्तीनी जेटली वैभवनी बहोळता छे, तेटलीज उपाधि

विचार करीए छीए? नियमित वखत धर्ममा क्या व्यतीत करीए छीए? धर्मतीर्थना उदयने माटे क्या लक्ष राखीए छीए? वंशपरंपरा धर्मतत्त्वने शोधीए छीए? श्रावक कुळमां जन्म्या एथी करीने श्रावक, ए वात आपणे भावे करीने मान्य करवी जोइती नथी, एने माटे जोइता आचार-ज्ञान-शोध के एमाना कंइ विशेष लक्षणो होय तेने श्रावक मानिये तो ते यथायोग्य छे द्रव्यादिक केटलाक प्रकारनी सामान्य दया श्रावकने घेर जन्मे छे अने त पाळे छे, ए वात वखाणवा लायक छे; पण तत्त्वने कोइकज जाणे छे, जाण्या करता शंका करनारा अर्धदग्धो पण छे, जाणीने अहंपद करनार पण छे परंतु जाणीने तत्त्वना कांटामा तोळनारा कोइक विरलाज छे परंपर आम्नायथी केवळ, मन पर्यव अने परम अवधिज्ञान विच्छेद गया दृष्टिवाद विच्छेद गयु, सिद्धांतनो घणो भाग पण विच्छेद गयो, मात्र थोडा रहेला भागपर सामान्य समजणथी शंका करवी योग्य नथी जे शंका थाय ते विशेष जाणनारने पूछवी, त्याथी मनमानतो उत्तर न मळे तोपण जिनवचननी श्रद्धा चळविचळ करवी योग्य नथी, केमके अनेकात शैलीना स्वरूपने विरला जाणे छे

भगवानना कथन रूप मणिना घरमा केटलाक पामर प्राणीओ दोषरूप काणु शोधवानु मथन करी अधोगति जन्य कर्म बाधे छे. लीलोत्रीने बदले तेनी सुकवणी करी लेवानुं कोणे केवा विचारथी शोधी काढ्युं हशे? आ विषय बहु मोटो छे अहीं आगळ ए संबंधी कइ कहेवानी योग्यता नथी टुंकामां कहेवानुं के आपणे आपणा आत्माना सार्थक अर्थे मतभेदमा पडवु नहीं

उत्तम अने शांत मुनिओनो समागम, विमळआचार विवेक, तेमज दया, क्षमा आदिनु सेवन करवुं महावीर तीर्थने अर्थे बने

राणी त्रिशलादेवी क्षत्रियाणीनी कुखे भगवान महावीर जन्म्या. महावीर भगवानना मोटा भाइनु नाम नंदीवर्द्धमान हतुं. तेमनी स्त्रीनु नाम यशोदा हतु त्रीश वर्ष तेओ गृहस्थाश्रममा रह्या एकांतिक विहारे साडाबार वर्ष एक पक्ष तपादिक सम्यकाचारे एमणे अशेष घनघाती कर्मने बाळीने भस्मीभूत कर्या; अनुपमेय केवळज्ञान अने केवळदर्शन ऋजुवालिका नदीने किनारे पाम्या; एकंदर बहोतेर वर्ष लगभग आयु भोगवी सर्व कर्म भस्मीभूत करी सिद्धस्वरुपने पाम्या वर्त्तमान चोवीशीना ए छेल्ला जिनेश्वर हता

एओनु आ धर्मतीर्थ प्रवर्त्ते छे ते २१००० हजार वर्ष एटले पंचमकाळनी पूर्णता सुधी प्रवर्त्तशे, एम भगवतीसूत्रमा कह्यु छे

आ काळ दश आश्चर्यथी युक्त होवाथी ए श्री धर्मतीर्थ प्रत्ये अनेक विपत्तिओ आवी गइ छे, आवे छे, अने आवशे.

जैनसमुदायमा परस्पर मतभेद बहु पडी गया छे. परस्पर निंदाग्रंथोथी जजाळ माडी बेठा छे मध्यस्थ पुरपो मतमतातरमा नहीं पडता विवेक विचारे जिनशिक्षाना मूळ तत्त्वपर आवे छे; उत्तम शीलवान मुनियोपर भाविक रहे छे, अने सत्त एकाग्रताथी पोताना आत्माने दमे छे.

काळप्रभावने लीधे वखते वखते शासन कइ न्यूनाधिक प्रकाशमा आवे छे

'वक्र जडाय पछिमा' एवु उत्तराध्ययन सूत्रमा वचन छे, एनो भावार्थ ए छे के छेल्ला तीर्थंकर (महावीरस्वामी)ना शिष्यो वाका अने जड थशे अने तेनी सत्यता विषे कोइने बोलवु रहे तेम नथी आपणे क्यां —— ने विचार करीए छीए? ज्यां उत्तम शी

छे, उतां ए पवित्र केम थाय? वळी साधुए एवुं कइ संसार कर्त्तव्य कर्युं न होय के जेथी तेओने स्नान करवानी आवश्यकता रहे

जिज्ञासु–पण स्नान करवाथी तेओने हानि शुं छे?

सत्य–ए तो स्थूळबुद्धिनुज प्रश्न छे नहावाथी कामाग्निनी प्रदीप्तता, व्रतनो भंग, परिणामनुं बदलवुं, असंख्याता जंतुनो विनाश, ए सघळी अशुचि उत्पन्न थाय छे अने एथी आत्मा महा मलिन थाय छे प्रथम एनो विचार करवो जोइए जीवहिंसायुक्त शरीरनी जे मलिनता छे ते अशुचि छे अन्य मलिनताथी तो आत्मानी उज्ज्वळता थाय छे, ए तत्त्व विचारे समजवानुं छे, नहावाथी व्रतभंग थइ आत्मा मलिन थाय छे, अने आत्मानी मलिनता एज अशुचि छे

जिज्ञासु–मने तमे बहु सुंदर कारण बताव्युं सूक्ष्म विचार करता जिनेश्वरना कथनथी बोध अने अत्यानंद प्राप्त थाय छे वारु, गृहस्थाश्रमीओए सांसारिक प्रवर्त्तनथी थयेली अनिच्छित जीवहिंसादियुक्त एवी शरीर संबंधी अशुचि टाळवी जोइए के नहीं?

सत्य–समजण पूर्वक अशुचि टाळवीज जोइए जैन जेवुं एके पवित्र दर्शन नथी, यथार्थ पवित्रतानो बोधक ते छे परंतु शौचाशौचनुं स्वरूप समजवुं जोईए

तो विवेकी योग कारण सहित आपवो तुच्छ बुद्धिथी शकित थवु नहीं, एमा आपणु परम मगळ छे ए विसर्जन करवु नही

शिक्षापाठ ५४ अशुचि कोने कहेवी ?

जिज्ञासु–मने जैन मुनियोना आचारनी वात बहु रुची छे एओना जेवो कोइ दर्शनना सतोमा आचार नथी गमे तेवा शियाळानी टाढमा अमुक वस्त्रवडे तेओने रेडववु पडे छे, उनाळामा गमे तेवो ताप तपता छता पगमा तेओने पगरखा के माथापर छत्री लेवानी नथी उनी रेतीमा आ तापना लेवी पडे छे. यावज्जीव उनु पाणी पीए छे गृहस्थने घेर तेओ बेसी शकता नथी शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळे छे फूटी बदाम पण पासे राखी शकता नथी अयोग्य वचन तेनाथी बोली शकातु नथी. वाहन तेंओ लइ शकता नथी. आवा पवित्र आचारो, खरे! मोक्षदायक छे परतु नव वाडमा भगवाने स्नान करवानी ना कही छे ए वात तो मने यथार्थ बेसती नथी

सत्य–शा माटे बेसती नथी

जिज्ञासु–कारण एथी अशुचि वधे छे.

सत्य–कइ अशुचि वधे छे ?

जिज्ञासु–शरीर मलिन रहे छे ए

सत्य–भाइ, शरीरनी मलिनताने अशुचि कहेवी ए वात कइ विचार पूर्वक नथी शरीर पोते शानु बन्यु छे एतो विचार करो रक्त, पित्त, मळ, मूत्र श्लेष्मनो ए भडार छे तेपर मात्र त्वचा

शिक्षापाठ ५६ क्षमापना

हे भगवान्! हुं बहु भूली गयो, में तमारां अमूल्य वचनने लक्षमां लीधां नहीं. में तमारां कहेलां अनुपम तत्त्वनो विचार कर्यो नहीं. तमारा प्रणीत करेलां उत्तम शीलने सेव्युं नहीं. तमारां कहेलां दया, शांति, क्षमा अने पवित्रता में ओळख्यां नहीं. हे भगवान! हुं भूल्यो, आथड्यो-रझळ्यो अने अनंत संसारनी विटम्बनामां पड्यो छउं. हुं पापी छउं. हुं बहु मदोन्मत्त अने कर्म रजथी करीने मलिन छउं. हे परमात्मा! तमारां कहेलां तत्त्वविना मारो मोक्ष नथी. हुं निरंतर प्रपंचमां पड्यो छउं, अज्ञानथी अंध थयो छउं; मारामां विवेकशक्ति नथी अने हुं मूढ छउं, हुं निराश्रित छउं, अनाथ छउं. निरागी परमात्मा! हवे हुं तमारुं, तमारा धर्मनुं अने तमारा मुनिनुं शरण ग्रहुं छउं. मारा अपराध क्षय थई हुं ते सर्व पापथी मुक्त थउं ए मारी अभिलाषा छे. आगळ करेलां पापोनो हुं हवे पश्चाताप करूं छउं. जेम जेम हुं सूक्ष्म विचारथी उंडो उतरुं छउं तेम तेम तमारा तत्त्वना चमत्कारो मारा स्वरूपनो प्रकाश करे छे. तमे निरागी, निर्विकारी, सच्चिदानंदस्वरूप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शी, अने त्रैलोक्यप्रकाशक छो. हुं मात्र मारा हितने अर्थे तमारी साक्षीए क्षमा चाहुं छउं. एक पळ पण तमारा कहेलां तत्त्वनी शंका न थाय, तमारा कहेला रस्तामां अहोरात्र हुं रहुं, एज मारी आकांक्षा अने वृत्ति थाओ! हे सर्वज्ञ भगवान्! तमने हुं विशेष शुं कहुं? तमाराथी कंई अजाण्युं नथी. मात्र पश्चातापथी हुं कर्मजन्य पापनी क्षमा इच्छुं छउं.—ॐ शांति. शांति. शांति.

शिक्षापाठ ५५ सामान्य नित्यनियम.

प्रभात पहेला जागृत थइ नमस्कारमंत्रनु स्मरण करी [illegible] करवु पापव्यापारनी वृत्ति रोकी रात्रि मवधी [illegible] [illegible] उपयोग पूर्वक प्रतिक्रमण करवु

प्रतिक्रमण कर्या पछी यथावसर भगवाननी [illegible] [illegible] तथा स्वाध्यायथी करी मनने उज्वळ करवु

माता पितानो विनय करी समारीकारमा [illegible] [illegible] भूलाय नही तेम व्यवहारिक कार्यमा प्रवर्त्तन करवु

पोते भोजन करता पहेला सत्पात्रे दान [illegible] [illegible] अनुकूळ गणो तेवो योग मळता यथोचित प्रवृत्ति करवी

आहारविहारादिमा नियम सहित प्रवर्त्तन

सत्शास्त्रना अभ्यासनो नियमित [illegible] [illegible]

सायकाळे उपयोगपूर्वक सध्यावश्यक करवु

निद्रा नियमितपणे लेवी

सुता पेहेला अढार पापस्थानक, [illegible], अने सर्व जीव मध्ये क्षमावी, पच परमेष्टि मत्रनु [illegible] करी, समाधि पूर्वक शयन करवु

आ सामान्य नियमो बहु मगळकारी छे जे अही [illegible] कह्या छे विशेष विचारवाथी [illegible] प्रवर्त्तवाथी ते [illegible] मगळदायक अने आनदकारक थशे

जरू पडे, उत्तम आचाररूप पथ्यपर. आ भवदुःखने धीनार निर्ग्रंथ गुरु छे.

आमा जो वैराग्यजळ न होय तो बीजा सर्व साहित्यो कई करी शकता नथी, माटे वैराग्यने धर्मनु स्वरूप कही शकाय अर्हंतप्रणीत तत्त्व वैराग्यज बोधे छे, तो तेज धर्मनु स्वरूप एम गणवुं

शिक्षापाठ ५८ धर्मना मतभेद भाग १

आ जगतमा अनेक प्रकारथी धर्मना मत पडेला छे तेवा मतभेद अनादिकाळथी छे, ए न्यायसिद्ध छे पण ए मत भेदो कई कई रूपांतर पाम्या जाय छे ए संबंधी केटलोक विचार करीए

केटलाक परस्पर मळता अने केटलाक परस्पर विरुद्ध छे, केटलाक केवळ नास्तिकना फायेला पण छे केटलाक सामान्य नीतिने धर्म कहे छे केटलाक ज्ञाननेज धर्म कहे छे केटलाक अज्ञान एज धर्ममत कहे छे केटलाक भक्तिने कहे छे, केटलाक क्रियाने कहे छे; केटलाक विनयने कहे छे अने केटलाक शरीरने साचववु एनेज धर्ममत कहे छे

ए धर्ममत स्थापकोए एम बोध कर्यो जणाय छे के अमे जे कहीए छीए ते सर्वज्ञवाणीरूप छे, के सत्य छे बाकीना सघळा मतो असत्य अने कुतर्कवादी छे, तथा परस्पर ते मत वादीओए योग्य के अयोग्य खंडन कर्युं छे वेदांतना उपदेशक एज बोधे छे, सांख्यनो पण एज बोध छे, बौधनो पण एज बोध छे. न्यायमत-

शिक्षापाठ ५७ वैराग्य ए धर्मनुं स्वरुप छे

एक वस्त्र लोहीनी मलिनताथी रगायु तेने जो लोहीथी धोइए तो ते उजळु थई शके नही, पण वधारे रगाय छे जो पाणीथी ए वस्त्रने धोइए तो ते मलिनता जवानो समव छे आ दृष्टातपरथी आत्मापर विचार लइए. अनादिकाळथी आत्मा ससाररुपी लोहीथी मलिन थयो छे. मलिनता प्रदेशे प्रदेशे व्यापी रही छे! ए मलिनता आपणे विषय शृगारथी टाळवी धारीए तो टळी शके नहीं. लोहीथी जेम लोही धोवातु नथी, तेम शृगारथी करीने विषयजन्य आत्ममलिनता टळनार नथी ए जाणे निश्चयरुप छे आ जगतमा अनेक धर्ममतो चाले छे, ते सबधी अपक्षपाते विचार करता आगळथी आटलु विचारवु अवश्यनु छे के ज्या स्त्रीओ भोगववानो उपदेश कर्यो होय, लक्ष्मीलीलानी शिक्षा आपी होय, रग, राग, गुलतान अने एशआराम करवानु तत्त्व बताव्यु होय त्या आपणा आत्मानी सत् शाति नथी, कारण ए धर्ममत गणीए तो आखो ससार धर्ममतयुक्तज छे प्रत्येक गृहस्थनु घर एज योजनाथी भरपूर होय छे. छोकराछैया, स्त्री, रग, राग, तान त्या जाम्यु पडयु होय छे अने ते घर धर्ममदिर कहेवु, तो पछी अधर्मस्थानक कयु? अने जेम वर्त्तिए छीए तेम वर्त्तवाथी खोटु पण शु? कोइ एम कहे के पेला धर्ममदिरमा तो प्रभुनी भक्ति थइ शके छे तो तेओने माटे खेदपूर्वक आटलोज उत्तर देवानो छे के ते परमात्मतत्त्व अने तेनी वैराग्यमय भक्तिने जाणता नथी. गमे तेम हो पण आपणे आपणा मूळ विचारपर आववु जोइए. तत्त्वज्ञानीनी दृष्टिए आत्मा ससारमा विषयादिक मलिनताथी पर्यटन करे छे ते मलिनतानो क्षय विशुद्ध भाव जळथी होवो जोइए अर्हतना तत्त्वरुप साबु अने वैराग्यरुपी

शिक्षापाठ ५९ धर्मना मतभेद भाग २

आटलुं तो तमारे स्पष्ट मानवुं के गमे ते एक धर्म आ जगत्पर संपूर्णसत्यता धरावे छे हवे एक दर्शनने सत्य कहेतां बाकीना मतने केवळ असत्य कहेवा पडे, पण हुं एम कही न शकुं शुद्ध आत्मज्ञानदाता निश्चयनयवडे तो ते असत्यरूप ठरे; परंतु व्यवहारनये ते असत्य कही शकाय नहीं एक सत्य अने बाकीना अपूर्ण अने सदोष छे एम हुं कहुं छउं तेमज केटलाक कुतर्कवादी अने नास्तिक छे ते केवळ असत्य छे, परंतु जेओ परलोक संबंधी के पाप संबंधी कंइपण बोध के भय बतावे छे ते जातना धर्ममतने अपूर्ण अने सदोष कही शकाय छे एक दर्शन जे निर्दोष अने पूर्ण कहेवानुं छे ते विषेनी वात हमणा एक बाजु राखीए

हवे तमने शंका थशे के सदोष अने अपूर्ण एवुं कथन एना प्रवर्तके शा माटे बोध्युं हशे? तेनुं समाधान थवुं जोइए ए समाधान एम छे के ते धर्ममतवाळाओनी ज्यां सुधी बुद्धिनी गति पहोंची त्यां सुधी तेमणे विचारो कर्या अनुमान, तर्क अने उपमादिक आधारवडे तेओने जे कथन सिद्ध जणायु ते प्रत्यक्षरूपे जाणे सिद्ध छे एवुं तमणे दर्शाव्युं, जे पक्ष लीधो तेमां मुख्य एकांतिक वाद लीधो, भक्ति, विश्वास, नीति, ज्ञान, क्रिया आदि एक पक्षने विशेष लीधो, एथी बीजा मानवा योग्य विषयो तेमणे दूषित करी दीधा वळी जे विषयो तेमणे वर्णव्या ते सर्व भाव भेदे तेओए कंइ जाण्या नहोता, पण पोतानी बुद्धि अनुसार बहु वर्णव्या. तार्किक सिद्धांत दृष्टांतादिकथी सामान्य बुद्धिवाळा आगळ के जडभरत आगळ तेओए सिद्ध करी बताव्यो कीर्ति, लोकहित, के भगवान मनावानी आकांक्षा एमांनी एकादि पण एमना मननी

वाळानो पण एज बोध छे, वैशेषिकनो एज बोध छे, शक्तिपंथीनो एज बोध छे; वैष्णवादिकनो एज बोध छे; इस्लामीनो एज बोध छे अने एज रीते क्राइस्टनो एम बोध छे के आ अमारु कथन तमने सर्व सिद्धि आपशे त्यारे आपणे हवे शु विचार करवो?

वादी प्रतिवादी बन्ने साचा होता नथी, तेम बन्ने खोटा होता नथी. बहु तो वादी कइक वधारे साचो; अने प्रतिवादी कइक ओछो खोटो होय. अथवा प्रतिवादी कइक वधारे साचो, अने वादी कइक ओछो खोटो होय. केवळ बन्नेनी वात खोटी होवी न जोइए आम विचार करता तो एक धर्ममत साचो ठरे, अने बाकीना खोटा ठरे.

जिज्ञासु—ए एक आश्चर्यकारक वात छे सर्वने असत्य के सर्वने सत्य केम कही शकाय? जो सर्वने असत्य एम कहीए तो आपणे नास्तिक ठरीए! अने धर्मनी सचाइ जाय. आ तो निश्चय छे के धर्मनी सचाइ छे, तेम जगत्पर ते अवश्य छे एक धर्ममत सत्य अने बाकीना सर्व असत्य एम कहीए तो ते वात सिद्ध करी बतावबी जोइए सर्व सत्य कहीए तो तो ए रेतीनी भींत जेवी वात करी; कारण के तो आटला बधा मतभेद केम पडे? जो कइ पण मतभेद न होय तो पछी जुदा जुदा पोतपोताना मतो स्थापवा शा माटे यत्न करे? एम अन्योन्यना विरोधथी थोडीवार अटकवु पडे छे.

तोपण ते सबधी अत्रे कइ समाधान करीशु ए समाधान सत्य अने मध्यस्थभावनानी द्रष्टिथी कर्यु छे एकातिक के मतातिक द्रष्टिथी कर्यु नथी. पक्षपाती के अविवेकी नथी; उत्तम अने विचारवा जेवु छे. देखावे ए सामान्य लागशे, परतु सूक्ष्म विचारथी बहु भेदवाळु लागशे.

पण निरर्थक जाय, माटे एक वखत आखा देशमां प्रवास करवो संसारना महत्पुरुषोना धाम, वैभव अने सुख जोवां एम निश्चय करी ते प्रवासमां नीकळी पड्यो भारतना जे जे रमणीय अने रीद्धिमान शहेरो हता ते जोयां युक्तिप्रयुक्तिए राजाधिराजना अंतःपुर, सुख अने वैभव जोयां श्रीमंतोना आवास, वहिवट, बागबगीचा अने कुटुंब परिवार जोयां, पण एथी तेनुं कोई रीते मन मान्यु नहीं कोइने स्त्रीनु दु ख, कोइने पतिनुं दु.ख, कोइने अज्ञानथी दु ख, कोइने वहालांना वियोगनु दु.ख, कोइने निर्धनतानु दु ख, कोइने लक्ष्मीनी उपाधिनु दु.ख, कोइने शरीर संबंधी दु.ख, कोइने पुत्रनु दु ख, कोइने शत्रुनु दु ख, कोइने जडतानु दुःख, कोइने मावापनु दु ख, कोइने वैधव्य दु ख, कोइने कुटुंबनु दु.ख, कोइने पोताना नीचकुळनु दु ख, कोइने प्रीतिनु दु ख, कोइने इर्ष्यानु दु.ख कोइने हानिनु दु ख, एम एक, बे विशेष के बधा दु ख, स्थळे स्थळे ते विप्रना जोवामां आव्यां एथी करीने एनु मन कोइ स्थळे मान्यु नहीं, ज्यां जुए त्यां दु ख, तो खरुंज कोई स्थळे संपूर्ण सुख तेना जोवामां आव्यु नहीं हवे त्यारे शुं मागवु एम विचारता विचारता एक महाधनाढ्यनी प्रशंसा सांभळीने ते द्वारिकामां आव्यो द्वारिका महारीद्धिमान, वैभवयुक्त, बागबगीचा वड करीने सुशोभित अने वस्तीथी भरपूर शहेर तेने लाग्युं सुंदर अने भव्य आवासो जोतो, अने पूछतो पूछतो ते पेला महाधनाढ्यने घेर गयो श्रीमंत मुखगृहमां बेठा हता तेणे अतिथि जाणी ब्राह्मणने सन्मान आप्यु, कुशळता पूछी अने तेओने माटे भोजननी योजना करावी जरा वार जवा दई धीरजथी शेठे ब्राह्मणने पूछ्युं आपनु आगमन कारण जो मने कहेवा जेवुं होय तो कहो ब्राह्मणे कह्युं, हमणां आप क्षमा राखो, आपनो सघळी जातनो वैभव

भ्रमणा होवाथी अत्युग्र उद्यमादिथी तेओ जय पाम्या. केटलाके शृंगार अने लोकेच्छित साधनोथी मनुष्यना मन हरण कर्यां; दुनिआ मोहमा तो मूळे डुबी पडी छे, एटले ए इच्छित दर्शनथी गाडररूपे थइने तेओए राजी थइ तेनु कहेलु मान्य राख्यु. केटलाके नीति, तथा कइ वैराग्यादि गुण देखी—इत्यादिक देखी ते कथन मान्य राख्यु. प्रवर्त्तकनी बुद्धि तेओ करतां विशेष होवाथी तेने पछी भगवानरूपज मानी लीधा. केटलाके वैराग्यथी धर्ममत फेलावी पाछळथी केटलाक सुखशीलिया साधननो बोध खोसी पोताना मतनी वृद्धि करी. पोतानो मत स्थापन करवाना महान भ्रमणाए अने पोतानी अपूर्णता इत्यादिक गमे ते कारणथी बीजानु कहेलु पोताने न रुच्यु एटले तेणे जुदोज राह काढ्यो. आम अनेक मतमतातरनी जाळ थती गइ. चार पाच पेढी एकनो एक धर्मपाळ्यो एटले पछी ते कुळधर्म थइ पड्यो एम स्थळ स्थळे थतु गयु

शिक्षापाठ ६० धर्मना मतभेद भाग ३

जो एक दर्शन पूर्ण अने सत्य न होय तो बीजा धर्ममतने अपूर्ण अने असत्य कोइ प्रमाणथी कही शकाय नहीं; ए माटे थइने जे एक दर्शन पूर्ण अने सत्य छे तेना तत्त्वप्रमाणथी बीजा मतोनी अपूर्णता अने एकातिकता जोइए.

ए बीजा धर्ममतोमा तत्त्वज्ञान संबंधी यथार्थ सूक्ष्म विचारो नथी केटलाक जगतकर्त्तानो बोध करे छे, पण [illegible] प्रमाणवडे सिद्ध [illegible]ो नथी. केटलाक ज्ञानथी मोक्ष [illegible]

दीवस वीती गयो अने रात्रि थइ सुवानो वखत थयो धनाढ्य अने ब्राह्मण एकांतमा बेठा हता, पछी धनाढ्ये विप्रने आगमन कारण कहेवा विनंति करी

विप्र–हु घेरथी एवो विचार करी नीकळ्यो हतो के वधारे वगेरे सुखी कोण छे ते जोवु, अने तप करीने पछी एना जेवु सुख संपादन करवु आखा भारत ने तेनां सघळा रमणीय स्थळो जोयां, परंतु कोइ राजाधिराजने त्यां पण मने संपूर्ण सुख जोवामा आव्यु नहीं ज्यां जोयु त्यां आधि, व्याधि अने उपाधि जोवामा आवी आप भणी आवता आपनी प्रशंसा सांभळी एटले हु अहीं आव्यो, अने संतोष पण पाम्यो. आपना जेवी रीद्धि, सत्पुत्र, कमाइ, स्त्री, कुटुंब, घर वगेरे मारा जोवामा क्याय आव्यु नथी आप पोते पण धर्मशील, सद्गुणी अने जिनेश्वरना उत्तम उपासक छो एथी हु एम मानु छउ के आपना जेवु सुख बीजे नथी भारतमा आप विशेष सुखी छो उपासना करीने कदापि देव कने याचु तो आपना जेवी सुखस्थिति याचु

धनाढ्य—पंडितजी, आप एक बहु मर्मभरेला विचारथी नीकळ्या छो, एटले अवश्य आपने जेम छे तेम स्वानुभवी वात कहु छउ, पछी जेम तमारी इच्छा थाय तेम करजो मारे त्यां आपे जे जे सुख जोयां ते ते सुख भारतखंडमां क्याय नथी एम आपे कह्यु तो तेम हशे, पण खरं ए मने संभवतु नथी, मारो सिद्धांत एवो छे के जगतमां कोइ स्थळे वास्तविक सुख नथी जगत दु खथी करीने दाझतु छे तमे मने सुखी जुओ छो परंतु वास्तविक रीते हु सुखी नथी

गाम, बागबगीचा इत्यादि मने देखाडवुं पडशे; ए जोया पछी आगमन कारण कहीश. शेठे एवुं कइ मर्मरूप कारण जाणीने कह्युं, भले, आनंदपूर्वक आपनी इच्छा प्रमाणे करो. जम्या पछी ब्राह्मणे शेठे पोते साथे आवीने धामादिक बतावबा विनति करी. धनाढये ते मान्य राखी, अने पोते साथे जई बागबगीचा, धाम, वैभव ए सघळुं देखाड्युं. शेठनी स्त्री अने पुत्रो पण त्यां ब्राह्मणना जोवामां आव्या. तेओए योग्यतापूर्वक ते ब्राह्मणनो सत्कार कर्यो. एओना रूप, विनय अने स्वच्छता जोइने तेमज तेओनी मधुरवाणी शाभळीने ब्राह्मण राजी थयो. पछी तेनी दुकाननो वहिवट जोयो. तेमां सोएक वहिवटिया त्यां बेठेला जोया. तेओ पण मायाळु, विनयि अने नम्र ते ब्राह्मणना जोवामां आव्या. एथी ते बहु संतुष्ट थयो. एनुं मन अहीं कइक संतोषायुं. सुखी तो जगतमां आज जणाय छे एम तेने लाग्युं.

शिक्षापाठ ६२ सुखविषे विचार भाग २

केवां एनां सुंदर घर छे! केवी सुंदर तेनी स्वच्छता अने जाळवणी छे! केवी शाणी अने मनोज्ञा तेनी सुशीळ स्त्री छे! केवा तेना कांतिमान अने कह्यागरा पुत्रो छे! केवुं संपीलुं तेनुं कुटुंब छे! लक्ष्मीनी महेरपण एने त्यां केवी छे! आखा भारतमां एना जेवो बीजो कोइ सुखी नथी. हवे तप करीने जो हुं मागुं तो आ महाधनाढ्य जेवुंज सघळुं मागुं, बीजी चाहना करुं नहीं.

शरीर कंइ पण करी शके नहीं, अने तुं सां जा अने सुखी था तो पछी आर पण नहीं, माटे ए विचार तारे माडी वाळवो. घणा प्रकारथी तेओने समजावी, सारी स्थितिमां आवीश सारे अवश्य अहीं आवीश, एम वचन दइ जावाबदर हुं पर्यटने नकळी पड्यो

मारब्ध पाछा वळवानी तैयारी थइ दैवयोगे मारी कने एक दमडी पण रही नहोती एक के बे महीना उदर पोषण चाले तेवुं साधन रह्यु नहोतुं छतां जावामां हु गयो, सां मारी बुद्धिए मारब्ध खीलव्यां जे वहाणमां हु बेठो हतो ते वहाणना नाविके मारी चंचळता अने नम्रता जोइने पोताना शेठ आगळ मारां दु खनी वात करी ते शेठे मने बोलावी अमुक काममां गोठव्यो, जेमां हुं मारा पोषणथी चोगणु पेदा करतो हतो. ए वेपारमां मारुं चित्त ज्यारे स्थिर थयु सारे भारतसाथे ए वेपार वधारवा में मयत्न कर्यु, अने तेमा फाव्यो बे वर्षमां पांच लाख जेटली कमाइ थइ. पछी शेठ पासेथी राजी खुशीथी आज्ञा लइ में केटलोक माल खरीदी द्वारिका भणी आववानु कर्यु थोडे काळे सां आवी पहोंच्यो सारे, बहु लोक सन्मान आपवा मने सामा आव्या हता हुं मारां कुटुंबीओने आनंदभावथी जइ मळ्यो तेओ मारा भाग्यनी मशंसा करवा लाग्यां जावेथी लीधेला माले मने एकना पांच कराव्या पंडितजी! सां केटलाक प्रकारथी मारे पाप करवां पड्यां हता, पुरुं खावा पण हुं पाम्यो नहोतो, परंतु एकवार लक्ष्मी साध्य करवानो जे प्रतिज्ञाभाव कर्यो हतो ते मारब्ध योगथी पळ्यो जे दु:खदायक स्थितिमां हु हतो ते दु खमां शुं खामी हती? स्त्री, पुत्र एतो जाणे नहोताज, मावाप आगळथी परलोक पाम्या हतां कुटुंबीओना वियोगवडे अने विना दमडीए जावे जे वखते हुं गयो ते वखतनी स्थिति अज्ञानदृष्टिथी आंखमां आंसु आणी दे तेवी छे, आ वखते

विप्र–आपनु आ कहेवु कोइ अनुभवसिद्ध अने मार्मिक हशे मे अनेक शास्त्रो जोया छे; छता आवा मर्मपूर्वक विचारो लक्षमा लेवा परिश्रमज लीधो नथी. तेम मने एवो अनुभव सर्वने माटे थइने थयो नथी. हवे आपने शु दुःख छे? ते मने कहो

धनाढ्य–पडितजी आपनी इच्छा छे तो हु कहु छउ ते लक्षपूर्वक मनन करवा जेवु छे, अने ए उपरथी कइ रस्तो पामवा जेवु छे.

शिक्षापाठ ६३ सुखविपे विचार भाग ३

जे स्थिति हमणा मारी आप जुवो छो तेवी स्थिति लक्ष्मी, कुटुब अने स्त्री सबधमा आगळ पण हती जे वखतनी हु वात करु छउ, ते वखतने लगभग विश वर्ष थया व्यापार, अने वैभवनी बहोळाश ए सघळु वहिवट अवळो पडवाथी घटवा मड्यु कोट्याधिपति कहेवातो हु उपराचापरी खोटना भार वहन करवाथी लक्ष्मी वगरनो मात्र त्रण वर्पमा थइ पड्यो ज्या केवळ सवळु धारीने नाख्यु हतु त्या अवळु पड्यु एवामा मारी स्त्री पण गुजरी गइ. ते वखतमा मने कइ सतान नहोतु जबरी खोटोने लीधे मारे अहींथी नीकळी जवु पड्यु मारा कुटुबीओए थती रक्षा करी, परतु ते आभ फाट्यानु थीगडु हतु अन्नने अने दातने वेर थयानी स्थितिए, हु बहु आगळ नीकळी पड्यो ज्यारे हु त्याथी नीकळ्यो त्यारे मारा कुटुबीओ मने रोकी राखवा मड्या के तें गामनो दरवाजो पण दीठो नथी, माटे तने जवा दइ शकाय नहीं तारु कोमळ

महीनामां चार दिवस ब्रह्मचर्य, बनतुं गुप्तदान, ए आदिधर्मरूपे मारो काळ गाळुं छुं सर्व व्यवहार संबंधीनी उपाधिमांथी केटलोक भाग घणे अंशे में त्याग्यो छे पुत्रोने व्यवहारमां यथायोग्य करीने हुं निर्ग्रंथ थवानी इच्छा राखुं छउं हमणां निर्ग्रंथ थइ शकुं तेम नथी, एमां संसारमोहिनी के एवुं कारण नथी, परंतु ते पण धर्मसंबंधी कारण छे गृहस्थधर्मना आचरण बहु कनिष्ट थइ गया छे; अने मुनियो ते सुधारी शकता नथी गृहस्थ गृहस्थने विशेष बोध करी शके, आचरणथी पण असर करी शके, एटला माटे थइने धर्मसंबंधे गृहस्थ वर्गने हुं घणे भागे बोधी यमनियममां आणुं छउं दरसप्ताहिके आपणे त्यां पांचसें जेटला सद्गृहस्थोनी सभा भराय छे आठ दिवसनो नवो अनुभव अने बाकीनो आगळनो धर्मानुभव एमने बे त्रण मुहूर्त बोधुं छउं मारी स्त्री धर्मशास्त्रनो केटलोक बोध पामेली होवाथी ते पण स्त्री वर्गने उत्तम यमनियमनो बोध करी सप्ताहिक सभा भरे छे पुत्रो पण शास्त्रनो बनतो परिचय राखे छे विद्वानोनुं सन्मान, अतिथिनो विनय, अने सामान्य सत्यता-एकज भाव-एवा नियमो बहुधा मारा अनुचरो पण सेवे छे. एओ बधा एथी साता भोगवी शके छे लक्ष्मीनी साथे मारा नीति, धर्म, सद्गुण, विनय एणे जनसमुदायने बहु सारी असर करी छे राजासहित पण मारी नीतिवात अंगीकार करे तेवुं थयुं छे आ सघळुं आत्मप्रशंसा माटे हुं कहेतो नथी, ए आपे स्मृतिमां राखवुं, मात्र आपना पूछेला खुलासा दाखल आ सघळुं संक्षेपमां कहेतो जउं छउं

पण धर्ममां लक्ष राख्यु हतु. दिवसनो अमुक भाग तेमा रोकातो हतो; ते लक्ष्मी के एवी लालचे नहीं; परतु ससारदुःखथी ए तारनार साधन छे एम गणीने मोतनो भय क्षण पण दूर नथी, माटे ए कर्त्तव्य जेम बने तेम त्वराथी करी लेवु, ए मारी मुख्य नीति हती. दुराचारथी कइ सुख नथी; मननी तृप्ति नथी; अने आत्मानी मलिनता छे ए तत्त्व भणी में मारु लक्ष दोरेलु हतु

शिक्षापाठ ६४ सुखविषे विचार भाग ४

अही आव्या पछी हु सारा ठेकाणानी कन्या पाम्यो. ते पण सुलक्षणी अने मर्यादशील नीवडी; ए वडे करीने मारे त्रण पुत्र थया. वहिवट प्रबळ होवाथी अने नाणु नाणाने वधारतु होवाथी दश वर्षमा हु महाकोट्याधिपति थइ पड्यो. पुत्रना नीति, विचार, अने बुद्धि उत्तम रहेवा में बहु सुदर साधनो गोठव्या. जेथी, तेओ आ स्थिति पाम्या छे. मारा कुटुबीओने योग्य योग्य स्थळे गोठवी तेओनी स्थितिने सुधरती करी दुकानना में अमुक नियमो बाध्या उत्तम धामनो आरभ पण करी लीधो आ फक्त एक ममत्व खातर कर्यु गयेलु पाछु मेळव्यु, अने कुळ परपरानु नामाकितपणु जतु अटकाव्यु, एम कहेवराववा माटे आ सघळु कर्यु; एने हु सुख मानतो नथी. जोके हु बीजा करता सुखी छउ, तोपण ए सातावेदनीय छे; सत्सुख नथी. जगतमा बहुधा करीने असाता-वेदनीय छे में धर्ममा मारो काळ गाळवानो नियम राख्यो छे. सत्शास्त्रोना वाचनमनन, सत्पुरुषोना समागम, यमनियम,

छे, शत्रु-मित्र प्रत्ये जे समान दृष्टिवाळा छे अने शुद्ध आत्मध्यानमां जेमनो काळ निर्गमन थाय छे, अथवा स्वाध्याय ध्यानमां ज लीन छे, एवा जितेंद्रिय अने जितकषाय ते निर्ग्रंथो परम सुखी छे

सर्व घनघाती कर्मनो क्षय जेमणे कर्यो छे, चार कर्म पातळां जेनां पड्यां छे जे मुक्त छे, जे अनंतज्ञानी अने अनंतदर्शी छे ते तो संपूर्ण सुखीज छे मोक्षमां तेओ अनंत जीवनना अनंतसुखमां सर्व कर्मविरक्तताथी विराजे छे

आम सत्पुरुषोए कहेलो मत मने मान्य छे पहेलो तो मने त्याज्य छे बीजो हमणां मान्य छे, अने घणे भागे ए ग्रहण करवानो मारो बोध छे त्रीजो बहु मान्य छे अने चोथो तो सर्वमान्य अने सच्चिदानंद स्वरूप छे

एम पंडितजी आपनी अने मारी सुखसंबंधी वातचित थई प्रसंगोपात ते वात चर्चता जईशुं तेपर विचार करीशुं आ विचारो आपने कह्याथी मने बहु आनंद थयो छे आप एवा विचारने अनुकूळ थया एथी वळी आनंदमां वृद्धि थई छे एम परस्पर वातचित करतां करतां हर्षभेर पछी तेओ समाधिभावथी शयन करी गया

जे विवेकीओ आ सुखसंबंधी विचार करशे तेओ बहु तत्त्व अने आत्मश्रेणिनी उत्कृष्टताने पामशे एमां कहेला अल्पारंभी, निरारंभी अने सर्वमुक्त लक्षणो लक्षपूर्वक मनन करवा जेवां छे जेम बने तेम अल्पारंभी थई समभावथी जनसमुदायना हित भणी वळवुं, परोपकार, दया, शांति, क्षमा अने पवित्रतानुं सेवन करवुं ए बहु सुखदायक छे निर्ग्रंथता विषे तो विशेष कहेवानुं नथी मुक्तात्मा अनंत सुखमयज छे

शिक्षापाठ ६५ सुखविषे विचार भाग ५

आ सघळा उपरथी हु सुखी छउ एम आपने लागी शकशे, अने सामान्य विचारे मने बहु सुखी मानो तो मानी शकाय तेम छे धर्म, शील अने नीतिथी तेमज शास्त्रावधानथी मने जे आनद उपजे छे ते अवर्णनीय छे पण तत्त्वदृष्टिथी हु सुखी न मनाउ ज्या सुधी सर्व प्रकारे बाह्य अने अभ्यतर परिग्रह मे त्याग्यो नथी, त्या सुधी, राग दोषनो भाव छे. जो के ते बहु अशे नथी, पण छे; तो त्या उपाधि पण छे सर्वसग परित्याग करवानी मारी सपूर्ण आकाक्षा छे; पण ज्या सुधी तेम थयु नथी त्या सुधी कोइ प्रियजननो वियोग, व्यवहारमा हानि, कुटुबीनु दुःख ए थोडे अशे पण उपाधि आपी शके. पोताना देहपर मोत शिवाय पण नाना प्रकारना रोगनो सभव छे. माटे केवळ निर्ग्रथ, बाह्याभ्यतर परिग्रहनो त्याग, अल्पारभनो त्याग ए सघळु नथी थयु त्या सुधी, हु मने केवळ सुखी मानतो नथी हवे आपने तत्त्वनी दृष्टिए विचारता मालम पडशे के लक्ष्मी, स्त्री, पुत्र के कुटुब एवडे सुख नथी. अने एने सुख गणु तो ज्यारे मारी स्थिति पतित थइ हती त्यारे ए सुख क्या गयु हतु? जेनो वियोग छे, जे क्षणभगुर छे अने ज्या अव्याबाध पणु नथी ते सपूर्ण के वास्तविक सुख नथी एटला माटे थइने हु मने सुखी कही शकतो नथी हु बहु विचारी विचारी व्यापार वहिवट करतो हतो, तोपण मारे आरभोपाधि, अनीति अने लेश पण कपट सेववु पड्यु नथी, एम तो नथीज अनेक प्रकारना आरभ, अने कपट मारे सेववा पड्या हता आप जो धारता हो के देवोपासनथी लक्ष्मी प्राप्त करवी, तो ते जो पुण्य न होय तो कोइ काळे मळनार नथी पुण्यथी पामेली लक्ष्मीवडे महारभ, कपट

शिक्षापाठ ६८ जितेंद्रियता

ज्यां सुधी जीभ स्वादिष्ट भोजन चाहे छे, ज्यां सुधी नासिका सुगंध चाहे छे, ज्यां सुधी कान वारांगना आदिनां गायन अने वाजिंत्र चाहे छे, ज्यां सुधी आंख वनोपवन जोवानुं लक्ष राखे छे, ज्यां सुधी त्वचा सुगंधीलेपन चाहे छे, त्यां सुधी ते मनुष्य निरागी, निर्ग्रंथ, निःपरिग्रही, निरारंभी अने ब्रह्मचारी थई शकतो नथी मनने वश करवुं ए सर्वोत्तम छे एना वडे सघळी इंद्रियो वश करी शकाय छे. मन जीतवुं बहु दुर्घट छे एक समयमां असंख्याता योजन चालनार अश्व ते मन छे एने थकाववुं बहु दुर्लभ छे एनी गति चपळ अने न झाली शकाय तेवी छे महा ज्ञानिओए ज्ञानरूपी लगामवडे करीने एने स्थंभित राखी सर्व जय कर्यो छे

उत्तराध्ययन सूत्रमां नमिराज महर्षिए शक्रेंद्रमत्ये एम कह्युं के दश लाख सुभटने जीतनार कइक पड्या छे; परंतु स्वात्माने जीतनारा बहु दुर्लभ छे, अने ते दश लाख सुभटने जीतनार करतां अत्युत्तम छे

मनज सर्वोपाधिनी जन्मदाता भूमिका छे मनज बंध अने मोक्षनुं कारण छे मनज सर्व संसारनी मोहिनी रूप छे ए वश थतां आत्मस्वरूपने पामवुं लेश मात्र दुर्लभ नथी

मनवडे इंद्रियोनी लोलुपता छे भोजन, वाजित्र, सुगंधी, स्त्रीनुं निरीक्षण, सुंदर विलेपन ए सघळुं मनज मागे छे ए मोहिनी आडे ते धर्मने संभारवा पण देतुं नथी संभार्या पछी सावधान थवा देतुं नथी सावधान थया पछी पतितता करवामां प्रवृत्त थाय छे एमां नथी फावतुं त्यारे सावधानीमां कंइ न्यूनता पहोंचाडे छे. जेओ ए

शिक्षापाठ ६७ अमूल्य तत्त्वविचार

हरिगीत छंद

बहु पुण्यकेरा पुजथी शुभ देह मानवनो मळ्यो,
तोये अरे! भवचक्रनो आटो नहि एक्के टळ्यो;
सुख प्राप्त करता सुख टळे छे लेश ए लक्षे लहो,
क्षण क्षण भयकर भावमरणे का अहो राची रहो? १

लक्ष्मी अने अधिकार वधता, शु वध्यु ते तो कहो?
शु कुटुब के परिवारथी वधवापणु, ए नय ग्रहो
वधवापणु ससारनु नर देहने हारी जवो,
एनो विचार नही अहोहो! एक पळ तमने हवो!!! २

निर्दोष सुख निर्दोष आनद, ल्यो गमे त्याथी भले,
ए दिव्यशक्तिमान् जेथी जजिरेथी नीकळे!
परवस्तुमा नहि मुझवो, एनी दया मुजने रही,
ए त्यागवा सिद्धात के पश्चातदुःख ते सुख नही. ३

हु कोण छु? क्याथी थयो? शु स्वरूप छे मारु खरु?
कोना सबधे वळगणा छे? राखु के ए परिहरु?
एना विचार विवेक पूर्वक शात भावे जो कर्या,
तो सर्व आत्मिकज्ञानना सिद्धाततत्त्व अनुभव्या. ४

ते प्राप्त करवा वचन कोनु सत्य केवळ मानवु?
निर्दोष नरनु कथन मानो तेह जेणे अनुभव्यु
रे! आत्म तारो! आत्म तारो! शीघ्र एने ओळखो;
सर्वात्ममा समदृष्टि द्यो आ वचनने हृदये लखो ५

अने दरागना ए प्रत्येकना पाछा ने ने भेद छे एकतो मूळ अने बीजी स्त्रीनी मूर्ति के चित्र. एथी गमे ते प्रकारनी स्त्री ज्या होय त्या ब्रह्मचारी साधुए न रहेवु, कमके ए विकार हेतु छे पशु एटले तिर्यचिणी गाय भेंस इत्यादिक जे स्थळे होय ते स्थळे न रहेवु अने पडग एटले नपुसक एनो वास होय त्यां पण न रहेवु एवा प्रकारनो वास ब्रह्मचर्यनी हानि करे छे तेओना कामचेष्टा हावभाव इत्यादिक विकारो मनने भ्रष्ट करे छे

२ कथा—मात्र एकली स्त्रियोनेज के एकज स्त्रीने धर्मोपदेश ब्रह्मचारीए न करवो कथा ए मोहनी उत्पत्ति रूप छे ब्रह्मचारीए स्त्रीना रूप कामविलास सबधी ग्रथो वाचवा नहीं, तेमज जेथी चित्त चळे एवा प्रकारनी गमे ते शृगार संबधी कथा ब्रह्मचारीए करवी नहीं

३ आसन—स्त्रियोनी साथे एक आसने न बेसवु, तेमज ज्या स्त्री बेठी होय त्या बे घडी मुधीमा ब्रह्मचारीए न बेसवु ए स्त्रियोनी स्मृतिनु कारण छे, एथी विकारनी उत्पत्ति थाय छे एम भगवाने कह्यु छे

४ इंद्रियनिरिक्षण—स्त्रीओना अगोपाग ब्रह्मचारी साधुए न जोवा, न निरखवा एना अमुक अंगपर दृष्टि एकाग्र थवाथी विकारनी उत्पत्ति थाय छे

५ कुड्यातर—भीत, कनात के त्राटानो अंतरपट राखी स्त्री-पुरुष ज्यां मैथुन सेवे त्या ब्रह्मचारीए रहेवु नहीं कारण शब्द, चेष्टादिक विकारना कारण छे

६ पूर्वक्रिडा—पोते गृहस्थावासमां गमे तेवी जातना शृगारथी विषयक्रीडा करी होय तेनी स्मृति करवी नहीं, तेम करवाथी ब्रह्मचर्य भग थाय छे

न्यूनता पण न पामता अडग्ग रहीने ते मनने जीते छे तेओ सर्वथा सिद्धिने पामे छे.

मन कोइथीज अकस्मात् जीती शकाय छे, नही तो गृहस्थाश्रमे अभ्यासे करीने जीताय छे; ए अभ्यास निर्ग्रंथतामां बहु थइ शके छे; छता सामान्य परिचय करवा मागीए तो तेनो मुख्य मार्ग आ छे के ते जे दुरिच्छा करे तेने भूली जवी, तेम करवु नहीं. ते ज्यारे शब्दस्पर्शादि विलास इच्छे, त्यारे आपवा नही टुकामा आपणे एथी दोरावु नही पण आपणे एने दोरवु; मोक्षमार्ग चिंतव्यामा रोकवु. जितेंद्रियता विना सर्व प्रकारनी उपाधि उभीज रही छे त्यागे न त्याग्या जेवो थाय छे, लोक लज्जाए तेने सेववो पडे छे माटे अभ्यासे करीने पण मनने स्वाधीनतामा लई अवश्य आत्महित करवु.

शिक्षापाठ ६९ ब्रह्मचर्यनी नव वाड

ज्ञानीओए थोडा शब्दोमा केवा भेद अने केवु स्वरुप बतावेल छे? ए वडे केटली बधी आत्मोन्नति थाय छे! ब्रह्मचर्य जेवा गंभिर विषयनु स्वरुप सक्षेपमा अति चमत्कारिक रीते आप्यु छे. ब्रह्मचर्यरुपी एक सुंदर झाड अने तेने रक्षा करनारी जे नव विधियो तेने वाडनु रुप आपी आचार पाळवामा विशेष स्मृति रही शके एवी सरळता करी छे ए नव वाड जेम छे तेम अही कही जउ छउ.

१ वसति—ब्रह्मचारी साधुए स्त्री, पशु के पडग एथी सयुक्त वसतिमा रहेवु नहीं. स्त्री बे प्रकारनी छे;—मनुष्यिणी

मनोहर मुख, कंचनवर्णी काया, अने चंद्र जेवी कांति जोईने बहु आनंद पाम्या, अने माथुं धुणाव्युं आ जोईने चक्रवर्तीए पूछ्युं तमे माथु शा माटे धुणाव्युं? देवोए कह्युं, अमे तमारां रूप अने वर्ण निरखवा माटे बहु अभिलाषी हता स्थळे स्थळे तमारा वर्ण रूपनी स्तुति सांभळी हती आजे अमे ते प्रत्यक्ष जोयु, जेथी अमने पूर्ण आनंद उपज्यो माथु धुणाव्यु एनुं कारण ए के जेवुं लोकोमां कहेवाय छे तेवुंज रूप छे एथी विशेष छे पण ओछुं नथी सनत्कुमार स्वरूपवर्णनी स्तुतिथी प्रभुत्व लावी बोल्यो, तमे आ वेळा मारुं रूप जोयुं ते भले, परन्तु हुं राजसभामां वस्त्रालंकार धारण करी, केवळ सज्ज थइने ज्यारे सिंहासनपर बेसुं छउं त्यारे, मारुं रूप अने मारो वर्ण जोवा योग्य छे अत्यारे तो हुं खेळभरी कायाए बेठो छउं जो ते वेळा तमे मारां रूप वर्ण जुओ तो अद्भुत चमत्कारने पामो अने चकित थइ जाओ देवोए कह्युं, त्यारे पछी अमे राजसभामां आवीशुं, एम कहीने त्यांथी चाल्या गया सनत्कुमारे त्यार पछी उत्तम वस्त्रालंकारो धारण कर्यां अनेक उपचारथी जेम पोतानी काया विशेष आश्चर्यता उपजावे तेम करीने ते राजसभामां आवी सिंहासनपर बेठो आजुबाजु समर्थ मन्त्रियो, सुभटो, विद्वानो अने अन्य सभासदो योग्य आसने बेसी गया हता राजेश्वर चामर छत्रथी विंझातो अने खमा खमाथी वधावातो विशेष शोभी रह्यो छे, त्यां पेला देवताओ पाछा विप्ररूपे आव्या अद्भुत रूपवर्णथी आनंद पामवाने बदले जाणे खेद पाम्या छे एवा स्वरूपमां तेओए माथुं धुणाव्यु चक्रवर्तीए पूछ्युं, अहो ब्राह्मणो! गइ वेळा करतां आ वेळा तमे जुदा स्वरूपमां माथु धुणाव्यु एनु शु कारण छे, ते मने कहो अवधिज्ञानानुसार विप्रे कह्युं के हे, महाराजा! ते रूपमां अने आ रूपमां भूमि आकाशनो फेर पडी गयो छे चक्रवर्तीए ते स्पष्ट

७ प्रणीत—दूध, दही, घृतादि मधुरा अने चीकाशवाळा पदार्थोनो बहुधा आहार न करवो एथी वीर्यनी वृद्धि अने उन्माद थाय छे अने तेथी कामनी उत्पत्ति थाय छे माटे ब्रह्मचारीए तेम करवु नही

८ अतिमात्राहार—पेट भरीने अतिमात्राहार करवो नही; तेम अति मात्रानी उत्पत्ति थाय तेम करवु नही. एथी पण विकार वधे छे.

९ विभूषण—स्नान, विलेपन करवा नही, तेमज पुष्पादिक ब्रह्मचारीए ग्रहण करवु नही. एथी ब्रह्मचर्यने हानि उत्पन्न थाय छे

एम विशुद्ध ब्रह्मचर्यने माटे भगवते नव वाड कही छे बहुधा ए तमारा साभळवामा आवी हशे, परतु गृहस्थावासमा अमुक अमुक दिवस ब्रह्मचर्य धारण करवामा अभ्यासीओने लक्षमा रहेवा अही आगळ कइक समजपूर्वक कही छे

शिक्षापाठ ७० सनत्कुमार भाग १

चक्रवर्त्तीना वैभवमा शी खामी होय? सनत्कुमार ए चक्रवर्त्ती हता तेना वर्ण अने रूप अत्युत्तम हता एक वेळा सुधर्मसभामा ते रूपनी स्तुति थइ; कोइ बे देवोने ते वात रुची नही, पछी तेओ ते शका टाळवाने विप्ररूप सनत्कुमारना अत पुरमा गया सनत्कुमारनो देह ते वेळा खेळथी भर्यो हतो तेने अग मर्दनादिक पदार्थोनु मात्र विलेपन हतु तेणे एक नानु पचीयु पहेर्यु हतु. अने ते स्नान मज्जन करवा माटे बेठा हता. विप्ररूपे आवेला देवता तेनु

सनत्कुमारे थुंकवाळी अंगुलि करी ते रोगने खरडी के तत्काळ ते रोगनो नाश थयो; अने काया पाछी हती तेवी बनी गई. पछी ते वेळा देवे पोतानुं स्वरूप प्रकाश्युं, धन्यवाद गाई वंदन करी ते पोताने स्थानके गयो.

रक्तपीत्त जेवा सदैव लोही परुथी गदगदता, महारोगनी उत्पत्ति जे कायामां छे, पळमां विणसी जवानो जेनो स्वभाव छे, जे प्रत्येक रोमे पोणा बब्बे रोगवाळी होइ रोगनो भंडार छे, अन्नादिकनी न्यूनाधिकताथी जे प्रत्येक कायामां देखाव दे छे, मळमूत्र, नर्क, हाड, मांस, परु अने श्लेष्मथी जेनुं बंधारण टक्युं छे, त्वचाथी मात्र जेनी मनोहरता छे ते कायानो मोह खरे! विभ्रमज छे. सनत्कुमारे जेनुं लेशमात्र मान कर्युं ते पण जेथी सहरायुं नहीं ते कायामां अहो पामर! तुं शुं मोहे छे? ए मोह मंगळदायक नथी.

शिक्षापाठ ७२ बत्रीश योग

सत्पुरुषो नीचेना बत्रीश योगनो संग्रह करी आत्माने उज्ज्वळ करवानुं कहे छे.

१ मोक्षसाधकयोग माटे शिष्ये आचार्य प्रत्ये आलोचना करवी.

२ आचार्ये आलोचना बीजा पासे प्रकाशवी नहीं.

३ आपत्तिकाळे पण धर्मनुं दृढपणुं त्यागवुं नहीं.

४ आ लोक, परलोकना सुखनां फळनी वांछना विना तप करवुं.

समजाववाने कह्यु ब्राह्मणोए कह्यु, अधिराज! तमारी काया प्रथम अमृततुल्य हती, आ वेळा झेर तुल्य छे. ज्यारे अमृततुल्य अंग हतु सारे आनंद पाम्या, अने आ वेळा झेर तुल्य छे सारे खेद पाम्या अमे कहीए छीए ते वातनी सिद्धता करवी होय तो तमे तांबुल थुंको, तत्काळ ते पर माखी बेसशे अने ते परलोक पहोंची जशे.

शिक्षापाठ ७१ सनत्कुमार भाग २

सनत्कुमारे ए परीक्षा करी तो सत्य ठरी पूर्वित कर्मना पापनो जे भाग तेमा आ कायाना मद सबंधीनु मेळवण थवाथी ए चक्रवर्तीनी काया झेरमय थइ गइ हती विनाशी अने अशुचिमय कायानो आवो प्रपच जोइने सनत्कुमारने अतःकरणमा वैराग्य उत्पन्न थयो आ संसार केवळ तजवा योग्य छे. आवीने आवी अशुचि स्त्री, पुत्र, मित्रादिकना शरीरमा रही छे. ए सघळु मोह मान करवा योग्य नथी, एम विचारीने ते छ खडनी प्रभुता सागी चाली नीकळ्या साधुरुपे ज्यारे विचरता हता सारे तेओने महारोग उत्पन्न थयो. तेना ससलनी परीक्षा लेवाने कोइ देव त्यां वैद्यरुपे आव्यो. साधुने कह्यु, हु बहु कुशळ राजवैद छउं तमारी काया रोगनो भोग थयेली छे जो इच्छा होय तो तत्काळ हु ते रोगने टाळी आपु. साधु बोल्या, हे वैद्य! कर्मरुपी रोग महोन्मत्त छे; ए रोग टाळवानी तमारी जो समर्थता होय तो भले मारो ए रोग टाळो, ए समर्थता न होय तो आ रोग भले रह्यो देवता बोल्यो, ए रोग टाळवानी [illegible]नुथी साधुए पोतानी लब्धिना परिपूर्ण

२३ मूळ गुणे पंचमहाव्रत विशुद्ध पाळवां

२४ उत्तर गुणे पंचमहाव्रत विशुद्ध पाळवां.

२५ उत्साहपूर्वक कायोत्सर्ग करवो

२६ प्रमादरहित ज्ञान ध्यानमां प्रवर्त्तन करवुं

२७ हमेशां आत्मचारित्रमां सूक्ष्म उपयोगथी वर्त्तवुं

२८ ध्यान, जितेंद्रियता अर्थे एकाग्रतापूर्वक करवुं

२९ मरणांत दुःखथी पण भय पामवो नहीं.

३० स्त्रियादिकनां संगने त्यागवो.

३१ प्रायश्चित विशुद्धि करवी

३२ मरणकाळे आराधना करवी

ए एकेका योग अमूल्य छे सघळा संग्रह करनार परिणामे अनंत सुखने पामे छे

शिक्षापाठ ७३ मोक्ष सुख

आ जगत मंडळपर केटलीक एवी वस्तुओ अने मनेच्छा रही छे के जे केटलाक अंशे जाणता छतां कही शकाती नथी छतां ए वस्तुओ कंइ संपूर्ण शाश्वत के अनंत भेदवाळी नथी एवी वस्तुनुं ज्यारे वर्णन न थइ शके त्यारे अनंत सुखमय मोक्ष संबंधी तो उपमा क्यांथीज मळे ! भगवानने गौतमस्वामीए मोक्षना अनंत सुखविषे

५ शिक्षा मळी ते प्रमाणे यतनाथी वर्त्तवु, अने नवी शिक्षा विवेकथी गृहण करवी.

६ ममत्वनो त्याग करवो

७ गुप्त तप करवु.

८ निर्लोभता राखवी.

९ परिषह उपसर्गने जीतवा

१० सरळ चित्त राखवु

११ आत्मसंयम शुद्ध पाळवो

१२ समकित शुद्ध राखवु

१३ चित्तनी एकाग्र समाधि राखवी

१४ कपटरहित आचार पाळवो.

१५ विनय करवा योग्य पुरुषोनो यथायोग्य विनय करवो

१६ संतोषथी करीने तृष्णानी मर्यादा टुकी करी नाखवी

१७ वैराग्यभावनामा निमग्न रहेवु

१८ मायारहित वर्त्तवु

१९ शुद्ध करणीमा सावधान थवु

२०. सम्वरने आदरवो अने पापने रोकवा

२१. पोताना दोष सम्भावपूर्वक टाळवा

२२. सर्व प्रकारना विषयथी विरक्त रहेवु

कुटुंबीओ—एम होय के? आ शहरमां, छोप, गोखे जेमां मजाना पड्यां छे, त्यां कोइ एवी जोवा लायक वस्तु हती?

भील—नहीं, भाइ, एवी चीज तो अही एके नथी एना सोमा भागनी के हजारमा भागनी पण मनोहर चीज अहीं नथी

कुटुंबीओ—त्यारे तो तु बोल्या विना बेठो रहे तने भ्रमणा थइ छे, आथी ते पछी सारुं शु हशे?

हे गौतम! जेम ए भील राजवैभवसुख भोगवी आव्यो हतो, तेमज जाणतो हतो, छतां उपमा योग्य वस्तु नहीं मळ्याथी ते क' कही शकतो नहतो, तेम अनुपमेय मोक्षने, सच्चिदानंद स्वरूपमय निर्विकारी मोक्षना सुखना असख्यातमा भागने पण योग्य उपमेय नही मळ्याथी हु तने कही शकतो नथी

मोक्षना स्वरूप विषे शंका करनारा तो कुतर्कवादी छे, एओने क्षणिक सुखसबधी विचार आडे सतसुखनो विचार क्याथी आवे? कोइ आत्मिकज्ञानहीन एम पण कहे छ के आथी कोइ विशेष सुखनु साधन त्या रहु नहि एटले अनत अव्याबाध सुख कही दे छे. आ एनु कथन विवेकी नथी निद्रा प्रत्येक मानवीने प्रिय छे, पण तेमां तेओ कइ जाणी के देखी शकता नथी, अने जाणवामा आवे तो मात्र स्वप्नोपाधिनु मिथ्यापणु आवे, जनी कंइ असर पण थाय ए स्वप्ना वगरनी निद्रा जेमा सूक्ष्मस्थूळ सर्व जाणी अने देखी शकाय, अने निरुपाधिथी शात उघ लइ शकाय तो तेनुं ते वर्णन शु करी शके? एने उपमा पण शी आपे? आ तो स्थूळ दृष्टात छे, पण बाळविवेकी ए परथी कइ विचार करी शके ए माटे कयुं छे

भीलनु दृष्टात, समजाववा रूप भाषाभेद फेरफारथी तमने कही बताव्यु

प्रश्न कर्यु त्यारे भगवाने उत्तरमा कह्यु, गौतम! ए अनतसुख हु जाणु छउ, पण ते कही शकाय एवी अही आगळ कइ उपमा नथी जगतमां ए सुखना तुल्य कोइपण वस्तु के सुख नथी, एम वदी एक भीलनु दृष्टांत नीचेना भावमा आप्यु हतु

एक जगलमा एक भद्रिक भील तेनां बाळबच्चा सहित रहेतो हतो शहेर वगेरेनी समृद्धिनी उपाधिनु तेने लेश भान पण नहोतु एक दिवस कोइ राजा अश्वक्रीडा माटे फरतो फरतो त्या नीकळी आव्यो, तेने बहु तृषा लागी हती; जेथी करीने सानवडे भील आगळ पाणी माग्यु भीले पाणी आप्यु शीतळ जळथी राजा सतोषायो पोताने भील तरफथी मळेलां अमूल्य जळदाननो प्रत्युपकार करवा माटे भीलने समजावीने साथे लीधो नगरमा आव्या पछी तेणे भीलने तेनी जीदगीमा नही जोयेली वस्तुमा राख्यो सुदर महेलमा, कने अनेक अनुचरो, मनोहर छत्रपलग, अने स्वादिष्ट भोजनथी मदमद पवनमा, सुगधी विलेपनमा तेने आनद आनद करी आप्यो विविध जातिना हीरामाणेक, मौक्तिक, मणिरत्न अने रग बेरगी अमूल्य चीजो निरतर ते भीलने जोवा माटे मोकल्या करे; बागबगीचामा फरवा हरवा मोकले. एम राजा तेने सुख आप्या करतो हतो कोइ राते बधां सूइ रह्या हता, त्यारे ते भीलने बाळबच्चा सामरी आव्या एटले ते त्याथी कइ लीधा कर्याविगर एकाएक नीकळी पड्यो जइने पोताना कुटुंबीने मळ्यो ते बधाये मळीने पूछ्यु के तु क्या हतो? भीले कह्यु, बहु सुखमा; त्यां में बहु वखाणवा लायक वस्तुओ जोइ.

कुटुंबीओ—पण ते केवी? ते तो अमने कहे

भील—शु कहु अहीं एवी एके वस्तुज नथी

कर्मविपाक चिंतन भेद छे ४ संस्थानविचय-त्रणलोकनुं स्वरूप चिंतववुं ते. लोकस्वरूप सुप्रतिष्ठितने आकारे छे, जीव अजीव करीने संपूर्ण भरपुर छे. असंख्यात योजननी कोटानुकोटीए त्रिच्छो लोक छे, ज्यां असंख्याता द्वीप—समुद्र छे. असंख्याता ज्योतिषिय, वाणव्यंतरादिकना निवास छे. उत्पाद, व्यय अने ध्रुवतानी विचित्रता एमां लागी पडी छे. अढीद्वीपमां जघन्य तीर्थंकर २०, उत्कृष्टा एकसो सीत्तेर होय. तेओ तथा केवळी भगवान अने निर्ग्रंथ मुनिराज विचरे छे, तेओने "वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, समाणेमि, कल्लाणं, मंगळं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि" एम तेमज त्यां वसतां श्रावक, श्राविकाना गुणग्राम करीए. ते त्रिछालोकथकी असंख्यात गुणो अधिक ऊर्द्ध लोक छे. त्यां अनेक प्रकारना देवताओना निवास छे. पछी इषत् प्राग्भारा छे. ते पछी मुक्तात्माओ विराजे छे. तेने "वंदामि, यावत् पज्जुवासामि." ते ऊर्द्ध लोकथी कंइक विशेष अधो लोक छे, त्यां अनंत दुःखथी भरेला नर्कावास अने भुवन पतिनां भुवनादिक छे. ए त्रण लोकनां सर्व स्थानक आ आत्माए सम्यकत्व रहितकरणोथी अनंतिवार जन्ममरण करी स्पर्शी मूक्यां छे, एम जे चिंतन करवुं ते संस्थान विचय नामे धर्मध्याननो चोथो भेद छे. ए चार भेद विचारीने सम्यकत्व सहित श्रुत अने चारित्र धर्मनी आराधना करवी. जेथी ए अनंत जन्म मरण टळे. ए धर्मध्यानना चार भेद स्मरणमां राखवा.

शिक्षापाठ ७४ धर्मध्यान भाग १

भगवाने चार प्रकारनां ध्यान कह्या छे. आर्त्त, रौद्र, धर्म अने शुक्ल पहेला बे ध्यान त्यागवा योग्य छे पाछळना बे ध्यान आत्मसार्थकरूप छे श्रुतज्ञानना भेद जाणवा माटे, शास्त्र विचारमा कुशळ थवा माटे, निर्ग्रंथप्रवचननु तत्त्व पामवा माटे, सत्पुरुषोए सेववा योग्य, विचारवा योग्य अने ग्रहण करवा योग्य धर्मध्यानना मुख्य सोळ भेद छे. पहेला चार भेद कहु छउ १ आणाविजय (आज्ञाविचय) २ अवायविजय (अपायविचय) ३ विवागविजय (विपाकविचय.) ४ सठाणविजय (संस्थानविचय) १ आज्ञाविचय–आज्ञा एटले सर्वज्ञ भगवाने धर्मतत्त्व सबधी जे जे कह्यु छे ते ते सत्य छे; एमा शका करवा जेवु नथी; काळनी हीनताथी, उत्तम ज्ञानना विच्छेद जवाथी, बुद्धिनी मदताथी के एवा अन्य कोई कारणथी मारा समजवामा ते तत्त्व आवतु नथी परंतु अर्हंत भगवते अश मात्र पण माया युक्त के असत्य कह्यु नथीज, कारण एओ नीरागी, त्यागी, अने निस्पृही हता मृषा कहेवानु कई कारण एमने हतु नहीं तेम एओ सर्वज्ञ सर्वदर्शी होवाथी अज्ञानथी पण मृषा कहे नही, ज्या अज्ञानज नथी, त्या ए सबधी मृषा क्याथी होय? एवु जे चिंतन करवु ते 'आज्ञाविचय' नामनो प्रथम भेद छे २ अपायविचय–राग, द्वेष, काम, क्रोध ए वगेरेथीज जीवने जे दु.ख उत्पन्न थाय छे तेथीज तेने भवमा भटकवु पडे छे तेनु जे चिंतवन करवु ते 'अपायविचय' नामे बीजो भेद छे अपाय एटले दुःख ३ विपाकविचय–हु क्षणे क्षणे जे जे दुःख सहन करु छउ, भवाटविमा पर्यटन करु छउ, अज्ञानादिक पामु छउ, ते सघळु कर्मनां फळना उदय वडे छे, एम चिंतववु ते धर्म ध्याननो त्रीजो

सत्पुरुष समीपे सूत्र तत्त्वनु वाचन लइए तेनु नाम वाचना आलंबन २ पृच्छना अपूर्व ज्ञान पामवा माटे, जिनेश्वर भगवतनो मार्ग दीपाववाने तथा शंकाशल्य निवारवाने माटे तेमज अन्यना तत्त्वनी मध्यस्थ परीक्षाने माटे यथायोग्य विनय सहित गुर्वादिकने प्रश्न पूछीए तेने पृच्छना कहीए ३ परावर्त्तना—पूर्वे जिनभाषित सूत्रार्थ जे भण्या होइए ते स्मरणमां रहेवा माटे, निर्जराने अर्थे शुद्ध उपयोग सहित शुद्ध सूत्रार्थनी वारवार सज्झाय करीए तेनु नाम परावर्त्तनालंबन ४ धर्मकथा—वीतराग भगवाने जे भाव जेवा प्रणीत कर्या छे ते भाव तेवा लइने, ग्रहीने, विशेषे करीने, निश्चय करीने, शंका, कंखा अने वितिगिछा रहितपणे, पोतानी निर्जराने अर्थे सभामध्ये ते भाव तेवा प्रणीत करीए के जेथी सांभळनार, सद्दहनार बन्ने भगवतनी आज्ञाना आराधक थाय, ए धर्मकथालंबन कहीए ए धर्मध्यानना चार आलंबन कहेवायां धर्मध्याननी चार अनुप्रेक्षा कहु छउं १ एकत्वानुप्रेक्षा २ अनित्यानुप्रेक्षा ३ अशरणानुप्रेक्षा ४ संसारानुप्रेक्षा ए चारेनो बोध बार भावनाना पाठमां कहेवाइ गयो छे ते तमने स्मरणमां हशे

शिक्षापाठ ७६ धर्मध्यान भाग ३

धर्मध्यान पूर्वाचार्योए अने आधुनिक मुनीश्वरोए पण विस्तारपूर्वक बहु समजाव्यु छे ए ध्यानवडे करीने आत्मा मुनित्वभावमां निरंतर प्रवेश करे छे

जे जे नियमो एटले भेद, लक्षण, आलंबन अने अनुप्रेक्षा कह्या ते बहु मनन करवा जेवा छे अन्य मुनीश्वरोना कहेवा प्रमाणे में

शिक्षापाठ ७५ धर्मध्यान भाग २

धर्मध्याननां चार लक्षण कहुं छउं आज्ञारुचि—एटले वीतराग भगवाननी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे ते २ निसर्ग रुचि—आत्मा स्वाभाविकपणे जातिस्मरणादिक ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म धरवानी रुचि पामे तेने निसर्ग रुचि कही छे ३ सूत्र रुचि—श्रुतज्ञान, अने अनंत तत्त्वना भेदने माटे भाखेला भगवानना पवित्र वचनोनुं जेमां गुंथन थयुं छे, ते सूत्र श्रवण करवा, मनन करवा, अने भावथी पठन करवानी रुचि उपजे ते सूत्र रुचि ४ उपदेश रुचि—अज्ञाने करीने उपार्जेला कर्म ज्ञाने करीने खपावीए, तेमज ज्ञानवडे करीने नवां कर्म न बांधीए मिथ्यात्वे करीने उपार्ज्यां कर्म ते सम्यग्भावथी खपावीए, सम्यग्भावथी नवां कर्म न बांधीए अवैराग्य करीने उपार्ज्यां कर्म ते वैराग्ये करीने खपावीए अने वैराग्यवडे करीने पाछां नवां कर्म न बांधीए कषाये करी उपार्ज्यां कर्म ते कषाय टाळीने खपावीए, क्षमादिथी नवां कर्म न बांधीए. अशुभ योगे करी उपार्ज्यां कर्म ते शुभ योगे करी खपावीए, शुभ योगे करी नवां कर्म न बांधीए. पांच इंद्रियना स्वादरूप आश्रवे करी उपार्ज्यां कर्म ते संवरे करी खपावीए तपरूप (इच्छारोध) संवरे करी नवां कर्म न बांधीए ते माटे अज्ञानादिक आश्रवमार्ग छांडीने ज्ञानादिक संवर मार्ग ग्रहण करवा माटे तीर्थंकर भगवंतनो उपदेश सांभळवानी रुचि उपजे तेने उपदेश रुचि कहीए ए धर्मध्यानना चार लक्षण कहेवाया.

धर्मध्यानना चार आलंबन कहुं छउं. १ वांचना २ पृच्छना ३ परावर्त्तना ४ धर्मकथा. १ वांचना—एटले विनय सहित निर्जरा तथा ज्ञान पामवाने सिद्धांतना मर्मना जाणनार गुरु के

तमे कदापि ए खोठ भेदनु पठन करी गया हशो तो पण फरी फरी तेनु पुनरावर्त्तन करजो

शिक्षापाठ ७७ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग १

जेवडे वस्तुनु स्वरूप जाणीए ते ज्ञान ज्ञान शब्दनो आ अर्थ छ हवे यथामति विचारवानु छे के ए ज्ञाननी कइ आवश्यकता छे? जो आवश्यकता छे तो ते माप्तिना कइ साधन छे? जो साधन छ तो तेने अनुकूळ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव छे? जो देशकाळादिक अनुकूळ छ तो क्या सुधी अनुकूळ छे? विशेष विचारमा ए ज्ञानना भेद केटला छे? जाणवारूप छे शु? एना वळी भेद केटला छे? जाणवाना साधन क्या क्या छे? कयि कयि वाटे ते साधनो प्राप्त कराय छे? ए ज्ञाननो उपयोग के परिणाम शु छे? ए जाणवु अवश्यनु छे

१ ज्ञाननी शी आवश्यकता छे? ते विषे प्रथम विचार करीए आ चतुर्दश रज्ज्वात्मक लोकमा, चतुर्गतिमां अनादिकाळथी सकर्म-स्थितिमा आ आत्मानु पर्यटन छे मेषानुमेष पण सुखनो ज्या भाव नथी एवा नर्कनिगोदादिक स्थानक आ आत्माए बहु बहु काळ वारवार सेवन कर्या छे, असह्य दु:खोने पुन पुन अने कहो तो अनंतिवार सहन कर्या छे ए उतापथी निरंतर तपतो आत्मा मात्र स्वकर्म विपाकथी पर्यटन करे छे पर्यटननु कारण अनंत दु:खद ज्ञानावरणीयादि कर्मो छे, जेवडे करीने आत्मा स्वस्वरूपने पामी शकतो नथी, अने विषयादिक मोहबंधनने स्वस्वरूप मानी रह्यो छे

सामान्य भाषामा ते तमने कह्या; ए साथे निरतर लक्ष राखवानी आवश्यकता छे के एमाथी आपणे कयो भेद पाम्या; अथवा कया भेद भणी भावना राखी छे? ए सोळ भेदमानो गमे ते भेद हितकारी अने उपयोगी छे; परतु जेवा अनुक्रमथी लेवो जोइए ते अनुक्रमथी लेवाय तो ते विशेष आत्मलाभनु कारण थइ पडे.

सूत्रसिद्धातना अध्ययनो केटलाक मुखपाठे करे छे; तेना अर्थ, तेमा कहेला मूळतत्त्वो भणी जो तेओ लक्ष पहोचाडे तो कइक सूक्ष्मभेद पामी शके. केळना पत्रमा, पत्रमा पत्रनी जेम चमत्कृति छे तेम सूत्रार्थने माटे छे ए उपर विचार करता निर्मळ अने केवळ दयामय मार्गनो जे वीतरागमणीत तत्त्वबोध तेनु बीज अतःकरणमा उगी नीकळशे. ते अनेक प्रकारना शास्त्रावलोकनथी, प्रश्नोत्तरथी, विचारथी अने सत्पुरुषना समागमथी पोपण पामीने वृद्धि थई वृक्षरूपे थशे. जे पछी निर्जरा अने आत्मप्रकाशरूप फळ आपशे

श्रवण, मनन अने निदिध्यासनना प्रकारो वेदातवादियोए बनाव्या छे; पण जेवा आ धर्मध्यानना पृथक पृथक सोळ भेद कह्या छे तेवा तत्त्वपूर्वक भेद कोई स्थळे नथी, ए अपूर्व छे एमाथी शास्त्रने श्रवण करवानो, मनन करवानो, विचारवानो, अन्यने बोध करवानो, शकाकखा टाळवानो, धर्मकथा करवानो, एकत्व विचारवानो, अनित्यता विचारवानो, अशरणता विचारवानो, वैराग्य पामवानो, ससारना अनत दुःख मनन करवानो, अने वीतराग भगवंतनी आज्ञावडे करीने आखा लोकालोकना विचार करवानो अपूर्व उत्साह मळे छे. भेदे भेदे करीने एना पाछा अनेक भाव समजाव्या छे

एमाना केटलाक भाव समजवाथी तप, शाति, क्षमा, दया, वैराग्य अने ज्ञाननो बहु बहु उदय थशे.

ए अति दु:खदायक छे परंपराथी पूर्वजोए ग्रहण करेलु जे दर्शन तेमाज सत्यभावना रहाय छे, एथी करीने पण आत्मज्ञान अटके छे ए माटे भलु कुळ पण जरूरनुं छे ए मेळवा प्राप्त करवा माटे थइने भाग्यशाळी थवु तेमां सत्पुण्य एटले पुण्यानुबंधी पुण्य इत्यादिक उत्तम साधनो छे ए द्वितीय साधन भेद कह्यो

३ जो साधन छे तो तेने अनुकूळ देश काळ छे? ए त्रीजा भेदनो विचार करीए भरत, महाविदेह इत्यादि कर्मभूमि अने तेमां पण आर्यभूमि ए देश भावे अनुकूळ छे जिज्ञासु भव्य! तमे सघळा आ काळे भरतमा छो, अने भारत देश अनुकूळ छे काळभाव प्रमाणे मति अने श्रुत प्राप्त करी शकाय एटली अनुकूळता छे कारण आ दुषम पंचमकाळमा परमावधि, मन पर्यव अने केवळ ए पवित्र ज्ञान परंपरा आम्नाय जोतां विच्छेद छे एटले काळनी परिपूर्ण अनुकूळता नथी

४ देशकाळादि जो थोडा पण अनुकुळ छे तो ते क्यां सुधी छे? एनो उत्तर, के शेष रहेलुं सिद्धांतिक मति ज्ञान, श्रुतज्ञान, सामान्यमतथी ज्ञान, काळ भावे एकवीश हजार वर्ष रहेवानुं, तेमाथी अढी हजार गयां, बाकी साडा अढार हजार वर्ष रह्यां, एटले पंचमकाळनी पूर्णता सुधी काळनी अनुकुळता छे देशकाळ ते लेइने अनुकुळ छे

ए सघळानु परिणाम मात्र उपर कह्यु तेज छे के अनंत दुःख अनंत भाव करीने सहेवु; गमे तेटलु अप्रिय, गमे तेटलु खेददायक अने गमे तेटलु रौद्र छता जे दुःख अनतकाळथी अनतिवार सहन करवु पडयु; ते दुःख मात्र सघु ते अज्ञानादिक कर्मथी, माटे ए अज्ञानादिक टाळवा माटे ज्ञाननी परिपूर्ण आवश्यकता छे

शिक्षापाठ ७८ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग २

७. हवे ज्ञानप्राप्तिना साधनो विषे कंइ विचार करीए अपूर्ण पर्याप्तिवडे परिपूर्ण आत्मज्ञान साध्य थतुं नथी ए माटे थइने छ पर्याप्तियुक्त जे देह ते आत्मज्ञान साध्य करी शके एवो देह ते एक मानवदेह छे. आ स्थळे प्रश्न उठशे के मानवदेह पामेला अनेक आत्माओ छे, तो ते सघळा आत्मज्ञान का पामता नथी? एना उत्तरमा आपणे मानी शकीशु के जेओ संपूर्ण आत्मज्ञानने पाम्या छे तेओना पवित्र वचनामृतनी तेओने श्रुति नही होय. श्रुतिविना संस्कार नथी जो संस्कार नथी तो पछी श्रद्धा क्याथी होय? अने ज्या ए एके नथी त्या ज्ञानप्राप्ति शानी होय? ए माटे मानवदेहनी साथे सर्वज्ञ वचनामृतनी प्राप्ति अने तेनी श्रद्धा ए पण साधनरुप छे. सर्वज्ञ वचनामृत अकर्म भूमि के केवळ अनार्यभूमिमां मळता नथी तो पछी मानवदेह शुं उपयोगनो? ए माटे थइने कर्मभूमि अने तेमा पण आर्यभूमि ए पण साधनरुप छे तत्त्वनी श्रद्धा उपजवा अने बोध थवा माटे निर्ग्रंथ गुरुनी अवश्य छे द्रव्ये करीने जे कुल मिथ्यात्वी छे, ते कुळमा थयेलो जन्म पण आत्मज्ञान प्राप्तिनी हानि रुपज छे का१ भेद

छे, परंतु तेओ ए सर्वने श्रेणिने पाम्या कयि कयि वस्तुने जाणवाथी? अनंत श्रेणिओ ज्यांसुधी जाणी नथी त्यांसुधी कयि वस्तुने जाणतां जाणतां ते अनंत वस्तुओ अनंत रूपे जाणीए? ए शंकानुं समाधान हवे करीए? जे अनंत वस्तुओ मानी ते अनंत भंगे करीने छे परंतु मुख्य वस्तुत्व स्वरूपे तेनी बे श्रेणिओ छे. जीव अने अजीव विशेष वस्तुत्व स्वरूपे नवतत्त्व किंवा षड्द्रव्यनी श्रेणिओ जाणवा रूप थइ पडे छे जे पंक्तिए चढतां चढतां सर्व भाव जणाइ लोकालोक स्वरूप हस्तामलकवत् जाणी देखी शकाय छे. एटला माटे थइने जाणवारूप पदार्थ ते जीव अने अजीव छे. ए जाणवा रूप मुख्य बे श्रेणिओ कहेवाइ.

शिक्षापाठ ८० ज्ञान संबंधी बे बोल भाग ४

४ एना उपभेद संक्षेपमां कहुं छउं 'जीव' ए चैतन्य लक्षणे एक रूप छे. देहस्वरूपे अने द्रव्य स्वरूपे अनंतानंत छे देहस्वरूपे तेना इंद्रियादिक जाणवा रूप छे, तेनी गति, विगति इत्यादिक जाणवा रूप छे; तेनी संसर्ग रीद्धि जाणवा रूप छे तेमज 'अजीव' तेना रूपी अरूपी पुद्गळ आकाशादिक विचित्र भाव काळचक्र इत्यादि जाणवा रूप छे जीवाजीव जाणवानी प्रकारांतरे सर्वज्ञ सर्वदर्शीए नव श्रेणि रूप नवतत्त्व कह्यां छे

जीव,	अजीव,	पुण्य,
पाप,	आश्रव,	संवर,
निर्जरा,	बंध,	मोक्ष

शिक्षापाठ ७९ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग ३

हवे विशेष विचार करीए

१ आवश्यकता शी छे? ए महद् विचारनुं आवर्त्तन पुनः विशेषताथी करीए. मुख्य अवश्य स्वस्वरूपस्थितिनी श्रेणिए चढवु ए छे. अनंत दुःखनो नाश, दुःखना नाशथी आत्मानुं श्रेयिक सुख ए हेतु छे; केमके सुख निरंतर आत्माने प्रियज छे; पण जे स्वस्वरूपिक सुख छे ते देशकाळ भावने लेइने श्रद्धा, ज्ञान इत्यादि उत्पन्न करवानी आवश्यकता अने सम्यग् भाव सहित उच्चगति, त्यांथी महाविदेहमां मानवदेहे जन्म, त्यां सम्यग् भावनी पुनः उन्नति, तत्त्वज्ञाननी विशुद्धता अने वृद्धि, छेवटे परिपूर्ण आत्मसाधन ज्ञान अने तेनुं सत्य परिणाम केवळ सर्व दुःखनो अभाव एटले अखंड, अनुपम अनंत शाश्वत पवित्र मोक्षनी प्राप्ति ए सघळां माटे ज्ञाननी आवश्यकता छे?

२ ज्ञानना भेद केटला छे एनो विचार कहुं छउं ए ज्ञानना भेद अनंत छे. पण सामान्य दृष्टि समजी शके एटला माटे सर्वज्ञ भगवाने मुख्य पांच भेद कह्या छे, ते जेम छे तेम कहुं छउं. प्रथम मति, द्वितीय श्रुत, तृतीय अवधि, चतुर्थ मनःपर्यव अने पांचमुं संपूर्ण स्वरूप केवळ एना पाछा प्रतिभेद छे तेनी वळी अतींद्रिय स्वरूपे अनंत भंगजाळ छे.

३. शुं जाणवारूप छे? एनो हवे विचार करीए वस्तुनुं स्वरूप जाणवुं तेनुं नाम ज्यारे ज्ञान; त्यारे वस्तुओ तो अनंत छे, एने कयि पंक्तिथी जाणवी? सर्वज्ञ थया पछी सर्व दर्शिताथी ते सत्पुरुष, ते अनंत वस्तुनुं स्वरूप सर्व भेदे करी जाणे छे

शिक्षापाठ ८२ तत्त्वावबोध भाग १

दशवैकालिक सूत्रमां कथन छे के जेणे जीवाजीवना भाव
जाण्या ते अबुध संयममां स्थिर केम रही शकशे ? ए वचनामृ
तात्पर्य एम छे के तमे आत्मा, अनात्माना स्वरूपने जाणो,
जाणवानी परिपूर्ण आवश्यकता छे

आत्मा अनात्मानुं सत्य स्वरूप निर्ग्रंथप्रवचनमांथीज प्राप्त
शके छे अनेक अन्य मतोमां ए बे तत्त्वो विषे विचारो दर्शा
छे पण ते यथार्थ नथी महा प्रज्ञावंत आचार्योए करेला विव
सहित प्रकारांतरे कहेला मुख्य नवतत्त्वने विवेक बुद्धिथी जे
करे छे, ते सत्पुरुष आत्मस्वरूपने ओळखी शके छे

स्याद्वादशैली अनुपम, अने अनंत भावभेदथी भरेलो छे,
शैलीने परिपूर्ण तो सर्वज्ञ अने सर्वदर्शीज जाणी शके,
एओना वचनामृतानुसार आगम उपयोगथी यथामति नव तत्त्
स्वरूप जाणवुं अवश्यनुं छे ए नवतत्त्व प्रिय श्रद्धा भावे जाणव
परम विवेकबुद्धि, शुद्ध सम्यक्त्व अने प्रभाविक आत्मज्ञाननो उ
थाय छे नव तत्त्वमां लोकालोकनुं संपूर्ण स्वरूप आवी जाय
जे प्रमाणे जेनी बुद्धिनी गति छे, ते प्रमाणे तेओ तत्त्वज्ञान स
दृष्टि पहोंचाडे छे, अने भावानुसार तेओना आत्मानी उज्ज्वळ
थाय छे ते वडे तेओ आत्मज्ञाननो निर्मळ रस अनुभवे छे
तत्त्वज्ञान उत्तम अने सूक्ष्म छे, तेमज सुशीलयुक्त जे तत्त्वज्ञा
सेवे छे ते पुरुष महद्भागी छे

ए नवतत्त्वना नाम आगळना शिक्षापाठमां हुं कही गयो छ
एनुं विशेष स्वरूप

एमानां केटलाक ग्राह्यरुप, केटलाक त्यागवारुप छे सघळा ए तत्त्वो जाणवारुप तो छेज.

५ जाणवाना साधन. सामान्य विचारमा ए साधनो जो के जाण्या छे, तोपण विशेष कडक विचारिये. भगवाननी आज्ञा अने तेनु शुद्ध स्वरुप यथातथ्य जाणवु स्वयं कोइकज जाणे छे नहीं तो निर्ग्रंथज्ञानी गुरु जणावी शके. निरागी ज्ञाता सर्वोत्तम छे एट्ला माटे श्रद्धानु बीज रोपनार के तेने पोपनार गुरु ए साधन रुप छे; ए साधनादिकने माटे ससारनी निवृत्ति एटले शम, दम, ब्रह्मचर्यादिक अन्य साधनो छे. ए साधनो प्राप्त करवानी वाट कहीए तोपण चाले

६ ए ज्ञानवो उपयोग के परिणामना उत्तरनो आशय उपर आवी गयो छे, पण काळभेदे कई कहेवानु छे. अने ते एटलुज के दिवसमां घेघडीनो वखत पण नियमित राखीने जिनेश्वर भगवानना कहेला तत्त्वबोधनी पर्यटना करो. वीतरागना एक सिद्धातिक शब्दथरथी ज्ञानावरणीयनो बहु क्षयोपशम थशे एम हु विवेकथी कहु छउ

शिक्षापाठ ८१ पंचमकाळ.

काळचक्रना विचारो अवश्य करीने जाणवा योग्य छे. श्री जिनेश्वरे ए काळचक्रना बे मुख्य भेद कह्या छे; १ उत्सर्पिणी २ अवसर्पिणी एकेका भेदना छ छ आरा छे आधुनिक वर्त्तन करी रहेलो आरो [illegible] कहेवाय छे; अने ते

ए नवतत्त्व त्रिपदीने भावे लेवा योग्य छे. हेय, ज्ञेय अने उपादेय एटले त्याग करवा योग्य, जाणवा योग्य अने ग्रहण करवा योग्य एम त्रण भेद नवतत्त्व स्वरूपना विचारमां रहेला छे.

प्रश्न—जे त्यागवारूप छे तेने जाणीने करवुं शुं? जे गाम न जवुं तेनो मार्ग शा माटे पूछवो?

उत्तर—ए तमारी शंका सहजमां समाधान थई शके तेवी छे. त्यागवारूप पण जाणवा अवश्य छे. सर्वज्ञ पण सर्व प्रकारना प्रपंचने जाणी रह्या छे. त्यागवारूप वस्तुने जाणवानुं मूळतत्त्व आ छे के जो ते जाणी न होय तो अत्याज्य गणी कोई वखत सेवी जवाय, एक गामथी बीजे पहोंचतां सुधी वाटमां जे जे गाम आववानां होय तेनो रस्तो पण पूछवो पडे छे, नहीं तो ज्यां जवानुं छे त्यां न पहोंची शकाय. ए गाम जेम पूछ्यां पण त्यां वास कर्यो नहीं तेम पापादिक तत्त्वो जाणवा पण ग्रहण करवा नहीं. जेम वाटमां आवतां गामनो त्याग कर्यो तेम तेनो पण त्याग करवो अवश्यनो छे.

शिक्षापाठ ८४ तत्त्वावबोध भाग ३

नवतत्त्वनुं काळभेदे जे सत्पुरुषो गुरुगम्यताथी श्रवण, मनन अने निदिध्यासन पूर्वक ज्ञान लेछे, ते सत्पुरुषो महा पुण्यशाळी तेमज धन्यवादने पात्र छे. प्रत्येक सुज्ञपुरुषोने मारो विनयभावभूषित एज बोध छे के नवतत्त्वने स्वबुद्ध्यनुसार यथार्थ जाणवा.

महावीर भगवतनां शासनमां बहु मतमतांतर पडी गया छे, तेनुं मुख्य कारण तत्त्वज्ञान भणीथी उपासक वर्गनुं लक्ष गयुं ए छे

मळवतु; कारण सिद्धांतमा जे जे कह्युं छे, ते ते विशेष भेदथी समजवा माटे सहायभूत प्रज्ञावंत आचार्यविरचित ग्रंथो छे ए गुरुगम्यरूप पण छे. नय निक्षेपा अने प्रमाणभेद नवतत्त्वना ज्ञानमा अवश्यना छे; अने तेनी यथार्थ समजण ए प्रज्ञावंतोए आपी छे

शिक्षापाठ ८३ तत्त्वावबोध भाग २

सर्वज्ञ भगवाने लोकालोकना संपूर्ण भाव जाण्या अने जोया तेनो उपदेश भव्य लोकोने कर्यो भगवाने अनंत ज्ञानवडे करीने लोकालोकना स्वरूप विषेना अनंत भेद जाण्या हता; परंतु सामान्य मानवियोने उपदेशथी श्रेणिए चढवा मुख्य देखाता नव पदार्थ तेओए दर्शाव्या. एथी लोकालोकना सर्व भावनो एमा समावेश थइ जाय छे निर्ग्रंथप्रवचननो जे जे सूक्ष्म बोध छे; ते तत्त्वनी दृष्टिए नवतत्त्वमा शमाइ जाय छे; तेमज सघळा धर्ममतोना सूक्ष्म विचार ए नवतत्त्वविज्ञानना एक देशमा आवी जाय छे आत्मानी जे अनंत शक्तियो ढकाइ रही छे तेने प्रकाशित करवा अर्हंत भगवाननो पवित्र बोध छे; ए अनंत शक्तियो त्यारे प्रफुल्लित थइ शके के ज्यारे नवतत्त्व विज्ञानमा पारावार ज्ञानी थाय.

सूक्ष्म द्वादशांगी ज्ञान पण ए नवतत्त्व स्वरूप ज्ञानने सहायरूप छे भिन्न भिन्न प्रकारे ए नवतत्त्वस्वरूप ज्ञाननो बोध करे छे; एथी आ निःशंक मानवा योग्य छे के नवतत्त्व जेणे अनंत भाव भेदे जाण्या ते सर्वज्ञ [illegible]र्शी थयो.

नवतत्त्व एटले तेनु एक सामान्यगुथनयुक्त पुस्तक होय ते नहीं, परतु जे जे स्थळे जे जे विचारो ज्ञानीओए प्रणीत कर्या छे, ते ते विचारो नवतत्त्वमाना अमुक एक वे के विशेष तत्त्वना होय छे केवळी भगवाने ए श्रेणिओथी सकळ जगत्मडळ दर्शावी दीधुं छे, एथी जेम जेम नयादि भेदथी ए तत्त्वज्ञान मळशे तेम तेम अपूर्व आनन्द अने निर्मळतानी प्राप्ति थशे, मात्र विवेक, गुरुगम्यता अने अप्रमाद जोइए ए नवतत्त्वज्ञान मने बहु प्रिय छे एना रसानुभवियो पण मने सर्दव प्रिय छे

काळभेदे करीने आ वखते मात्र मति अने श्रुत ए वे ज्ञान भरतक्षेत्रे विद्यमान छे, बाकीना त्रण ज्ञान व्यवच्छेद छे, छता जेम जेम पूर्णश्रद्धाभावथी ए नवतत्त्वज्ञानना विचारोनी गुफामा उतराय छे, तेम तेम तेना अदर अद्भुत आत्मप्रकाश, आनद, समर्थ तत्त्वज्ञाननी स्फुरणा, उत्तम विनोद अने गभिर चळकाट दिंग् करी दइ, शुद्ध सम्यग् ज्ञाननो ते विचारो बहु उदय करे छे स्याद्वाद वचनामृतना अनत सुदर आशय समजवानी शक्ति आ काळमां आ क्षेत्रथी विच्छेद गयेली छतां ते परत्वे जे जे सुदर आशयो समजाय छे ते ते आशयो अति अति गभिर तत्त्वथी भरेला छे पुन पुन ते आशयो मनन कराय तो चार्वाकमतिना चचळ मनुष्यने पण सद्धर्ममा स्थिर करी दे तेवा छे सक्षेपमा सर्व प्रकारनी सिद्धि, पवित्रता, महाशील निर्मळ उडा अने गभिर विचार, स्वच्छ वैराग्यनी भेट ए तत्त्वज्ञानथी मळे छे

मात्र क्रियाभावपर राचता रह्या; जेनु परिणाम दृष्टिगोचर छे वर्तमान शोधमा आवेली पृथ्विनी वसति लगभग दोढ अबजनी गणाइ छे, तेमा सर्व गच्छनी मळीने जैनप्रजा मात्र वीश लाख छे ए प्रजा ते श्रमणोपासक छे एमाथी हु धारु छु के नवतत्त्वने पठनरूपे बे हजार पुरुषो पण माड जाणता हशे; मनन अने विचार पूर्वक तो आगळीने टेरवे गणी शकीए तेटला पुरुषो पण जाणता नही हशे. ज्यारे आवी पतित स्थिति तत्त्वज्ञान सबधी थइ गइ छे त्यारेज मतमतातर वधी पड्या छे. एक लौकिक कथन छे के "सो शाणे एक मत" तेम अनेक तत्त्वविचारक पुरुषोना मतमा भिन्नता बहुधा आवती नथी, माटे तत्त्वावबोध परम आवश्यक छे

ए नवतत्त्व विचार सबधी प्रत्येक मुनिओने मारी विज्ञप्ति छे के विवेक अने गुरुगम्यताथी एनु ज्ञान विशेष वृद्धिमान करवु, एथी तओना पवित्र पच महाव्रत दृढ थशे; जिनेश्वरना वचनामृतना अनुपम आनदनी प्रसादि मळशे, मुनित्वआचार पाळवामा सरळ थइ पडशे, ज्ञान अने क्रिया विशुद्ध रहेवाथी सम्यक्त्वनो उदय थशे, परिणामे भवात थइ जशे

शिक्षापाठ ८५ तत्त्वावबोध भाग ४

जे जे श्रमणोपासक नवतत्त्व पठनरूपे पण जाणता नथी तेओए ते अवश्य जाणवा. जाण्या पछी बहु मनन करवा. समजाय तेटला गभिर आशय गुरुगम्यताथी सद्भावे करीने समजवा एथी आत्मज्ञान उज्ज्वळता पामशे; अने यमनियमादिकनु बहु पालन थशे

तत्त्वज्ञानना सिद्धांतो जैनमां छे ए मारुं लक्ष नहोतुं आमां आखी सृष्टिनुं तत्त्वज्ञान केटलेक अंशे आवी शके खरुं

शिक्षापाठ ८७ तत्त्वावबोध भाग ६

एनो उत्तर आ भणीथी एम थयो के हजु आप आटलुं कहो छो ते पण जैनना तत्त्वविचारो आपना हृदये आव्या नथी त्यांसुधी, परंतु हुं मध्यस्थताथी सत्य कहुं छउं के एमां जे विशुद्धज्ञान बताव्युं छे ते क्यांये नथी, अने सर्व मतोए जे ज्ञान बताव्युं छे ते महावीरना तत्त्वज्ञानना एक भागमां आवी जाय छे एनुं कथन स्याद्वाद छे, एक पक्षी नथी.

तमे कह्युं के केटलेक अंशे सृष्टिनुं तत्त्वज्ञान एमां आवी शके खरुं, परंतु ए मिश्रवचन छे अमारी समजावबानी अल्पज्ञताथी एम बने खरुं, परंतु एथी ए तत्त्वोमां कंइ अपूर्णता छे एमतो नथीज आ कंइ पक्षपाती कथन नथी विचार करी आखी सृष्टिमांथी ए सिवायनुं एक दशमुं तत्त्व शोधतां कोइ काळे ते मळनार नथी ए सबंधी प्रसंगोपात आपणे ज्यारे वातचित अने मध्यस्थ चर्चा थाय त्यारे निःशंक थाय

उत्तरमां तेओए कह्युं के आ उपरथी मने एम तो निःशंकता छे के जैन अद्भुत दर्शन छे श्रेणिपूर्वक तमे मने केटलाक नवतत्त्वना भाग कही बताव्या एथी हुं एम बेधडक कही शकुं छउं के महावीर गुप्तभेदने पामेला पुरुष हता एम सहजसाज वात करीने "उपन्नेवा" "विघनेवा" "धुवेवा" ए लब्धिवाक्य मने तेओए कह्युं ते कही

शिक्षापाठ ८६ तत्त्वावबोध भाग ५

एकवार एक समर्थ विद्वानसाथे निर्ग्रंथप्रवचनना चमत्कृति सबंधी वातचित थइ; तेना सबधमा ते विद्वाने जणाव्यु के आटलु हु मान्य राखु छउ के महावीर ए एक समर्थ तत्त्वज्ञानी पुरुष हता; एमणे जे बोध कर्यो छे, ते झीली लइ प्रज्ञावत पुरुषोए अग उपागनी योजना करी छे; तेना जे विचारो छे ते चमत्कृति भरेला छे, परतु ए उपरथी लोकालोकनु ज्ञान एमां रह्यु छे एम हु कही न शकु एम छता जो तमे कइ ए सबधी प्रमाण आपता हो तो हु ए वातनी कइ श्रद्धा लावी शकु एना उत्तरमा में एम कह्यु के हु कइ जैन वचनामृतने यथार्थ तो शु पण विशेष भेदे करीने पण जाणतो नथी, पण जे सामान्य भावे जाणु छउ एथी पण प्रमाण आपी शकु खरो. पछी नवतत्त्वविज्ञान सबधी वातचित नीकळी म कह्यु एमा आखी सृष्टिनुं ज्ञान आवी जाय छे, परंतु यथार्थ समजवानी शक्ति जोइए. पछी तेओए ए कथननु प्रमाण माग्यु, त्यारे आठ कर्म में कही बताव्या, तेनी साथे एम सूचव्यु के ए शिवाय एनाथी भिन्न भाव दर्शावे एवु नवमु कर्म शोधी आपो; पापनी अने पुण्यनी प्रकृतियो कहीने कह्युं आ शिवाय एक पण वधारे प्रकृति शोधी आपो. एम कहेता अनुक्रमे वात लीधी प्रथम जीवना भेद कही पूछ्यु एमां कंइ न्यूनाधिक कहेवा मागो छो? अजीवद्रव्यना भेद कही पूछ्यु. कइ विशेष कहो छो? एम नवतत्त्व सबधी वातचित थइ त्यारे तेओए थोडीवार विचार करीने कह्यु आतो महावीरनी कहेवानी अद्भुत चमत्कृति छे के जीवनो एक नवो भेद [illegible] नथी; तेम पापपुण्यादिकनी एक प्रकृति विशेष मळती [illegible] नवमु कर्म पण मळतु नथी

उत्पत्ति, विप्रता अने ध्रुवता नथी तो जीव कया प्रमाणथी सिद्ध करशो? ए बीजी शंका विप्रता अने ध्रुवताने परस्पर विरोधाभास ए त्रीजी शंका जीव केवळ ध्रुव छे तो उत्पत्तिमां हा कही ए असत्य ए चोथो विरोध. उत्पन्न जीवनो ध्रुव भाव कहो तो उत्पन्न कोणे कर्यो? ए पांचमी शंका अने विरोध अनादिपणुं जतुं रहे छे ए छठ्ठी शंका. केवळ ध्रुव विप्ररुपे छे एम कहो तो चार्वाकमिश्र वचन थयुं ए सातमो दोष उत्पत्ति अने विप्ररुप कहेशो तो केवळ चार्वाकनो सिद्धांत ए आठमो दोष उत्पत्तिनी ना, विप्रतानी ना अने ध्रुवतानी ना कही पछी त्रणेनी हा कही एना वळी पाछा छ दोष एटले सर्वाळे चौद दोष केवळ ध्रुवता जतां तीर्थंकरनां वचन त्रुटी जाय ए पन्नरमो दोष. उत्पत्ति ध्रुवता लेतां कर्त्तानी सिद्धि थाय जेथी सर्वज्ञ वचन त्रुटी जाय ए सोळमो दोष उत्पत्ति विप्रतारुपे पापपुण्यादिकनो अभाव एटले धर्माधर्म सघळुं गयुं ए सत्तरमो दोष उत्पत्ति विप्रता अने सामान्य स्थितिथी (केवळ अचळ नहीं) त्रिगुणात्मक माया सिद्ध थाय छे ए अढारमो दोष

शिक्षापाठ ८९ तत्त्वावबोध भाग ८

एटला दोष ए कथनो सिद्ध न थतां आवे छे एक जैनमुनिए मने अने मारा मित्रमंडळने एम कह्युं हतुं के जैनसप्तभंगी नय अपूर्व छे, अने एथी सर्व पदार्थ सिद्ध थाय छे नास्ति, अस्तिन एमां अगम्य भेद रह्या छे आ कथन सांभळी अमे सघा घेर आव्य पछी योजना करतां करतां आ लब्धिवाक्यनी जीवपर योजना कर

वताव्या पछी तेओए एम जणाव्युं के आ शब्दोना सामान्य अर्थमां तो कंइ चमत्कृति देखाती नथी; उपजवुं, नाश थवुं अने अचळता, एम ए त्रण शब्दोना अर्थ छे परंतु श्रीमत् गणधरोए तो एम दर्शित कर्युं छे के ए वचनो गुरुमुखथी श्रवण करतां आगळना भाविक शिष्योने द्वादशांगीनुं आशय भरित ज्ञान थतुं हतुं ? ए माटे में कंइक विचारो पहोंचाडी जोयां छतां मने तो एम लाग्युं के ए बनवुं असंभवित छे, कारण अति अति सूक्ष्म मानेलुं सिद्धांतिक ज्ञान एमां क्याथी समाय ? ए संबंधी तमे कंइ लक्ष पहोंचाडी शकशो ?

शिक्षापाठ ८८ तत्त्वावबोध भाग ७

उत्तरमां में कह्युं के आ काळमां त्रण महाज्ञान भारतथी विच्छेद छे; तेम छतां हुं कंइ सर्वज्ञ के महा प्रज्ञावंत नथी छतां मारुं जेटलुं सामान्य लक्ष पहोंचे तेटलुं पहोंचाडी कंइ समाधान करी शकीश, एम मने संभव रहे छे. त्यारे तेमणे कह्युं जो तेम संभव थतो होय तो ए त्रिपदी जीवपर "ना" ने "हा" विचारे उतारो ते एम के जीव शुं उत्पत्तिरूप छे ? तो के ना जीव शुं विप्रतारूप छे ? तो के ना. जीव शुं ध्रुवतारूप छे ? तो के ना आम एक वखत उतारो अने बीजी वखत जीव शुं उत्पत्तिरूप छे ? तो के हा जीव शुं विप्रतारूप छे ? तो के हा जीव शुं ध्रुवतारूप छे ? तो के हा. आम उतारो आ विचारो आखा मंडळे एकत्र करी योज्या छे ए जो यथार्थ कही न शकाय तो अनेक प्रकारथी दूषण आवी शके विप्ररूपे होय ए वस्तु ध्रुवरूपे होय नहीं. ए पहेली शंका जो

विप्रतामां "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "ते जे देहमांथी आव्यो सांथी विप्र पाम्यो, या क्षण क्षण प्रति एनी आत्मिक ऋद्धि विषयादिक मरणवडे रुधाइ रही छे, ए रूपे विप्रता योजी शकाय छे"

ध्रुवतामा "हा" एवी जे योजना कही छे ते एम यथार्थ थइ शके के "द्रव्ये करी जीव कोइ काळे नाश रूप नथी, त्रिकाळ सिद्ध छे"

हवे एथी करीने एटले ए अपेक्षाओ लक्षमा राखता योजेला दोष पण हु धारु छउ के टळी जशे

१ जीव विप्ररूपे नथी माटे ध्रुवता सिद्ध थइ, ए पहेलो दोष टळ्यो

२ उत्पत्ति, विप्रता अने ध्रुवता ए भिन्न भिन्न न्याये सिद्ध थइ एटले जीवनु सत्यत्व सिद्ध थयु ए बीजो दोष गयो

३ जीवना सत्यस्वरूप ध्रुवता सिद्ध थइ एटले विप्रता गइ ए त्रीजो दोष गयो

४ द्रव्य भावे जीवनी उत्पत्ति असिद्ध थइ ए चोथो दोष गयो

५ अनादि जीव सिद्ध थयो एटले उत्पत्ति संबंधीनो पाचमो दोष गयो

६ उत्पत्ति असिद्ध थइ एटले कर्त्ता संबंधीनो छठ्ठो दोष गयो

७ ध्रुवता साथे विप्रता लेता अबाध थयु एटले चार्वाकमिश्र-वचननो सातमो दोष गयो

हुं धारुं छउं के एवी नास्ति अस्तिना उभेभाव जीवपर नहीं उतरी शके. तोपण जिनवाक्यो पण क्लेशरूप थइ पडशे. तोपण ए भणी मारी कंइ तिरस्कारनी द्रष्टि नथी.

आना उत्तरमां में कह्यु के आपे जे नास्ति अने अस्ति नय जीवपर उतारवा धार्यो ते सनिक्षेप शैलीथी नथी, एटले वखते एमांथी एकांतिक पक्ष लेइ जवाय, तेम वळी हुं कइ स्याद्वाद शैलीनो यथार्थ जाणनार नथी, मंदमतिथी लेश भाग जाणुं छउं. नास्ति अस्ति नय पण आपे यथार्थ शैली पूर्वक उतार्यो नथी एटले हुं तर्कथी जे उत्तर दइ शकुं ते आप सांभळो.

उत्पत्तिमां "ना" एवी जे योजना करी ते एम यथार्थ थइ शके के "जीव अनादि अनंत छे"

विप्रतामां "ना" एवी जे योजना करी ते एम यथार्थ थइ शके के "एनो कोइ काळे नाश नथी."

ध्रुवतामां "ना" एवी जे योजना करी ते एम यथार्थ थइ शके के "एक देहमां ते सदैवने माटे रहेनार नथी."

शिक्षापाठ ९० तत्त्वावबोध भाग ९

उत्पत्तिमां "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "जीवनो मोक्ष यथा सुधी देह त्यागी बीजा देहमां उपजे छे."

पछी में मारी वात संजीवन करी लब्धि प्रगटी कही आप ए लब्धि संबंधी शंका करो के एने क्लेशरूप कहो तो ए वचनोने अन्याय मळे छे एमां अति अति उज्ज्वळ आत्मिक शक्ति गुरुगम्यता अने वैराग्य जोईए ज्यां सुधी तेम नथी, त्यां सुधी लब्धि विषे शंका रहे खरी, पण हुं धारुं छउं के आ वेळा ए संबंधी कहेलां बे बोल निरर्थक नहीं जाय ते ए के जेम आ योजना नास्ति अस्तिपर योजी जोई, तेम एमां पण बहु सूक्ष्म विचार करवाना छे देहे देहनी पृथक पृथक उत्पत्ति, च्यवन, विश्राम, गर्भाधान, पर्याप्ति, इंद्रिय, सत्ता, ज्ञान, संज्ञा, आयुष्य, विषय इत्यादि अनेक कर्मप्रकृति प्रत्येक भेदे लेतां जे विचारो ए लब्धिथी नीकळे ते अपूर्व छे ज्यां सुधी लक्ष पहोंचे त्यां सुधी सघळा विचार करे छे परंतु द्रव्यार्थिक भावार्थिक नये आखी सृष्टिनुं ज्ञान ए त्रण शब्दोमां रह्युं छे, तेनो विचार कोईक ज करे छे, ते सद्गुरु मुखनी पवित्र लब्धिरूपे ज्यारे आवे त्यारे द्वादशांगी ज्ञान शा मा न थाय? जगत एम कहेताज मनुष्य एक घर, एक वास, एक गाम, एक शहेर, एक देश, एक खंड, एक पृथ्वि ए सघळुं मूकी दई असंख्यात द्वीप समुद्रादिथी भरपूर वस्तु केम समजी जाय छे? एनुं कारण मात्र एटलुंज के ते ए शब्दनी बहोळताने समज्यु छे, किंवा एनुं लक्ष एनी अमुक बहोळताए पहोंच्युं छे, जेथी जगत एम कहेतां एवडो मोटो मर्म समजी शके छे, तेमज ऋजु अने सरळ सत्पात्र शिष्यो निर्ग्रंथ गुरुथी ए त्रण शब्दोनी गम्यता लई द्वादशांगी ज्ञान पामता हता आथी नीले ते लब्धि अल्पज्ञता छतां विवेके जोतां क्लेशरूप नथी

---

८ उत्पत्ति अने विघ्नता प्रथक् प्रथक् देहे सिद्ध थइ माटे स्वतः चार्वाकसिद्धांत ए नामनो आठमो दोष गयो

१४ शकानो परस्परनो विरोधाभास जता चौद सुत्रीना दोष गया

१५ अनादि अनंतता सिद्ध थता स्याद्वादवचन सत्य थयु ए पन्नरमो दोष गयो.

१६ कर्त्ता नथी ए सिद्ध थता जिनवचननी सत्यता रही ए सोळमो दोष गयो.

१७ धर्माधर्म, देहादिक पुनरावर्त्तन सिद्ध थता सत्तरमो दोष गयो

१८ ए सर्व वात सिद्ध थता त्रिगुणात्मक माया असिद्ध थइ ए अढारमो दोष गयो.

शिक्षापाठ ९१ तत्त्वावबोध भाग १०

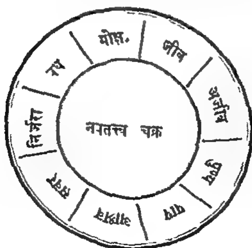
आपनी योजेली योजना हु धारु छउ के आथी समाधान पामी हशो आ कइ यथार्थ शैली उतारी नथी, तोपण एमा कइ पण विनोद मळी शके तेम छे. ए उपर विशेष विवेचनने माटे वहोळो वखत जोइए एटले वधारे कहेतो नथी, पण एक बे टुकी वात आपने कहेवानी छे ते जो आ समाधान योग्य थयु होय तो कहु. पछी तेओ तरफथी मनमानतो उत्तर मल्यो, अने एक बे वात जे कहे [illegible] ते सहर्ष कहो एम तेओए कह्यु

शिक्षापाठ ९३ तत्त्वावबोध भाग १२

एटलुं तमारा लक्षमां छे के जीव अजीव ए अनुक्रमथी छेवटे मोक्ष नाम आवे छे. हवे ते एक पछी एक मूकी जइए तो जीव अने मोक्षने अनुक्रमे आद्यंत रहेवुं पडशे.

१ जीव	२ अजीव	३ पुण्य
४ पाप	५ आश्रव	६ संवर
७ निर्जरा	८ बंध	९ मोक्ष

में आगळ कह्युं हतुं के ए नाम मुकवामां जीव अने मोक्षने निकटता छे. छतां आ निकटता तो न थइ. पण जीव अने अजीवने निकटता थइ. वस्तुतः एम नथी. अज्ञानवडे तो ए बन्नेनेज निकटता रही छे, पण ज्ञानवडे जीव अने मोक्षने निकटता रही छे जेमके –



शिक्षापाठ ९२ तत्त्वावबोध भाग ११

एमज नवतत्त्व संबंधी छे. जे मध्य वयना क्षत्रियपुत्रे जगत् अनादि छे, एम बेधडक कही कर्त्ताने उडाड्यो हशे, ते ते पुरुषे शुं कंइ सर्वज्ञताना गुप्त भेद विना कर्युं हशे? तेम एनी निर्दोषता विषे ज्यारे आप वांचशो त्यारे निश्चय एवो विचार करशो के ए परमेश्वर हता. कर्त्ता नहोता अने जगत अनादि हतुं तो तेम कह्युं. एना अपक्षपाती अने केवळ तत्त्वमय विचारो आपे अवश्य विशोधवा योग्य छे. जैन दर्शनना अवर्णवादीओ जैनने नथी जाणता एटले एने अन्याय आपे छे, ते ममत्वथी अधोगति मेळवशे.

आ पछी केटलीक वातचित थइ. प्रसंगोपात ए तत्त्व विचारवानुं वचन लइने सहर्ष हुं त्यांथी उठ्यो हतो.

तत्त्वावबोधना संबंधमां आ कथन कहेवायुं. अनंतभेदथी भरेला ए तत्त्व विचारो काळभेदथी जेटला ज्ञेय थाय तेटला जाणवा, ग्राह्य थाय तेटला ग्रहवा, अने त्याज्य देखाय तेटला त्यागवा.

ए तत्त्वोने जे यथार्थ जाणे छे, ते अनंत चतुष्टयथी विराजमान थाय छे ए सत्य समजवुं; ए नव तत्त्वना क्रमवार नाम मुकवामां पण अरधुं सूचवन जीवने मोक्षनी निकटतानुं जणाय छे!

नहता, त एथी मृषा शोभाइ जशाय आशंका करशो के ए अज्ञानी नहोता ए शा उपरथी जणाय? तो तेना उत्तरमा एओना पवित्र सिद्धांतोना रहस्यने मनन करवानुं कहु छउ अने एम जे करशे त तो पुन आशंका लेश पण नहीं करे जैनमतप्रवर्तकोमति मार कइ राग बुद्धि नथी, के एमाटे पक्षपाते हु कइपण तमने कहु, तेमज अन्यमत प्रवर्तकोमति मारे कइ वैरबुद्धि नथी के मिथ्या एनु खडन करु, उभयमा हुतो मदमति मध्यस्थरुप छउ बहु बहु मननथी अने मारी मति ज्या सुधी पहाची त्या सुधीना विचारथी हुं विनयथी कहु छउ, के प्रिय भव्यो! जैन जेवु एके पूर्ण अने पवित्र दर्शन नथी, वीतराग जेवो एके देव नथी, तरीने अनत दु खथी पार पामवु होय तो ए सर्वज्ञ दर्शनरुप कल्पवृक्षने सेवो

शिक्षापाठ ९५ तत्त्वावबोध भाग १४

जैन ए एटली बधी सूक्ष्म विचार संकलनाथी भरेलु दर्शन छे के एमा प्रवेश करता पण बहु वखत जोइए उपर उपरथी के कोइ प्रतिपक्षीना कहेवाथी अमुक वस्तु संबधी अभिप्राय बाधवो के आपवो ए विवेकीनु कर्त्तव्य नथी एक तळाव सपूर्ण भर्यु होय तेनु जळ उपरथी समान लागे छे, पण जेम जेम आगळ चालीए छीए तेम तेम वधारे वधारे उडापणु आवतु जाय छे; छता उपर तो जळ सपाटज रहे छे, तेम जगतना सघळा धर्ममतो एक तळाव रुप छे, तेने उपरथी सामान्य सपाटी जोइने सरखा कही देवा ए उचित नथी एम कहेनारा तत्त्वने पामेला पण नथी जैनना एकेका

हवे जुओ ए त्रणेने कइ निकटता आवी छे? हा कहेली निकटता आवी गइ छे पण ए निकटता तो द्रव्यरूपे छे ज्यारे भावे निकटता आवे त्यारे सर्व सिद्ध थाय ए द्रव्य निकटतानु साधन सत्परमात्मतत्त्व, सद्गुरुतत्त्व अने सद्धर्मतत्त्व ओळखवी सर्वोत्तम ए छे भावनिकटता एटले केवळ एकज रूप थवा ज्ञान, दर्शन अने चारित्र साधनरूप छे

ए चक्रथी एवी पण आशंका थाय के ज्यारे त्रणे निकट छे त्यारे बाकीना त्यागवा? उत्तरमा एम कहु छु के जो सर्व त्यागी शकता हो तो त्यागी द्यो, एटले मोक्षरूपज थशो नहितो हेय, ज्ञेय, उपादेयनो बोध ल्यो, एटले आत्मसिद्धि प्राप्त थशे

शिक्षापाठ ९४ तत्त्वावबोध भाग १३.

जे जे हु कही गयो ते ते कइ केवळ जैनकुळमा [illegible] पुरुषने माटे नथी, परतु सर्वने माटे छे तेम आ [illegible] मानजो के हु जे कहु छउ ते अपक्षपाते अने [illegible] बुद्धिथी कहु छउ

तमने जे धर्मतत्त्व कहेवानु छे, ते [illegible] स्वार्थबुद्धिथी कहेवानु मने कइ प्रयोजन नथी; [illegible] स्वार्थथी हु [illegible] अधर्मतत्त्व बोधी अधोगतिने शामाटे [illegible] निर्ग्रंथना वचनामृतो माटे कहु [illegible] तत्त्वमा परिपूर्ण छे, ते छे. जिनेश्वर [illegible] के ते निमित्ते [illegible] प्रणा के [illegible]

तोलन करवु ए उपरथी अवश्य एटलु महात्म्य नीकळशे, के जे आगळ नगारापर डांडी ठोकीने कहेवायु हतु ते खरु छे.

जगत गाडरियो प्रवाह छे धर्मना मतभेद संबंधीना शिक्षापाठमा दर्शाव्या प्रमाणे अनेक धर्ममतनी जाल लागी पडी छे विशुद्ध आत्मा कोइकज थाय छे विवेकथी तत्त्वने कोइकज शोधे छे एटले जैन तत्त्वने अन्यदर्शनियो शामाटे जाणता नथी ए खेद के आशका करवा जेवुज नथी

उता मने बहु आश्चर्य लागे छे के केवळ शुद्ध परमात्मतत्त्वने पामेला, सकळ दूषणरहित, मृषा कहेवानु जेने कइ निमित्त नथी एवा पुरुषना कहेला पवित्रदर्शनने पोते तो जाण्यु नही, पोताना आत्मानु हित तो कर्यु नही, पण अविवेकथी मतभेदमा आवी जइ केवळ निर्दोष अने पवित्र दर्शनने नास्तिक शा माटे कह्यु हशे? पण ए कहेनारा एना तत्त्वने जाणता नहोता वळी एना तत्त्वने जाणवाथी पोतानी श्रद्धा फरशे, त्यारे लोको पछी पोताना आगळ कहेला मतने गाळशे नही, जे लौकिक मतमा पोतानी आजीविका रही छे, एवा वेदादिनी महत्ता घटाडवाथी पोतानी महत्ता घटशे, पोतानु मिथ्या स्थापित करेलु परमेश्वर पद चालशे नही एथी जैनतत्त्वमा प्रवेश करवानी रुचिने मूळथीज बंध करवा लोकोने एवी भ्रमभुरकी आपी के जैन नास्तिक छे लोको तो बिचारा गभरुगाडर छे, एटले पछी विचार पण क्याथी करे? ए कहेवु केटलु मृषा अने अनर्थकारक छे ते जेणे वीतराग प्रणीत सिद्धातो विवेकथी जाण्या छे, ते जाणे मारु कहेवु मदबुद्धिओ तरत पक्षपातमा लइ जाय

पवित्र सिद्धांतपर विचार करता आयुष्य पूर्ण थाय, तोपण पार पमाय नहीं तेम रह्यु छे बाकीना सघळा धर्ममतोना विचार जिनप्रणीत वचनामृतसिंधु आगळ एक बिंदुरूप पण नथी जैनमत जेणे जाण्यो, अने सेव्यो ते केवळ निरागी अने सर्वज्ञ थइ जाय छे एना प्रवर्त्तको केवा पवित्र पुरुषो हता! एना सिद्धांतो केवा अखंड संपूर्ण अने दयामय छे! एमा दूषणतो कांइ छेज नहिं! सर्वथा निर्दोष तो मात्र जैनु दर्शन छे! एवो एके पारमार्थिक विषय नथी के जे जैनमा नहीं होय अने एवु एके तत्त्व नथी के जे जैनमा नथी, एक विषयने अनंत भेदे परिपूर्ण कहेनार ते जैनदर्शन छे प्रयोजनभूततत्त्व एना जेवु क्याय नथी एक देहमा बे आत्मा नथी, तेम आखी सृष्टिमा बे जैन एटले जैननी तुल्य बीजु दर्शन नथी आम कहेवानु कारण शु? तो मात्र तेनी परिपूर्णता, नेरागीता, सत्यता अने जगद् हितैषिता

शिक्षापाठ ९६. तत्त्वावबोध भाग १५

न्यायपूर्वक आटलु मारे पण मान्य राखवु जोइए के ज्यारे एक दर्शनने परिपूर्ण कही वात सिद्ध करवी होय त्यारे प्रतिपक्षनी मध्यस्थ बुद्धिथी अपूर्णता दर्शाववी जोइए पण ए बे वातपर विवेचन करवा जेटली अहीं जग्यो नथी, तोपण थोडुं थोडु कहेतो आव्यो छउ मुख्यत्वे कहेवानु के ए वात जेने रुचिकर थती न होय के असंभवित लागती होय तेणे जैनतत्त्वविज्ञानी शास्त्रो अने अन्यतत्त्वविज्ञानी शास्त्रो मध्यस्थ बुद्धिथी मनन करी न्यायने काँटे

आवा अनेक विचारो विचारता जणाइ आवशे के जगतनुं स्वरूप छे तेमज ते पवित्र पुरुषोए कह्युं छे. एमा भिन्नभाव कहेवानुं एमने लेशमात्र प्रयोजन नहोतुं. सूक्ष्ममांसूक्ष्म जंतुनी रक्षा जेणे प्रणीत करी छे, एक रजकणथी करीने आखा जगतना विचारो जेणे सर्व भेदे कह्या छे तेवा पुरुषोना पवित्र दर्शनने नास्तिक कहेनारा कई गतिने पामशे ए विचारतां दया आवे छे?

शिक्षापाठ ९८ तत्त्वावबोध भाग १७

जे न्यायथी जय मेळवी शकतो नथी, ते पछी गाळो भांडे छे, तेम पवित्र जैनना अखंड तत्त्वसिद्धांतो शंकराचार्य, दयानंद संन्यासी वगेरे ज्यारे तोडी न शक्या त्यारे पछी जैन नास्तिक है, सो चार्वाकमेंसे उत्पन्न हुआ है एम कहेवा मांड्युं. पण ए स्थळे कोई प्रश्न करे, के महाराज! ए विवेचन तमे पछी करो. एवा शब्दो कहेवामां वखत विवेक के ज्ञान जोइतुं नथी, पण आनो उत्तर आपो के जैन वेदथी कई वस्तुमां ऊतरतो छे, एनुं ज्ञान, एनो बोध, एनुं रहस्य, अने एनुं सत्शील केवुं छे ते एकवार कहो! आपना वेद विचारो कई बाबतमां जैनथी चढे छे? आम ज्यारे मर्मस्थानपर आवे त्यारे मौनता शीवाय तेओ पासे बीजुं कंई साधन रहे नहीं. जे सत्पुरुषोना वचनामृत अने योगबळथी आ सृष्टिमां सत्य, दया, तत्त्वज्ञान अने महाशील उदय पामे छे, ते पुरुषो करतां जे पुरुषो शृंगारमां राच्या पड्या छे, सामान्य तत्त्वज्ञानने पण नथी जाणता, जेनो आचार पण पूर्ण नथी, तेने चढता कहेवा परमेश्वरने नामे स्थापवा अने सत्यस्वरूपनी अवर्ण भाषा बोलवी, परमात

शिक्षापाठ ९७ तत्त्वावबोध भाग १६

पवित्र जैन दर्शनने नास्तिक कहेवरावनाराओ एक मिथ्या दलीलथी फाववा इच्छे छे, के जैनदर्शन आ जगतना कर्त्ता परमेश्वरने मानतु नथी अने जगतकर्त्ता परमेश्वरने जे नथी मानता ते तो नास्तिकज छे, एवी मानी लीधेली वात भद्रिकजनोने शीघ्र चोंटी रहे छे कारण तेओमा यथार्थ विचार करवानी प्रेरणा नथी पण जो ए उपरथी एम विचारमा आवे के त्यारे जैन जगतने अनादि अनंत कहे छे ते कया न्यायथी कहे छे? जगतकर्त्ता नथी एम कहेवामा एमनु निमित्त शु छे? एम एक पछी एक भेदरूप विचारथी तेओ जैननी पवित्रतापर आवी शके. जगत रचवानी परमेश्वरने जरुर शी हती? रच्यु तो सुख दुःख मूकवानु कारण शु हतु? रचीने मोत शा माटे मूक्यु? ए लीला कोने बताववी हती? रच्यु तो कयां कर्मथी रच्यु? ते पहेला रचवानी इच्छा का नहोती? ईश्वर कोण? जगतना पदार्थ कोण? अने इच्छा कोण? रच्यु तो जगतमा एकज धर्मनु प्रवर्त्तन राखवु हतु, आम भ्रमणमा नाखवानी जरुर शी हती? कदापि एम मानो के ए बिचाराने भूल थइ! हशे! क्षमा करीए! पण एवु दोढ डहापण क्याथी सूझ्यु के एनेज मूळथी उखेडनार एवा महावीर जेवा पुरुषोने जन्म आप्यो? एना कहेला दर्शनने जगतमा विद्यमानता का आपी? पोताना पगपर हाथे करीने कुहाडो मारवानी एने शु अगत्य हती? एक तो जाणे ए प्रकारे विचार, अने बाकी बीजा प्रकारे ए विचार के जैनदर्शन प्रवर्त्तकोने एनाथी कई द्वेष हतो? जगतकर्त्ता होत तो एम कहेवाथी एओना लाभने कइ हानि पहोंचती हती? जगतकर्त्ता नथी, जगत अनादि

कहेवामा एमने कइ महत्ता मळी जती हती?

श्रीमंत अने धीमान् बन्नेए मळीने एक महान समाज स्थापन करवानी अवश्य छे, एम दर्शावुं छउं. पवित्र स्याद्वादमतनुं ढंकायलुं तत्त्व प्रसिद्धिमां आणवा ज्यां सुधी प्रयोजन नथी, त्यां सुधी शासननी उन्नति पण नथी. लक्ष्मी, कीर्ति अने अधिकार संसारी कळा-कौशल्यथी मळे छे, परंतु आ धर्मकळाकौशल्यथी तो सर्व सिद्धि सांपडशे. महान् समाजना अंतर्गत उपसमाज स्थापवा. वाडामां बेसी रहेवा करतां मतमतांतर तजी एम करवुं उचित छे. हुं इच्छुं छउं के ते कृतनी सिद्धि थइ जैनांतर्गच्छ मतभेद टळो, सत्य वस्तु उपर मनुष्यमंडळनुं लक्ष आवो, अने ममत्व जाओ!

शिक्षापाठ १०० मनोनिग्रहनां विघ्न

वारंवार जे बोध करवामां आव्यो छे तेमांथी मुख्य तात्पर्य नीकळे छे ते ए छे के आत्माने तारो अने तारवा माटे तत्त्वज्ञाननो प्रकाश करो, तथा सत्शीलने सेवो. ए प्राप्त करवा जे जे मार्ग दर्शाव्या ते ते मार्ग मनोनिग्रहताने आधीन छे. मनोनिग्रहता थवा लक्षनी बहोळता करवी अवश्यनी छे. बहोळतामां विघ्नरूप नीचेना दोष छे :

१ आळस — २ अनियमित उंघ

३ विशेष आहार — ४ उन्माद प्रकृति

५ मायाप्रपंच — ६ अनियमित काम

७ अकरणीय विलास — ८ मान.

लग्प पामेल्गने नास्तिक कहेना, ए एमनी केटली गरी कर्मनी
खोल्तानु सूचवन करे छे? परतु जगत मोहाय छे; मतभेद छे
ता अशर छे. ममत्व के राग छे सा सख तत्त्व नथी ए वात
आपण शा माटे न विचारवी?

हु एक मुख्य वात तमने कहु छउ के जे ममत्वरहितनी अने
न्यायनी छे. ते ए छे के गमे ते दर्शनने तमे मानो, गमे तो पछी
तमारी दृष्टिमा आवे तेम जैनने कहो, सर्व दर्शनना शास्त्रतत्त्वने
जुओ, तेम जैनतत्त्वने पण जुओ स्वतत्र आत्मिकशक्तिए जे योग्य
लाग ते अगीकार करो मारु के बीजा गमे तेनु भले एकदम तमे
मान्य न करो पण तत्त्वने विचारो?

शिक्षापाठ ९९ समाजनी अगत्य

आग्लभौमियो ससार सबधी अनेक कला कौशल्यमा शाथी
विजय पाम्या छे? ए विचार करता आपणने तत्काल जणाशे के
तेओनो बहु उत्साह अने ए उत्साहमा अनेकनु मळवु कळाकौशल्यना
ए उत्साही काममा ए अनेक पुरुषोनी उभी थएली सभा के समाजे
परिणाम शु मेळव्यु? तो उत्तरमा एम आवशे के लक्ष्मी, कीर्ति
अने अधिकार ए एमना उदाहरण उपरथी ए जातिना कळाकौशल्यो
शोधवानो हु अहीं बोध करतो नथी, परतु सर्वज्ञ भगवाननु कहेलु
गुप्त तत्त्व प्रमाद स्थितिमा आवी पडयु छे, तेने प्रकाशित करवा
तथा पूर्वाचार्योना गुथेला महान शास्त्रो एकत्र करवा, पडेला गच्छना
मतमतातर [illegible] तेमज धर्मविद्याने प्रफुल्लित करवा

४ ज्ञाझानो मेळाप अने थोडा साथे अति समागम ए बन्ने समान दु खदायक छे

५ समस्वभाविनु मळवु एने ज्ञानीओ एकात कहे छे

६ इद्रियो तमने जीते अने सुख मानो ते करता तेने तमे जीतवामाज सुख, आनद अने परमपद प्राप्त करशो

७ रागविना ससार नथी अने ससारविना राग नथी

८ युवावयनो सर्व सग परित्याग परमपदने आपे छे

९ ते वस्तुना विचारमा पहोचो के जे वस्तु अतीद्रिय स्वरूप छे

१० गुणीना गुणमा अनुरक्त थाओ

शिक्षापाठ १०२ विविध प्रश्नो भाग १

आजे तमने हु केटलाक प्रश्नो निर्ग्रंथप्रवचनानुसार उत्तर आपवा माटे पूछु छउ कहो धर्मनी अगत्य शी छे?

उ०—अनादि काळथी आत्मानी कर्मजाळ टाळवा माटे

प्र०—जीव पहेलो के कर्म?

उ०—बन्ने अनादि छे, जीव पेहेलो होय तो ए विमळ वस्तुने मळ वळगवानु कइ निमित्त जोइए कर्म पेहेलां कहो तो जीव विना कर्म कर्या कोणे? ए न्यायथी बन्ने अनादि छे

प्र०—जीव रूपी के अरूपी?

उ०—रूपी पण खरो, अने अरूपी पण खरो

९ मर्यादा उपरात काम	१० आपवडाइ
११ तुच्छवस्तुथी आनद	१२ रसगारवलुब्धता
१३ अति भोग.	१४ पारकु अनिष्ट इच्छवुं
१५ कारण विनानु रळवु.	१६ झाझानो स्नेह
१७ अयोग्यस्थळे जवु.	१८ एके उत्तम नियम साध्य न करवो.

ज्या सुधी आ अष्टादश विघ्नथी मननो सबंध छे, त्या सुधी अष्टादश पापस्थानक क्षय थवाना नथी आ अष्टादश दोष जवाथी मनोनिग्रहता अने धारेली सिद्धि थइ शके छे ए दोष ज्या सुधी मनथी निकटता धरावे छे त्या सुधी कोइपण मनुष्य आत्मसार्थक करवानो नथी अति भोगने स्थळे सामान्य भोग नहीं, पण केवळ भोग त्यागव्रत जेणे धर्यु छे, तेमज ए एके दोषनु मूळ जेना हृदयमां नथी ते सत्पुरुष महद्भागी छे

शिक्षापाठ १०१ स्मृतिमा राखवायोग महावाक्यो

१ एक भेदे नियम ए आ जगतनो प्रवर्त्तक छे

२ जे मनुष्य सत्पुरुषोना चरित्ररहस्यने पामे छे ते मनुष्य परमेश्वर थाय छे.

३ चचळ चित्त ए सर्व विषम दुःखनु मूळियु छे.

शिक्षापाठ १०३ विविध प्रश्नो भाग २

प्र०—ए कर्मो टळवाथी आत्मा क्यां जाय छे?

उ०—अनंत अने शाश्वत मोक्षमां.

प्र०—आ आत्मानो मोक्ष कोइवार थयो छे?

उ०—ना।

प्र०—कारण?

उ०—मोक्ष थयेलो आत्मा कर्ममळ रहित छे एथी पुनर्जन्म एने नथी

प्र०—केवळीनां लक्षण शुं?

उ०—चार घनघाती कर्मनो क्षय करी शेष चार कर्मने पातळां पाडी जे पुरुष त्रयोदश गुणस्थानकवर्ती विहार करे छे ते

प्र०—गुणस्थानक केटलां?

उ०—चौद

प्र०—तेनां नाम कहो?

उ०—१ मिथ्यात्व गुणस्थानक २ सास्वादन (सासादन) गुणस्थानक ३ मिश्रगुणस्थानक ४ अविरतिसम्यग्दृष्टि गुणस्थानक ५ देशविरति गुणस्थानक ६ प्रमत्तसंयत गुणस्थानक ७ अप्रमत्तसंयत गुणस्थानक ८ अपूर्वकरण गुणस्थानक ९ अनिवृत्तिबादर गुणस्थानक १० सूक्ष्मसंपराय गुणस्थानक ११ उपशांतमोह गुणस्थानक १२ क्षीणमोह गुणस्थानक १३ सयोगीकेवळी गुणस्थानक १४ अयोगीकेवळी गुणस्थानक

प्र —रूपी कया न्यायथी अने अरूपी कया न्यायथी ते कहो ?

उ —देह निमित्ते रुपी अने स्वस्वरूपे अरूपी

प्र०—देह निमित्त शाथी छे ?

उ०—स्वकर्मना विपाकथी.

प्र०—कर्मनी मुख्य प्रकृतियो केटली छे ?

उ०—आठ

प्र०—कयि कयि ?

उ०—ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र अने अंतराय

प्र०—ए आठे कर्मनी सामान्य समज कहो ?

उ०—ज्ञानावरणीय, एटले आत्मानी ज्ञान संबंधीना जे अनंतशक्ति छे तेने आच्छादन थइ जवु ते दर्शनावरणीय एटले आत्मानी जे अनत दर्शनशक्ति छे तेने आच्छादन थइ जवु ते वेदनीय एटले देहनिमित्ते साता असाता ने प्रकारना वेदनीय कर्म एथी अव्याबाध सुखरूप आत्मानी शक्ति रोकाइ रहेवी ते मोहनीय कर्म एटले आत्मचारित्र रूप शक्ति रोकाइ रहेवी ते आयुकर्म एटले अक्षय स्थिति गुण रोकाइ रहेवा ते नामकर्म एटले अमूर्त्तिरूप दिव्य शक्ति रोकाइ रहेवा ते गोत्रकर्म एटले अटल अवगाहनारूप आत्मिकशक्ति रोकाइ रहेवा ते अंतराय कर्म ए अनत दान, लाभ, वीर्य, भोगोपभोग शक्ति रोकाइ रहेवी ।

प्र०—एओनो मुख्य उपदेश शु छे?

उ०—आत्माने तारो, आत्मानी अनतशक्तियोनो प्रकाश करो; न कर्मरूप अनत दुःखथी मुक्त करो ए

प्र०—ए माटे तेओए कया साधनो दर्शाव्यां छे?

उ०—व्यवहारनयथी सद्देव, सद्धर्म, अने सद्गुरुनुं स्वरूप ाणवु, सद्देवना गुणग्राम करवा, त्रिविध धर्म आचरवो अने नेग्रथ गुरुथी धर्मनी गम्यता पामवी ते

प्र०—त्रिविध धर्म कयो?

उ०—सम्यग्ज्ञानरूप, सम्यग्दर्शनरूप अने सम्यक्चारित्ररूप

शिक्षापाठ १०५ विविध प्रश्नो भाग ४

प्र०—आवु जैनदर्शन ज्यारे सर्वोत्तम छे त्यारे सर्व आत्माओ एना बोधने कां मानता नथी?

उ०—कर्मनी बाहुल्यताथी, मिथ्यात्वना जामेलां दळियाथी, अने सत्समागमना अभावथी

प्र०—जैनना मुनियोना मुख्य आचाररूप शुं छे?

उ०—पाच महाव्रत, दशविध यतिधर्म, सप्तदशविध सयम, दशविध वैयावृत्त्य, नवविध ब्रह्मचर्य, द्वादश प्रकारनो तप, क्रोधादिक चार प्रकारना कषायनो निग्रह, विशेषमां ज्ञान, दर्शन, ... आराधन इत्यादिक अनेक भेद छे

शिक्षापाठ १०४ विविध प्रश्नो भाग ३

प्र०—केवळी अने तीर्थंकर ए बन्नेमा फेर शो ?

उ०—केवळी अने तीर्थंकर शक्तिमा समान छे; परतु तीर्थंकरे पूर्वे तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्युं छे, तेथी विशेषमां बार गुण अने अनेक अतिशय प्राप्त करे छे

प्र०—तीर्थंकर पर्यटन करीने शा माटे उपदेश आपे छे? ए तो निरागी छे ?

उ०—तीर्थंकर नामकर्म जे पूर्वे बांध्युं छे ते वेदवा माटे तेओने अवश्य तेम करवु पडे छे

प्र०—हमणा प्रवर्त्ते छे ते शासन कोनु छे ?

उ०—श्रमण भगवान् महावीरनु.

प्र०—महावीर पहेला जैनदर्शन हतु ?

उ०—हा

प्र०—ते कोणे उत्पन्न कर्यु हतु ?

उ०—ते पहेलाना तीर्थंकरोए

प्र०—तेओना अने महावीरना उपदेशमा कई भिन्न खरी के ?

उ०—तत्त्वस्वरूपे एकज छे भिन्न भिन्न पात्रने लईने उपदेश होवाथी अने [illegible] कालभेद होवाथी सामान्य [illegible] लागे खरी; [illegible] जोता एमा भिन्नता नथी

प्र०—ए घेमा सत्स्वरूप तमे कोने कहो छो ?

उ०—पवित्र जैनदर्शनने

प्र०—वेददर्शनियो वेदने कहे छे तेनु केम ?

उ०—एनो मतभेद अने जैनना तिरस्कार माटे छे, परंतु न्यायपूर्वक बन्नेना मूळतत्त्वो आप जोइ जजो

प्र०—आटलु तो मने लागे छे के महावीरादिक जिनेश्वरनु कथन न्यायना काटापर छे, परंतु जगत्कर्तानी तेओ ना कहे छे, अने जगत् अनादि अनंत छे एम कहे छे ते विषे कइ कइ शंका थाय छे के आ असंख्यात द्वीपसमुद्रयुक्त जगत् वगर बनाव्ये क्याथी होय ?

उ०—आपने ज्या सुधी आत्मानी अनंत शक्तिनी लेश पण दिव्य प्रसादी मळी नथी त्या सुधी एम लागे छे, परंतु तत्त्वज्ञाने एम नहीं लागे "सम्मतितर्क" आदि ग्रंथनो आप अनुभव करशो एटले ए शंका नीकळी जशे

प्र०—परंतु समर्थ विद्वानो पोतानी मृषा वातने पण दृष्टांतादिकथी सिद्धांतिक करी दे छे, एथी ए त्रुटी शके नहीं पण सत्य केम कहेवाय ?

उ०—पण आने कइ मृषा कथवानु प्रयोजन नहोतु, अने पळभर एम मानीए, के एम आपणने शंका थइ के ए कथन मृषा हशे तो पछी जगत्कर्ताए एवा पुरुषने जन्म पण कां आप्यो ? नामबोळक पुत्रने जन्म आपवा शु प्रयोजन हतुं ? तेम वळी ए पुरुषो सर्वज्ञ हता, जगत्कर्ता सिद्ध होत तो एम कहेवाथी तेओने कंइ हानि नहोती

प्र०—जैनमुनियोना जेवाज सन्यासियोना पचयाम छे; अने बौद्धदर्शनमां पाच महाशील छे. एटले ए आचारमा तो जैनमुनियो सन्यासियो तेमज बौद्धमुनियो सरखा खरा के?

उ०—नही.

प्र०—केम नही?

उ०—एओना पचयाम अने पचमहाशील अपूर्ण छे महाव्रतना प्रतिभेद जैनमा अति सूक्ष्म छे पेला बेना स्थूळ छे

प्र०—सूक्ष्मताने माटे दृष्टात आपो जोइए?

उ०—दृष्टात देखीतु छे. पचयामियो कदमूलादिक अभक्ष्य खाय छे; सुखशय्यामा पोढे छे, विविध जातना वाहनो अने पुष्पनो उपभोग ले छे; केवळ शीतळ जळथी तेओनो व्यवहार छे रात्रिये भोजन ले छे एमा थतो असख्याता जतुनो विनाश, ब्रह्मचर्यनो भग ए आदिनी सूक्ष्मता तेओना जाणवामा नथी तेमज मासादिक अभक्ष्य अने सुखशीलिया साधनोथी बौद्धमुनियो युक्त छे जैन मुनियो तो एथी केवळ विरक्त छे

शिक्षापाठ १०६ विविध प्रश्नो भाग ५

प्र०—वेद अने जैन दर्शनने प्रतिपक्षता खरी के?

उ०—जैनने कइ असमजस भावे प्रतिपक्षता नथी; परतु सत्यथी असत्य प्रतिपक्षी गणाय छे, तेम जैनदर्शनथी वेदनो सबंध छे

शुद्धि पत्रक

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध,	शुद्ध
५	५	कर्मग्रडे,	कर्मग्रडे
६	३	पुछ्डु	पूछ्डु
११	१८	मुनी	मुनि
१४	१०	'अनुबंधदया''	'अनुबंधदया'
१४	१९	पाताना	पोताना
१५	१८	कहु,	कहु
१६	११	काष्टस्वरुप	१ काष्टस्वरुप
१९	१२	१ काष्टस्वरुपी	काष्टस्वरुपी
१९	१७	जुगुप्स	जुगुप्सा
२७	२९	मोक्षगति, एथि	मोक्ष ए गतिथी
२८	९	उे तेम,	उे, तेम
२९	१२	छीए	छीए,
२९	१३	तेम,	तेम
२८	२०	उतरे छे	उतरे छे,
३०	१५	जातां	जोतां
३७	१६	मलीन	मलिन
३७	१८	मलीनता	मलिनता
३७	२२	अमुल्य	अमूल्य
३८	३	परस्परना	परस्परनो
३९	२	निर्दोप	निर्दोप
६२	२०	मुळे	मूळे
५८	१०	शिद्ध	सिद्ध

शिक्षापाठ १०७ जिनेश्वरनी वाणी

मनहर छद

अनत अनत भाव भेदथी भरेली भली,
अनत अनत नय निक्षेपे व्याख्यानी छे,
सकळ जगत हितकारिणी हारिणी मोह,
तारिणी भवाब्धि मोक्षचारिणी प्रमाणी छे;
उपमा आप्यानी जेने तमा राखवी ते व्यर्थ
आपवाथी निज मति मपाइ में मानी छे,
अहो! राज्यचद्र बाल ख्याल नथी पामता ए,
जिनेश्वर तणी वाणी जाणी तेणे जाणी छे १

शिक्षापाठ १०८ पूर्णमालिका मंगल

उपजाति

तप्योपध्याने रविरूप थाय,
ए साधिने सोम रही सुहाय;
महान ते मगल पक्ति पामे,
आवे पछी ते बुधना प्रणामे १

निर्ग्रंथ ज्ञाता गुरु सिद्धि दाता,
कातो स्वय शुक्र प्रपूर्ण ख्याता,
त्रियोग त्या केवळ मद पामे,
स्वरूप [illegible] शनि विराय. २

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शु
૧૩૮	૧૮	तेआ	ते३
૧૪૦	૧	आनी जाय छे	आनी ज
૧૪૨	૨૦	अपून छे	अपूर्न ॰
૧૪૩	૬	वस्रते	वरवते
૧૬૪	૨૨	कहेवा	कहेना,
૧૬૬	૭	ज्रुओ	ज्रुओ
૧૬૬	૧૧	विचारो ?	विचारो
૧૭૨	૧૨	ज्ञानानरणीय,	ज्ञानानरणीर

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
૬૫	૭	रात्रिना	रात्रिमां
૬૬	૧૫	आणि	आणी
૬૭	૧૫	स्रीयो	स्त्रियो
૬૯	૧૨	ममपरिणामयी	समपरिणामथी
૭૯	૧૨	वित्या	वीत्या
૭૫	૨૪	पुरतु	पूरतु
૮૪	૧૧	पराविन	पराधीन
૮૭	૬	शियाळानी	शीयाळानी
૮૭	૧૫	नथी	नथी ?
૯૧	૧૨	स्रीओ	स्त्रिओ
૯૨	૧૩	कहे छ	कहे छे
૧૦૬	૧૨	मदूवस्तुना	सदुवस्तुनो
૧૦૬	૧૬	अद्‌भुत जे	अद्‌भूत छे
૧૦૮	૫	निर्ग्रंथो	निर्ग्रंथो
૧૧૨	૧૭	उद्रियनिरिक्षण	द्रियनिरीक्षण
૧૧૭	૨	मणे	ममाणे
૧૧૭	૨	नत्रा	नत्री
૧૧૫	૬	रहेतो	रहेतो
૧૧૯	૯	सहित	सहीत
૧૨૨	૮	सीतेर	सित्तेर
૧૨૨	૧૦	पज्जुवासामि."	पज्जुवासामि"
૧૨૨	૧૪	पज्जुवासामि"	पज्जुवासामि'
૧૨૯	૧૪	पछो	पछी
૧૩૫	૧૨	मरेलो	मरेली